ओ३म्

महर्षि दयानन्द

(संसार की नज़रों में)

उर्दू पुस्तक का हिंदी अनुवाद

सप्रेम भेंटकर्ता:

विश्वनाथ कोहली

ओ३म्

महर्षि दयानन्द

(संसार की नज़रों में)
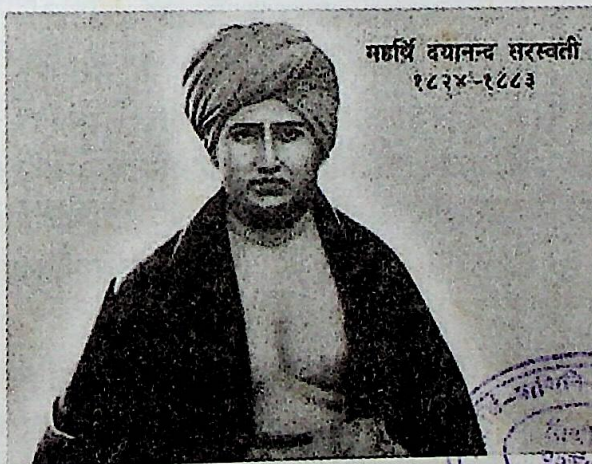
उर्दू पुस्तक का हिन्दी अनुवाद

सप्रेम भेंटकर्ता :

विश्वनाथ कोहली

वैदिक यज्ञ समिति (पंजी०) सोनीपत

1588-HBC सेक्टर-15, सोनीपत

9416488563

(निःशुल्क सेवा)

ओ३म्

महर्षि दयानन्द संसार की नज़रों में
उर्दू पुस्तक का हिन्दी अनुवाद

1. वर्ष 1932 में एक पुस्तक "महर्षि दयानन्द संसार की नज़रों में" उर्दू ज़बान में छपी थी यह पुस्तक देव योग से मेरे हाथ लगी मैंने इसको ध्यान से पढ़ा और मन में विचार आया कि इस पुस्तक की आज भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी 1932 में थी क्योंकि इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व, बुद्धिमता, आचरण, देश प्रेम, समाज सुधार और आत्मिक उन्नति के विषय में विद्वान लोगों के विचार शामिल है जिनमें कुछ लोग विदेशी हैं और अन्य लोग प्रतिष्ठित है जो समाज के हर वर्ग से सम्बध हैं (हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि) समाचार पत्रों के सम्पादक, और कवि भी शामिल है यह पुस्तक एक निधि है जो देश की एकता और उन्नति के लिए एक प्रेरणादायक अमूल्य साधन है। ऐसा मेरा विश्वास है। इस विचार से मैंने इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद करने का निर्णय लिया।
2. इस पुस्तक को स्कूलों, कॉलेजों, गुरूकुल आदि में बांटा जाएगा और पुस्तकालयों में भी रखा जाएगा। ताकि हमारे बाद आने वाले लोगों को प्रेरणा मिले और वह महर्षि के शानदार कार्य से मार्ग दर्शन प्राप्त करके देश, जाति, समाज को ऊँचा उठाकर कल्याण कर सकें। यह पुस्तक उपदेश करने वाले महानुभावों में भी बांटी जाएगी। प्रयत्न किया जाएगा कि यह पुस्तक हर परिवार को भेंट की जाए।
3. इस महान कार्य की पूर्ति के लिए मेरी सहायता श्रीमती राज गुलाटी ने की जो वेद व्याकरण की एम.ए. हैं, शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त हैं और वेद प्रचार के कार्य में दिन रात लगी हुई हैं। उनका हार्दिक धन्यवाद।

4. समय समय पर और भी मेरे सहयोगियों ने मेरी सहायता की है। मैं उनका भी धन्यवाद करता हूँ।
5. वैदिक यज्ञ समिति (पंजीकृत) ने निर्णय किया है कि यह पुस्तक समिति की ओर से छपवाकर बांटी जाए। समिति का धन्यवाद। यहां यह लिखना उचित होगा कि इस महान कार्य में मेरा आर्थिक सहयोग, यथा शक्ति, बना रहेगा। परम पिता परमात्मा मुझे शक्ति दे और जिस पवित्र-विचार से यह कार्य किया जा रहा है सफल हो।

अन्त में मैं परमपिता परमात्मा का धन्यवाद करता हूँ कि जीवन के आखिरी चरण में इस धर्म कार्य को करने की प्रेरणा दी, शक्ति दी और यह पुस्तक जनता की भेंट है। इसकी कोई लागत नहीं, लागत केवल स्वाध्याय और प्रचार है।

परमपिता परमात्मा हम सबको शक्ति प्रदान करें कि हम सब मिल-जुलकर रहें और देश-जाति की सेवा तन-मन और धन से करते रहें और जीवन को सफल बनायें।

धन्यवाद सहित

सेवक

विश्वानाथ कोहली
समिति सदस्य
1237, सै.-15, सोनीपत,
हरियाणा-0130-2230237

ओ३म्

वैदिक यज्ञ समिति (पंजीकृत) सोनीपत

1. वैदिक यज्ञ समिति सोनीपत (पंजीकृत) का गठन वर्ष 1979 में हुआ था लक्ष्य यह था कि जन-साधारण में वेद प्रचार किया जाए और यज्ञ की महानता के विषय में लोगों को जानकारी दी जाए तथा ये कार्य आर्य समाज मन्दिर की चार दीवारी से बाहर निकलकर किया जाए। मनुष्य के जीवन में यज्ञ इसलिए अनिवार्य है क्योंकि इससे जलवायु और वातावरण की शुद्धि होती है तभी तो पुरातन काल में ऋषिमुनि योगी प्रातः एवं सायंकाल यज्ञ किया करते थे।

2. गीता में श्री कृष्ण महाराज जी ने यज्ञ को मनुष्य जीवन का अटूट अंग बताया है और वह स्वयं भी प्रतिदिन यज्ञ किया करते थे जहां प्राणी मात्र को लाभ पहुंचता है वहां लोग संगठित होते है और देश व जाति को बल मिलता है।

3. एक सप्ताह का पहला यज्ञ फरवरी 1980 में दूरभाष एक्चेंस के सामने संघ वाले मैदान में हुआ था जो हर प्रकार से सफल रहा उसमें जनता ने प्रातः एवं सांय काल यज्ञ में सम्मिलित होकर आहुतियां प्रदान की प्रभु भक्ति के गीत गाये गए और वेदों पर आधारित विद्वान बुद्धिमान और योग्य महात्माओं के उपदेश हुए।

4. इस महान कार्य की सफलता के पश्चात समिति ने यह निर्णय किया कि हर मास के अंतिम रविवार को सोनीपत नगर के किसी न किसी सार्वजनिक स्थान पर दोपहर बाद दो घण्टे का प्रोग्राम रखा जाए। जिसमें हवन, भजन और वैदिक प्रवचन का प्रबन्ध किया जाए यह कार्य गत चौंत्तीस (34) वर्षों से लगातार हो रहा है। समिति यह आयोजन, यथासम्भव स्कूलों, कॉलेजों में भी करती है और जो लोग घर पर प्रतिदिन यज्ञ करने की शपथ लेते है उनको 1. हवन कुण्ड 2. हवन चम्मच 3. हवन पुस्तक और यज्ञोपवीत निःशुल्क प्रदान करती है। अनगिनत लोगों ने इसका लाभ उठाया है और यह कार्य अब भी

जारी है तथा जो इच्छुक लोग यज्ञ करना और सीखना चाहते है उनको सिखाने का प्रबन्ध भी है।

5. कई वर्ष तक समिति निर्धन असहाय लोगों में वार्षिक उत्सव पर वस्त्र बांटती रही है वार्षिक उत्सव फरवरी मास में प्रतिवर्ष होता है और लगातार सात दिन चलता है जिसमें लोग बड़े उत्साह से भाग लेते है चारों वेदों का यज्ञ कई बार हो चुका है अब भी यह कार्य हो रहा है। वर्ष 2013 का चौंतीसवां वार्षिक उत्सव 18 फरवरी से 24 फरवरी तक समुदायिक केन्द्र सैक्टर-14 सोनीपत में सम्पन हो चुका है।

6. अब समिति असहाय विद्यार्थियों को स्कूल की सिफारिश पर पाठ्य क्रम की पुस्तिकें बांटती है जो विद्यार्थी इस योजना का लाभ उठाते हैं उनको 10+2 तक प्रतिवर्ष पुस्तकें निःशुल्क प्रदान की जाती है इन बच्चों की संख्या अभी 16 है ये प्रतिवर्ष बढ़ रही है।

7. समिति ने वर्ष 2012 में यह निर्णय किया कि वह गुरूकुल, जहाँ आवश्यकता है, बच्चों को गाय का दूध मिले वहां गाय प्रदान की जाए। इस योजना के फलस्वरूप अब तक आठ गुरूकुलों को गाय प्रदान की जा चुकी है। गुरूकुलों का नाम इस प्रकार है -

   1. नली खुर्द करनाल (हरियाणा)
   2. हाथरथ कन्या गुरूकुल (यू.पी.)
   3. सुन्दरपुर रोहतक (हरियाणा)
   4. द्रोण स्थली देहरादून (उत्तराखण्ड)
   5. वाराणसी (यू.पी.)
   6. टंकारा (गुजरात)
   7. नवाबगंज, हजारी बाग, (झारखण्ड)
   8. शिवगंज (राजस्थान)

इस धर्म कार्य पर समिति नें 3,23,000 (तीन लाख तेईस हजार रूपये) की राशि व्यय की है।

8. वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए कुछ पुस्तकें छपवाकर लोगों में निःशुल्क बांटी गई है नाम इस प्रकार है-

   1. बात वेद प्रवचन की
   2. चुने हुए फूल (भजन माला)

3. अमूल्य निधि

4. रजत जयन्ती स्मारिका

5. वाणी का सदुपयोग एवं हम यज्ञ क्यों करें

6. वेद गीतिका यज्ञर्वेद का (40वां) अध्याये

7. श्री ज्ञानेश्वर जी दर्शनाचार्य द्वारा लिखी गई पुस्तक "पराविद्या"

9. समिति ने इस लम्बे समय में कोई अपना स्थान नहीं बनाया और न ही इस कार्य पर धन लगाना चाहती है न ही समिति के पास पर्याप्त धन है। समिति सारा धन वेद प्रचार के कार्य में खर्च करती है।

10. समिति का हर सदस्य 20 रु. प्रति माह चन्दा देता है जिससे यज्ञ के अतिरिक्त जो खर्च होता है उसकी प्रतिपूर्ति की जाती है वार्षिक उत्सव पर हर सदस्य दो सौ इक्कावन रूपये दान करता है। समिति अमेरिका के प्रंवासी परिवार कुकरेजा जी का भी धन्यवाद करती है जिनका सहयोग हर वर्ष मिल रहा है।

11. समिति के वर्तमान 19 सदस्य है, गत 34 वर्षों में लगभग 16 सदस्य अपना अमूल्य योगदान समिति को देकर हम से बिछुड गए हैं यह ईश्वर की न्याय व्यवस्था है इसमें कोई रोकथाम नहीं है समिति उनको याद करती है।

12. समिति नगर की हर एक आर्य समाज का आभार प्रकट करती है क्योंकि आवश्यकता के अनुसार हर समाज समिति के साथ सहयोग करती है और समिति भी उनको अपना सहयोग देने में पीछे नहीं रहता। मिल-जुल कर धर्म कार्य अच्छी प्रकार से चल रहा है प्रभु की कृपा है। यदि आप इस कार्य में कुछ सुझाव देना चाहते है तो समिति उस पर विचार कर उचित निर्णय लेगी।

धन्यवाद सहित।

वैदिक यज्ञ समिति
(पंजी०) सोनीपत।

लेखक का विचार

काफी समय से मेरी यह इच्छा थी कि स्वामी दयानन्द जी महाराज, संस्थापक आर्य समाज, के बारे में ऐसी पुस्तक तैयार की जाए जिसमें उनके समस्त उच्चकोटि के विचार प्रकट किए जाएं जो उनके बारे में भिन्न-भिन्न समय, स्थान पर, देशवासियों एवं विदेशी बुद्धिजीवियों ने प्रकट किए हैं। इससे देशवासियों को बहुत लाभ पहुँचेगा और 19वीं सदी के इस भारत माता के सपूत के विषय में अद्वितीय विचार पढ़कर लोग न केवल अपने जीवन को सुधारने का प्रयत्न करेंगे बल्कि इस महापुरुष के बारे में उचित विचारधारा कायम करेंगे कि स्वामी दयानन्द कितना उच्चकोटि का महान आचरण वाला व्यक्ति था। हमारे देश के इतिहास में इस महान व्यक्तित्व ने कैसी क्रान्ति पैदा की। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए मुझे स्वामी जी के बारे में बहुत साहित्य पढ़ना पढ़ा और बहुत-सी पुस्तकें एवं समाचार पत्रों का अवलोकन करना पड़ा। अन्ततः मैंने उत्कृष्ट और असीम विचारों का सारांश पुस्तक में लिख दिया है जो लोगों की सेवा में भेंट है।

यदि स्वीकार हो तो आदर-सत्कार सहित।

कुछ स्वार्थी धनाढ्य लोगों ने स्वामी जी के जीवन के विषय में अनुचित लिखकर जनता को धोखा दिया है, फरेब किया है, सत्य तो यह है कि उन्होंने जनता का उपहास उड़ाया है। यह वह लोग है जिनको उन के घर से बाहर कोई नहीं जानता जिनका अपने देश की राजनीति और इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं जो तुच्छ लोभ के लिए दुनिया के महान लोगों पर कीचड़ फैंकना चाहते हैं। जो शिक्षा और शिष्टाचार से कोरे हैं। इनके अपने विचार हीन हैं और वर्षाऋतु में मेढ़कों की भांति समय-समय पर उछलते हैं, जो विज्ञान एवं तत्व ज्ञान से दूर हैं परन्तु महापुरुषों पर अंगुली उठाने से नहीं रुकते ऐसे लोगों को दण्ड भुगतना पड़ेगा और आने वाली पीढ़ियाँ उनकी लिखित पुस्तकों को हाथ लगाना भी पाप समझेंगी।

मेरी इस पुस्तक से उनका फैलाया विष आसानी से मिट जाएगा और स्वार्थी लोगों को हाथ मलना पड़ेगा। आर्य पुरुषों का कर्तव्य है कि वह

प्रसिद्ध विद्वानों के विचार याद कर लेवें और अपने उपदेशों को सुनाएं

ताकि ऋषि की ख्याति सारे संसार में फैले और अज्ञानी लोग शर्मसार हों। लम्बे उपदेश तो पढ़ने-पढ़ाने का किसी के पास समय नहीं है और न ही स्मरण रहते हैं इस कारण लम्बे भाषणों में से स्वर्ण-विचार निकाल कर इस पुस्तक में लिख दिए हैं जो देश-विदेश के महानुभावों ने स्वामी जी के बारे प्रकट किए हैं। इस पर यदि विरोधी वैदिक धर्म और ऋषि की विद्वता को न स्वीकारें तो मेरे विचार में वे संकीर्ण विचार वाले अभागे हैं।

वैदिक धर्म का तुच्छ सेवक,

उल्फत राय (सब ओवर सियर)

समर्पण

उस पवित्र महान आत्मा के अमिट नाम पर जिसकी आर्य संतान से जुदाई 23 दिसम्बर 1926 को हुई जिस का जीवन लाखों करोड़ों लोगों के लिए प्रकाश-स्तम्भ था और जिसके प्यारे नाम को आर्य जाति बड़े सम्मान से वर्षों तक याद रखेगी जिस की मधुर वाणी, मनभावन और उच्चकोटि की बातें माताएं घर-घर में अपने बच्चों को लोरियाँ सुनाया करेंगी जिसके सम्मान में श्री रामजे मैकडोनल्ड ने जब वह रॉयल सर्विस कमीशन के प्रधान लॉर्ड असलिंग्टन के साथ भारत में आए थे "पायोनियर" में लिखा-"यदि कोई बीसवीं सदी का चित्रकार हज़रत मसीह का चित्र बनाना चाहे तो उसे हमारे विचार में लाला मुन्शी राम (स्वामी श्रद्धानन्द) जी के चित्र के नीचे हज़रत मसीह लिख देना चाहिए।"

मैं आज इस गुलदस्ता को उस नेक और पवित्र आत्मा के चरणों में अर्पित करता हूं क्योंकि उसने हमारे नेता मार्गदर्शक के पवित्र मिशन को अपने जीवन में बड़ी उन्नति प्रदान की।

सेवक उल्फत राय (सब ओवर सियर)

महर्षि स्वामी दयानन्द संसार की नज़रों में

1. टालस्टाय *(रुस के सुप्रसिद्ध दार्शनिक)*

मैं दयानन्द की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ रहा हूँ। आर्य समाज के नियमों को मैंने बड़ी लगन से पढ़ा है। मेरे मन को शान्ति प्राप्त हुई तथा मैं आत्मिक शान्ति अनुभव कर रहा हूँ।

(वैदिक मैगज़ीन हरिद्वार)

2. प्रोफेसर मैक्समूलर *(जर्मन देश का प्रसिद्ध संस्कृत ज्ञाता)*

स्वामी दयानन्द अपने देश के ग्रन्थों में निपुण थे। वाराणसी एवं अन्य स्थानों पर बड़े-बड़े पण्डितों के साथ सार्वजनिक शास्त्रार्थ में उन को सफलता मिली। वह एक उच्च कोटि के विद्वान थे। वह समाज सुधारक थे। इसी कारण लोग उनको जीवन भर अपमानित करते रहे और कष्ट देते रहे।

(बायोग्राफिकल सीरीज़ आफॅ मैक्समूलर)

मुझे विदित है कि दयानन्द सरस्वती के विचार उत्कृष्ट थे और उन्होंने देशवासियों को लाभ पहुँचाया। यदि वह अधिक समय तक जीवित रहते तो और भी अधिक लाभ पहुँचाते।

पत्र जो सचिव आर्य समाज लन्दन को 14 मई 1887 को लिखे।

पत्र का सारांश

3. रोमन रौलैण्ड *(फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान)*

वर्तमान काल में जो भी महान व्यक्ति भारत में हुए हैं उन सबसे बड़ी पदवी दयानन्द की थी। जो जागृति भारत देश में हुई है उसके जन्मदाता दयानन्द हैं।

(प्रकाश ऋषि अंक)

4. ए.ओ. ह्यूम

(इंडियन नैशनल कांग्रेस के जन्मदाता)

स्वामी दयानन्द की समय से पूर्व मृत्यु का मुझे बहुत दुख हुआ। जिन नियमों का उन्होंने प्रचार किया उनको देखकर हमें यह मानना पड़ेगा कि वह एक नेक व्यक्ति थे। देश को उन से सम्मान मिला। उनके देहान्त से जो भारत को क्षति हुई है वह पूरी होनी असंभव है।

5. सर हैनरी काटन

(सदस्य ब्रिटिश पार्लियामेन्ट प्रधान भारतीय नैशनल कांग्रेस 1904 बम्बई)

उत्तरी भारत में पश्चिमी तहज़ीब का प्रभाव रोकने के लिए आर्य समाज से बढ़कर अन्य किसी ने कोई कार्य नहीं किया जिसके फलस्वरुप अंग्रेजी शासन में अन्तर आ गया।

(न्यू इंडिया)

6. कर्नल अल्काट

(थियोसोफिकल सोसाइटी का एक संस्थापक सदस्य)

स्वामी दयानन्द जी में स्वदेश अनुराग कूट-कूट कर भरा था। इसी कारण उन्होंने कर्नल अल्काट एवं मैडम ब्लयूटिस्की की इतनी परवाह नहीं की जितनी उन्होंने अपने देश की करनी जरुरी समझी। देखने वाले हैरान है कि स्वामी दयानन्द जैसे योगी को जिसमें वेद विद्या की शक्तियाँ निहित थी को इस बात का पहले पता न लगा कि उनकी मृत्यु से देश को कितनी बड़ी हानि होगी। क्या यह योगी न थे? क्या वह ब्रह्म ऋषि न थे? हम शपथ लेकर कहते हैं कि दयानन्द को अपनी मृत्यु का आभास दो वर्ष पूर्व था। उनकी वसीयत की नकल इस बात का पूरा प्रमाण है। उन्होंने हमें मेरठ में कई बार कहा कि 1884 नहीं देखेंगे।

(पत्रिका थियोसोफिस्ट 1883)

7. रूस देश की प्रसिद्ध मैडम ब्ल्यूटिस्की जी

(थियोसोफिकल सोसायटी की संस्थापिका)

अमेरिका से चलने से पूर्व दो वर्ष से अधिक समय से मैं उच्च कोटि के विद्वान के साथ लगातार पत्र व्यवहार करती रही जिसकी ख्याति भारतवर्ष में छाई हुई है। हम उनके मार्गदर्शन में भारत में आर्यों के पुराने देश की वेद विद्या और उनकी कठिन भाषा को पढ़ने भारत आए। उनका नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती है। यह पण्डित भारतवर्ष में सबसे अधिक संस्कृत भाषा का ज्ञाता समझा जाता है। वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए पहेली है। केवल पांच वर्ष हुए वह महत्वपूर्ण सुधार करने के लिएं आगे आया। इससे पूर्व वह वन में अकेला रहता रहा। लोगों के सामने आने के पहले ही दिन दयानन्द सरस्वती ने बड़ा भारी प्रभाव डाला। वह भारत का लूथर कहलाया। वह एक ईश्वर का प्रचार करता है और वेदों को हाथ में लेकर यह साबित करता है कि उस पुरातन काल के इतिहास में एक शब्द भी ऐसा नहीं है जिस से मूर्ति पूजा उचित मानी जाए। मूत्ति पूजा के विरुद्ध गर्जता है। वह उत्कृष्ट ज्ञानी है जो पूरी शक्ति से जातपात, बाल विवाह और दूसरे अज्ञान, अविद्या एवं अंधकार के विरुद्ध लड़ाई लड़ रहा है। बहुत से ब्राह्मणों के साथ उसके शास्त्रार्थ हुए है और लगभग सबमें विजयी हुआ है।

बर्नोफ-कोब्रुक, मैक्समूलर जैसे पूर्वी ज्ञान को जानने वाले विद्वान कई सुधारक हुए हैं जिन्होंने वेदों की पवित्रता को सिद्ध करने का प्रयत्न किया और कई नये सम्प्रदायों को भी जन्म देने वाले भी हुए हैं। जिन्होंने पवित्र ग्रन्थों को ईश्वरीय ज्ञान होने से इन्कार किया जैसे राजाराम मोहनराय और बाबू केशवचन्द्र सेन दोनों बंगाली, कलकता के थे। परन्तु इन दोनों को कोई विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई जो स्वामी दयानन्द को मिली।

यह कटु सत्य है कि स्वामी शंकराचार्य के पश्चात् भारत में स्वामी दयानन्द से बढ़कर कोई संस्कृत का ज्ञाता, हर बुराई का निडरता से खण्डन करने वाला, ज्ञानी, बुद्धिजीवी दार्शनिक पैदा नहीं हुआ। उनकी

शारीरिक सज्जा आकर्षण करने वाली है। लम्बा कद, अंग्रेजों की भान्ति सफेद रंग, बड़ी चमकदार आँखे, भूरे लम्बे बाल, वाणी स्पष्ट एवं प्रभावशाली है और हर प्रकार के विचार प्रकट करने में पूर्ण हैं। बड़ी मीठी वाणी से बच्चों की भांति धीमी आवाज से बोलते है और ब्राह्मणों के झूठ एवं बुराईयों के विरुद्ध बिजली की भांति गर्जते हैं।

वह सच्चा योगी है हमने एक बार उसे कार्य करते देखा। उसने सब अनुयाईयों को भेज दिया और कहा न तो आप मेरी सुरक्षा करो और न मुझे बचाने का प्रयास। वह एक उत्तेजित व्यक्तियों के समूह के सम्मुख अकेला खड़ा रहा और बड़ी शान्ति से, बुद्धिमता से उत्तेजित व्यक्तियों का सामना किया जो उस को जान से मार देने को तैयार थे। हरिद्वार के भारी मेले में यह भविष्यवाणी की थी कि हैज़ा फैलेगा और यह अक्षरशः सत्य साबित हुआ।

8. डॉ. एनीबेसेन्ट-उदयार मद्रास

(प्रधान थियोसोफिकल सोसायटी प्रधान इंडियन नेशनल कांग्रेस)

जब भारत में स्वराज्य मन्दिर का निर्माण होगा तो उसमें स्वामी दयानन्द जी की मूर्ति सबसे ऊँचे स्थान पर रखी जाएगी। स्वामी जी के लिए मेरे दिल में सच्ची पूजा के भाव हैं। जो मैं लिखकर एवं बोलकर अनगिनत बार प्रकट कर चुकी हूँ।

(ऋषि न.-प्रकाश लाहौर)

9. प्रोफेसर मोनियर विलियम ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी

समाचार-पत्र ऐथीनियम के पढ़ने वालों को याद होगा कि एक वर्ष के करीब गुज़रा-जब एक युवक हिन्दु क्षत्रिय जिस का नाम श्याम जी कृष्ण वर्मा है, जो संस्कृत भाषा में निपुण है और जिसकी संस्कृत लिखने व बोलने की शक्ति अत्यन्त उत्तम है, जिसके लिए उसको पंडित की पदवी दी गई है। एक लेख छपा था उस पत्र में यह लिखा था कि इस युवक ने एक ऐसे प्रसिद्ध व्यक्ति से शिक्षा ग्रहण की है

जो पुरातन संस्कृत भाषा को ही नहीं जानते बल्कि उन्होंने आर्यावर्त के सभी मत-मतान्तरों में मूर्ति पूजा के विरुद्ध हलचल मचा दी है। स्वामी जी एक मात्र सत्यधर्म को मानने वाले हैं। और अपने धर्म को वेदानुकूल मानते हैं। इस प्रगतिशील सुधारक का नाम दयानन्द सरस्वती है जिसके उपदेश और लेखनी को मुझे सुनने व देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। क्योंकि जब मैं मुम्बई में था तो मैंने स्वामी जी को एक आर्यसमाज के जलसे में धर्म पर उपदेश देते हुए सुना था। जिस का विषय आर्यों का जीवित धर्म था। इसके अतिरिक्त वर्तमान में उन्होंने अपने शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को पत्र (जो अब "बलेटल कालिज" ऑक्सफोर्ड में सदस्य हैं) लिखा था, देखा है साफ संस्कृत में लिखा हुआ है।

यूं तो मेरा आर्य लोगों से पत्र व्यवहार होता रहता है और कश्मीर ट्रावनकोर आदि के बुद्धिमान लोगों से वास्ता है। परन्तु यह पत्र अपने आप में एक नमूना है।

(स्वामी दयानन्द की जीवनी)

10. हिज़ एक्सीलैन्सी जनरल राबर्ट्स

(बहादुर कमांन्डर इन चीफ भारतीय सेना)

जनरल राबर्ट्स ने दानापुर (बिहार) में स्वामी जी का भाषण सुना। इस भाषण की समाप्ति पर वह स्वामी जी से मिले और खुशी से हाथ मिलाया और कहा निःसन्देह आप निडर होकर उपदेश करते हैं। जब आपने हमारे सामने बाईबल की इस कठोरता से समालोचना की है तो आप औरों से क्या डरते होंगे।

(स्वामी जी की जीवनी)

11. मिस्टर फैडरिक ननथियम

स्वामी जी के देहान्त से मुझे गहरा दुख हुआ है। भारत ने एक ऐसा दार्शनिक खो दिया है। जिसके बराबर का व्यक्ति सम्भवतः भविष्य में भारत को न मिल सके।

12. श्रीमति जोज़फाइनरैन्सम

(सम्पादिका पत्रिका बर्तानिया एवं इंडिया)

(सचिव ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन)

दयानन्द सरस्वती एक ब्राह्मण था जिसका नाम मूलशंकर था। जो अपने समय की परेशानी का नमूना था। क्योंकि वह सत्य की खोज में था। उसने दूर-दूर स्थानों की यात्रा की लेकिन निष्फल रहा। अन्ततः वह एक ऐसे महापुरुष से मिला जो अब तक भारत में एकान्त स्थानों पर मिलते हैं एवं ज्ञान के भंडार हैं। जो इतने विद्वान पवित्र और वैज्ञानिक हैं जिनको मिलकर मन, आत्मा, संतुष्ट हो जाती है। अन्ततः वह समय आया जब शिष्य ने वेद विद्या का प्रचार प्रसार करना पसन्द किया। स्वामी दयानन्द मेघा बुद्धि वाला वक्ता, हाजिर जवाब एवं प्रसन्नचित्त था। वह दुनिया में अज्ञानता के विरुद्ध कूद पड़ा। और लोगों को विवश किया कि वह उस की आवाज को सुनें। उसने दृढ़ता एवं शक्ति के साथ मित्रों एवं विरोधियों पर अपने विचारों का आक्रमण किया। इसके लिए जनसाधारण को उसकी प्रशंसा करनी चाहिए। जिनको यह विदित है कि उस समय पुराने विचारों वाली शक्तियाँ किस प्रकार उसके सम्मुख खड़ी थी। अपने कार्यों को लाभदायक बनाने एवं दृढ़ करने के लिए स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की। सब को वेदों का संदेश दिया और कहा वेद सब विद्याओं का भंडार है। आदि सृष्टि से ही यह मानवमात्र का धर्म है। 1883 में उनके निधन पर सब लोगों ने शोक प्रकट किया। क्योंकि विरोधी भी उनकी विद्वता शक्ति एवं लोभ के बिना सेवा का सम्मान करते थे।

13. पी. हैरसः आई. सी. एस. इलाहाबाद

दयानन्द का विद्या का प्रचार प्रसार मुझे सब के सुधार के लिए दिखाई देता है। जिस का अन्तिम लक्ष्य यह था कि देश का राज-काज देसी लोगों के हाथ में हो। दयानन्द की उपदेशशैली एवं प्रार्थना विदेशी राज्य को तुरन्त समाप्त करने के लिए नहीं थी। अपितु इस सुधार के

लिए थी कि भविष्य में हिन्दु अपने देश का शासन संभालने में सक्षम हो (निर्णय = केस, साधू आलाराम एवं आर्य समाज)

14. मिस्टर डब्ल्युथेअर आई.सी.एस. कानपुर

(एक पत्र की प्रतिलिपि जो थेअर साहिब ने ऋषि दयानन्द के वादविवाद के फलस्वरुप लिख कर दिया है)

वाद-विवाद के समय मैंने निर्णय दयानन्द सरस्वती के पक्ष में दिया और मेरा विश्वास है कि उसके तर्क वेदों के अनुसार हैं। मेरे विचार में उसने विजय प्राप्त की है। यदि आप चाहे तो मैं कुछ दिनों में अपने निर्णय के बारे में युक्ति व्यक्त करुंगा।

15. मिस्टर रामसेमेक्डोनल्ड

प्रधानमंत्री बर्तानिया

जब मैं भारत में भ्रमण को गया था तो आर्य समाज के विरुद्ध भांति-भांति की बातें सुनने को मिली। मेरी इच्छा हुई कि मैं स्वयं आर्य समाज और इससे सम्बन्धित संस्थाओं के बारे व्यक्तिगत रुप से जानकारी ग्रहण करुं। इसके पश्चात् जो मेरे विचार हैं वह ये हैं: कि मैं आर्य समाज को भारत के लोगों में देशभक्ति एवं आत्मिक शक्ति फूंकने का एक प्रशंसनीय साधन समझता हूँ।

(आर्य गजट 1920)

16. पाल रिचर्ड

(फ्रेंच भाषा के प्रसिद्ध लेखक)

निसन्देह स्वामी दयानन्द एक ऋषि था। सब पंडितों ने उस पर पत्थर फैंके। उसने अपने अंदर शानदार भूतकाल और उज्जवल भविष्य का समावेश किया। वह तुम्हारी जंजीरे तोड़ने आया था। तुम्हारी आत्माओं को मुक्त कराने आया था। वह जो तुम्हारे मन्दिरों को खोलने आया और तुम्हारी राजनीति को पुनः जागृत करने आया था।

(आर्य मित्र आगरा 1925)

17. डॉ. होमर्स क्रिस्ट- सान फ्रांसिस्को (अमेरिका)

(प्रसिद्ध धार्मिक नेता एवं वक्ता)

हम स्वामी दयानन्द के बारे कम जानते थे थियोसोफिकल सोसायटी की मैडम बल्यूटिस्की के निधन के पश्चात् उनसे परामर्श किया। जो विवरण आपकी पुस्तक से मिला जानकर खुशी हुई। हमारा और स्वामी जी का संदेश एक है। वह परमात्मा एक है जो जातपात के भिन्न भेद से ऊपर है। सब प्राणियों को उपर उठाने का कार्य कर रहे हैं। लक्ष्य यह है कि मनुष्य परमात्मा की प्राप्ति करे और उसमें रम कर उस की दिव्य ज्योति से प्राणी मात्र को उज्जवल एवं आनन्दित बनाता रहे।

18. मेजर टी.एफ. ओडानिल

(प्रिंसिपल मेरठ कॉलिज)

स्वामी दयानन्द धर्म प्रचारक, समाज सुधारक और राष्ट्रभक्त था। इसकी जीवनी एवं धार्मिक शिक्षा इतनी प्रसिद्ध है कि इसके विषय में लिखने की आवश्यकता नहीं है। इन दिनों जब साम्प्रदायिक कशमकश और धार्मिक जनून बढ़ रहा है, स्वामी जी के पवित्र विचारों से बढ़ कर और कुछ नहीं है।

19. रैवरिन्ड राविन्सन अजमेर

स्वामी जी वेदों के विद्वान हैं। मैनें आयु भर संस्कृत का ऐसा विद्वान नहीं देखा। ऐसे व्यक्ति दुनिया में नहीं मिलते। जो भी इनसे मिलेगा लाभान्वित होगा।

20. एक जर्मन फिलॉस्फर

स्वामी दयानन्द एक उदार व्यक्ति था। उसकी बुद्धि अत्यन्त पवित्र थी जिसमें अच्छे और चकित करने वाले विचार चक्कर लगाते रहते थे। इसके मन में एक यह विचार सदैव समाया रहता था कि भारत को सभी अज्ञान, अन्धकार से दूर कर के विद्या और ज्ञान का केन्द्र

बनाया जाए ताकि भारत एक ईश्वर का उपासक बन कर स्वराज्य के योग्य बन जाए और सारी विद्याओं एवं धर्म का स्रोत बनकर विश्व में सम्मान एवं पूजा का स्थान बन जाए।

(प्रकाश नवम्बर-1929)

21. श्रीमती एलावेल्ज़ विलकाकस

(प्रसिद्ध कवियित्री अमरीका)

भारत में जड़ पूजा करने वालों का ऐसा सम्प्रदाय पैदा हो गया है जो सभी आध्यात्मिक बातों को नहीं मानता और एक मनुष्य द्वारा रचित बातों पर विश्वास करता है। अब पथ प्रदर्शन के लिए एक संस्था पैदा हो गई है जिसका नाम आर्यसमाज है। जिस में भारत के युवक एवं बूढ़े, बुद्धिमान लोग शामिल हैं। आर्य समाज यद्यपि एक नई लहर है परन्तु यह पुरातन शिष्टाचार का प्रचार करती है। इस का जन्मदाता सम्मान योग्य स्वामी दयानन्द था जो संस्कृत का उच्च कोटि का विद्वान था। जिस ने लोगों को नया मत सिखलाने का प्रयास नहीं किया परन्तु लोगों को यह कहा कि उस का एवं आर्य समाज का लक्ष्य केवल पुरातन आर्य धर्म को नये सिरे से बढ़ाना है जिसका उल्लेख वेदों में निहित है।

(समाचार-पत्र हिन्दुस्तान, लाहौर 4.8.1911)

22. रैवरैन्ड सी.एफ. एन्डयूज

(भारत का प्रसिद्ध अंग्रेज पादरी)

जिन अच्छाईयों के कारण, मैं स्वामी दयानन्द जी का सम्मान करता हूँ उनमें से जो सब से बड़ी ख़ूबी मैं देखता हूँ यह है कि वह उस सत्य के दीवाने थे जिस को उन की आत्मा सच मानती थी। सत्य की निडरता से खोज उनके जीवन का अंग थी और उनके व्यक्तित्व का रहस्य थी। दूसरा गुण जिसके कारण वह अधिक प्रिय थे वह थी उन की निडरता। डर वह जानते ही नहीं थे। भयानक खतरा होने पर भी

अधिक शान्त एवं प्रसन्नचित्त रहते थे। खतरा आने पर उनकी मनोवृत्ति शरीर के पवित्र अन्तःकरण को उभार देती थी। और दयानन्द की इज़्ज़त इस से बढ़कर कभी न थी जब मृत्यु अपनी पूरी शक्ति से उनके सम्मुख खड़ी थी और वह धैर्यवान थे। तीसरी बड़ाई यह है कि ऋषि दयानन्द का नाम सारे भारत के घर-घर में लिया जाने लगा। वह सच्चे देश भक्त थे। दुनिया में मनुष्य, स्त्री, सन्तान, घर, धन से प्यार करता है वह सब दयानन्द ने देश पर कुर्बान कर रखा था। मैं जो विदेशी और अंग्रेज हूँ, उनकी देशभक्ति की प्रशंसा करता हूँ। मैं अपने देश इंग्लैंड से प्यार करता हूँ और यह जानकर प्रसन्न होता हूँ कि स्वामी दयानन्द किस प्रकार अपने भारतवर्ष से प्यार करता था। उनकी चौथी बड़ाई यह थी कि वह उत्कृष्ट समाज सुधारक थे। उसके प्रचार से जो अमूल्य सुधार हुआ उसका अनुमान लगाना कठिन है। उनका जीवन केवल धार्मिक ही न था परन्तु क्रियात्मक था। उन्होंने कई वर्ष एकान्त में व्यतीत किए और कई वर्ष लोगों की भलाई में गुजार दिए। इनमें से किसी को भी भुलाया नहीं जा सकता। मेरी यह तीव्र इच्छा है कि लोग उनके दर्शाए पथ पर चलें।

(प्रकाश ऋषि नवम्बर)।

23. मिस्टर एस.एल. पोलक

(भूतपूर्व सम्पादक इंडिया, लंडन)

संसार के सभी देशों में से किसी को महापुरुषों के पथ-प्रदर्शन की इतनी आवश्यकता नहीं जितनी भारत को है क्योंकि उसे दुनिया के लोगों में स्थान ग्रहण करने के लिए कुछ त्रुटि को पूरा करना है। इसलिए जरुरी है कि स्वामी दयानन्द के उत्सव को बुद्धिमता से मनाया जाए। वर्तमानकाल के एक भारतीय महापुरुष (महात्मा गांधी) की तरह स्वामी दयानन्द भी जन्म से गुजराती थे। किन्तु इनकी ख्याति प्रान्त से बाहर दूर-दूर तक फैल गई। यदि वह अन्तर्देशीय नहीं, तो स्वदेशी जरुर थे। शरीर से तो बलवान थे ही परन्तु उनकी बुद्धि उत्कृष्ट थी। वह रीति-रिवाजों के बंधन से दूर थे। और जाति पाति के बनावटी मतभेद

को नहीं मानते थे। इसलिए मातृभाव उनके जीवन का अंग बन गया था। निःसन्देह वह भारत के धार्मिक नेताओं में से एक थे। वह एक महान आत्मा एवं निडर थे और सत्य के पुजारी थे। इसलिए भारत ही नहीं इससे बाहर के भी अधिक संख्या में लोग उनका सत्कार करते थे।

24. मिस्टर जी.एस. अरनडील

(प्रिंसीपल नैशनल यूनिवर्सिटी मद्रास)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो सारे भारत और संसार की सेवा की है मैं उसे भलीभांति जानता हूँ। वह भारत वर्ष के उच्च कोटि के महापुरुषों में से एक थे और अब भी है। मुझसे यदि पूछा जाए तो मैं कहूंगा कि उन्होंने भारत माता की बड़ी सेवा की। स्वदेशी विद्या पर बल दिया और बताया कि विद्या ऐसी हो जो हमारे देश, जाति की आवश्यकता को पूरा करे और हर एक विद्यार्थी को धर्म अनुसार धार्मिक शिक्षा दी जाए।

25. एक लाट पादरी मद्रास

यदि दयानन्द 40 वर्ष के पश्चात् पैदा हुआ होता तो हमने इस दौरान उत्तर भारत के एक तिहाई भाग को ईसाई बना लिया होता।

(मारतंड लाहौर)

26. मिस्टर फाक्सपट

(सचिव मारल एजूकेशन लीग लंडन)

मेरी दृष्टि में स्वामी दयानन्द एक जगत गुरु और समाज सुधारक था। वह उन महापुरुषों में से था जिन्होंने जीवन के चित्र को स्पष्ट देख लिया है और जिन में इतना बल और प्रेम हो और वह इस योग्य हो कि जीवन के चित्र को दूसरों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकें और समझा सके कि ऐसा व्यक्ति विरला होता है। जिसमें आध्यात्मिक शक्ति हो और दूसरों के सुधार का विचार हो। जिसमें यह दो खूबियाँ बराबर थी वह दयानन्द था।

27. मिस्टर एस.एम. मैकाईल पूना

मैं स्वामी दयानन्द को उन्नीसवीं शताब्दी के उन महापुरुषों में से एक मानता हूँ जिन्होंने रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानन्द की भांति नवीन हिन्दू धर्म की गहरी और सुदृढ़ बुनियाद डाली और पौराणिक विचारों का संशोधन किया।

28. एनड्रियु जैक्सन डेवेस

(अमरीका का प्रसिद्ध दार्शनिक)

मुझे एक अग्नि दिखाई दे रही है जो हर वस्तु को जला कर साफ कर रही है। अमरीका के मैदानों, अपीका के विशाल देशों, एशिया के पुराने पहाड़ों और योरुप के राज्यों पर इस भस्म करने वाली अग्नि के शोले दिखाई दे रहे है। इसका आरम्भ पिछड़े स्थानों से हुआ है। मनुष्य ने अपनी सुविद्या एवं उन्नति के लिए इसे स्वयं प्रचंड़ किया है। पृथ्वी पर मनुष्य ही ऐसा है जो आग को जलाकर बचा सकता है। यह अपने रहन सहन के स्थान पर नरक की आग सुलगाने में अग्रसर है। इस अथाह आग को देखकर जो राजाओं, महाराजाओं, राजनीतिक बुराईयों को पिघला देगी मैं बड़ा प्रसन्न होकर एक जोशीला जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। सब ऊँचे पहाड़ जल जाऐंगे, वादियों के शानदार नगर स्वाह हो जाऐंगे। हमारे घर एवं स्नेही साथ-साथ पिघलेंगे। भले बुरे सब समाप्त होंगे। जैसे सूर्य की सुनहरी किरणों से ओस। आधुनिक उन्नति की बिजली से मनुष्य की तबियत हिल रही है। आज इसकी चिंगारियां केवल आकाश की ओर उड़ रही है। यह आग पुरातन, पवित्र वैदिक धर्म को पुनः स्थापित करने की भट्टी है। जिसे आर्य समाज कहते है। यह अग्नि भारतवर्ष के परम योगी दयानन्द सरस्वती के हृदय में पनपी। हिन्दु, मुसलमान इस दुनिया को जला देने वाली आग को बुझाने के लिए हर ओर से तेजी से दौड़ रहे हैं। परन्तु यह अग्नि इस प्रकार बढ़ती गई जिसका अनुमान इस के जन्मदाता दयानन्द को भी

न था। इसाईयों ने भी इस नई रोशनी वाली अग्नि को बुझाने के लिए हिन्दु मुसलमानों का साथ दिया। लेकिन यह अग्नि प्रचंड हुई और बिखर गयी। इस अग्नि में सभी बुराईयों का सर्वनाश हो जाएगा। यहाँ तक कि रोग के स्थान पर स्वस्थ शरीर, अज्ञानता के स्थान पर ज्ञान, घृणा के स्थान पर प्यार, वैर के स्थान पर मित्रता, नर्क के स्थान पर स्वर्ग, कष्ट के स्थान पर सुख, भूतप्रेत के स्थान पर ईश्वर और प्रकृति का राज्य हो जाएगा। मैं इस अग्नि को धन्यवाद देता हूँ। क्योंकि इससे पृथ्वी को नया जीवन मिलेगा। विश्व-शान्ति एवं सुख-समृद्धि के युग का शुभ आरम्भ होगा।

(बियांड दी वैली पृष्ठ 382)

29. इंडिया टाईम्स बम्बई

(पश्चिमी सम्पादक)

दयानन्द की धार्मिक धारणा ठीक थी या गलत इसके बारे में विदेशी व्यक्ति का विचार प्रकट करना गुस्ताखी होगी। निःसन्देह दयानन्द उत्कृष्ट खूबिओं का स्वामी था इसमें कोई शक नहीं। सुन्दर शानदार मुख, मोह लेने वाली आकृति, और ज़ोरदार आवाज़ थी। दयानन्द ने बालविवाह का विरोध किया। विदेश जाने को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने कहा कि अमरीका वही देश है जिसको इतिहास में पाताल का नाम दिया गया है और आर्यवीर प्रायः वहाँ जाते रहे हैं। सभी हिन्दुओं की भांति दयानन्द शाकाहारी थे। मांसाहारी नहीं थे। विवाह के बारे उनके विचित्र विचार थे। कोई भी स्त्री पुरुष दूसरी शादी न करे, यदि वह न रह सके, तो नियोग द्वारा सन्तान पैदा करे। अस्थायी तौर पर अर्थात अल्पकालिक। उत्तरी भारत में आर्य समाज स्थापित हुए हैं। भारत के अन्य भागों में भी आर्य समाज कायम हुए हैं। यह उन्नति कर रहा है। आर्य समाज महिलाओं को शिक्षित करने पर जोर दे रहा है। इनके नेताओं में से एक लाला लाजपतराय ने वर्तमान में एक वैदिक मुक्ति सेना को जन्म दिया है जिसका लक्ष्य अछूत उद्धार है।

30. पादरी स्टोक्स शिमला

सब समाचार जो स्वामी दयानन्द के बारे में मिलते हैं उनसे सिद्ध होता है कि वह अद्भुत शक्ति वाले, ऊंचे लक्ष्य वाले महापुरुष हैं। इनके विचार लोगों को अपनी ओर खींचते हैं। इनका पुरुषार्थ और ऊँचे विचार लोगों पर प्रभाव डालते हैं।

(आर्य मित्र 1925)

31. श्रीमती सुवेरा देवी जी

(अमरीकन महिला)

वैदिक धर्म का मनुष्य जीवन के बारे में जो लक्ष्य है वह इतना युक्ति-संगत है कि इसके बिना आत्मा को शान्ति नहीं मिल सकती। वैदिक धर्म में फिलास्फी, विज्ञान एवं धर्म निहित है। यह तर्कहीन नियमों का धर्म नहीं है। उदार एवं जीवित जागृत जीवन का खज़ाना है। इसमें ईश्वर को पिता माना गया है और सबके साथ भाई चारे के व्यवहार का उपदेश है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि यहाँ आर्य समाज है जो एक संस्था है और वैदिक धर्म को दुनिया में फैला रही है। कोई भी सामाजिक या धार्मिक क्रान्ति मनुष्य के लिए लाभदायक नहीं जिसमें मातृभाव का विचार नहीं। यह विचार आर्य समाज से बढकर और कहीं नहीं। आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने अपना सारा जीवन दुनिया भर की बुराईयों के साथ युद्ध करने में लगा दिया। इसने एक अत्यन्त सत्य को उजागर किया जब कहा कि जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ इनका अपमान होता है वहाँ दस्यु (शैतान) रहते हैं। यह सत्य है कि कोई जाति स्त्री जाति की उन्नति के बिना ऊपर नहीं उठ सकती। ईश्वर हमें शक्ति दे कि हम ऋषि दयानन्द के ऊँचे विचारों को सफल करने के योग्य हो।

32. रैवरेन्ड जे.टी. डिस्ले

(सैन्ट जॉन कॉलिज आगरा)

स्वामी दयानन्द ने बतलाया कि वेद सब विद्याओं की कुंजी है। ईश्वर एक है और सर्वव्यापक है। जो सत चित आनन्द है यानि सच्चिदानन्द है। ईश्वर के बारे में इससे बढ़कर और कोई विचार नहीं हो सकता। इस धारणा को सामने रखकर इन्होंने हिन्दुओं के पुरातन इतिहास, वर्तमान धार्मिक स्थिति और भारतीय सम्प्रदायों की समालोचना की। जो सत्य समझा उस का स्वतन्त्रता से प्रचार किया और मिथ्या (असत्य) जाना उसे निडर होकर सबके सामने रख दिया।

(आर्य मित्र)

33. सर एड्वर्ड मैक्लेगन

(लैफटिनैन्ट गवर्नर पंजाब)

पंजाब में सब सम्प्रदायों में से महत्वपूर्ण आर्य समाज है। जिसकी स्थापना गुजरात काठियावाड़ के एक ब्राह्मण पंडित दयानन्द सरस्वती ने की थी। आर्यों का विचार है कि वह एक पुराने भूले-बिसरे धर्म को पुनः जीवित कर रहे है जिसके विनाश के लिए बहुत हद तक ब्राह्मण जिम्मेदार हैं। आजकल की यह मान्यता है कि ब्राह्मण वह है जो दिल से ब्राह्मण हो। वेद केवल एक जाति के लिए नहीं है। परमात्मा की दृष्टि में सब एक है। आर्य समाज बालविवाह का विरोधी है। विधवा विवाह में सहयोग करता है। महिला शिक्षा में जुटा हुआ है। अनाथालय, स्कूल, अस्पताल, पुस्तकालय एवं अन्य उपयोगी स्थान स्थापित कर रहा है। समाज का शासन पूर्ण है। वास्तव में धार्मिक संस्था है राजनैतिक नहीं है।

(आर्य गजट)

34. प्रोफेसर जे.सी. ओमन

भारत को पुर्नजीवित करने के लिए आर्य समाज जो साधारण हिन्दु सम्प्रदाय है महत्वपूर्ण भाग ले रहा है। क्योंकि यह उन लोगों का संगठन

है जो अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण किये हुये हैं। इस संस्था का विद्या ग्रहण करना एक उज्जलव भविष्य की आशा दिलाता है और मूर्त्ति पूजा की बिना रोक-टोक भर्त्सना करता है। एक ईश्वर की भक्ति और धार्मिक विचारधारा भारत पर प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकती।

(इंडियन लाईफ)

35. हंस कोहन

(प्रसिद्ध जर्मन लेखक)

आर्य समाज (जिसकी स्थापना स्वामी दयानन्द ने की) ने भारत वर्ष की राजनीतिक शक्ति को जगाने में भाग लिया। इसने देश की विचारधारा एवं आत्मबल को बढ़ाया है और भारतवर्ष के लोगों को अपनी सहायता आप करने का तरीका बताया है।

(पूर्व में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की नीति का इतिहास)

36. मिस्टर इरविन बक्ताई

(सम्पादक बोडापस्ट आस्ट्रेलिया हंगरी)

स्वामी दयानन्द की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूं कि वह एक आदर्श सुधारक थे।

(समाचार पत्र प्रकाश मार्च 1928)

37. प्रोफेसर ग्रिस फोल्ड एम.ए.

(भूतपूर्व प्रोफेसर मिशन कॉलेज लाहौर)

दयानन्द सरस्वती और मार्टन लूथर में कई बातें समान हैं। लूथर तो पाश्चात्य आधुनिक युग में हुआ था और गुजराती सन्यासी दयानन्द भारत के वर्तमान युग में उत्पन्न हुआ। दोनों अपने अपने तरीके से नई क्रान्ति के नेता बने। लूथर ने माफीनामा पर वार किया तो दयानन्द ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया। लूथर ने रोमन चर्च के पुराने रीति-रिवाज़ फेंक दिए और नये और पुराने इकरारनामों को प्रमाणिक माना। दयानन्द

ने ब्राह्मणों, स्मृति, विचारों को छोड़कर भारत की सब से पुरानी पुस्तक वेदों का आश्रय लिया। लूथर ने कहा कि बाईबल की ओर जाओ। दयानन्द की आवाज़ थी कि वेदों की ओर लौटो। पश्चिम के वैज्ञानिक भारत के ऋषियों की वेद विद्या को पूर्ण कर रहे हैं। जो उन्होंने एक अरब वर्ष से अधिक समय पूर्व वैज्ञानिक बताई थी। पुरातन भारत को देखने की शक्ति मिली थी। वर्त्तमान में पश्चिम को कार्य करने की जो शक्ति मिली है प्रोग्राम पूर्व ने बनाया परन्तु पूरा पश्चिम ने किया। इस प्रकार स्वामी दयानन्द ने पूर्व का भाग लिया और पश्चिम को अपने स्थान पर बिठा दिया।

(आर्य गजट फरवरी 1919)

38. जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे

(प्रसिद्ध समाज सुधारक महाराष्ट्र)

(अध्यापक तिलक गोखले वागकार)

स्वामी दयानन्द पूर्व जन्म की संस्कारी आत्मा थे। आर्य धर्म के ठीक रुप को दर्शाया, यह उनकी बुद्धिमता का उचित परिणाम था। हिन्दु सोसायटी सदैव उनकी आभारी रहेगी। मेरे जो भी विचार हैं उनके स्रोत ऋषि दयानन्द हैं।

(सत्य धर्मप्रचारक जालन्धर)

39. जस्टिस एन.जी. चन्दावर्कर

(प्रधान इंडियन नेशनल कांग्रेस लाहौर 1900)

लोग कहते हैं कि ब्राह्मणों की स्वार्थ पूर्त्ति से हिन्दु समाज की बर्बादी हुई। मैं इस बात को नहीं मानता। अन्य जातिओं का भी दोष है। यदि ब्राह्मणों के कारण त्रुटियां रह गई हैं तो ब्राह्मणों ने पूर्वकाल में रेगनाथ और वर्तमान में दयानन्द जैसे उच्च कोटि समाज सुधारकों को पैदा करके अपनी शुद्धि कर ली है। दूसरों ने क्या किया है?

(आर्य डायरैक्टरी)

40. राजनीतिक सन्यासी गोपाल कृष्ण गोखले

(प्रधान इंडियन नेशनल कांग्रेस बनारस 1905)

वेदों के बारे में स्वामी जी का मत मानने योग्य है, यह मैं नहीं कह सकता परन्तु मैं इनको महान सुधारक मानता हूँ।

41. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

(महाराष्ट्र का तथाकथित बादशाह)

स्वामी दयानन्द जी बहुत अच्छे एवं योग्य धर्म सुधारक थे। जब वह पूना में ठहरे थे तब मैंने महाराज के तीन-चार उपदेश सुने हैं। उपदेश हिन्दी में साफ, सरल और समझने योग्य होते थे। न्यायमूर्ति रानाडे और दूसरे नेक व्यक्तियों ने इनका सत्कार किया।

(आर्य गज़ट लाहौर भाग-24)

(एक और अन्य अवसर पर) स्वामी दयानन्द एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। हिन्दु समाज में विशेषकर उतरी भारत में जागृति का श्रेय स्वामी दयानन्द जी को है। केवल वेदभाष्य की पद्धति में हमारा अन्तर है बाकी सब ठीक है। भारत के दृष्टिकोण को भूतकाल की ओर मोड़ने के लिए विद्युत का कार्य किया। भारत वर्ष में केवल सुधरा हुआ ही हिन्दु धर्म रहेगा।

42. सर सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी

(मन्त्री बंगाल, प्रधान)

(इंडियन नैशनल कांग्रेस पूना 1895 एवं अहमदाबाद 1902)

हमें यह कहने में संकोच नहीं कि पंडित दयानन्द कोई साधारण आचार्य नहीं था। यद्यपि हम उसके वेदों के अनुवाद को स्वीकार न करें फिर भी वह अत्यन्त शक्तिशाली, सत्यप्रिय, धार्मिक अध्यापक था। उसकी मृत्यु से सभी भारतवासियों को अत्यन्त दुख हुआ है। वह हमेशा उसकी विद्वता पर गर्व करेंगे और प्रेम विभोर होकर उसका स्मरण करेंगे।

(दयानन्द जीवनी मेहता राधा कृष्ण द्वारा लिखित)

43. पंडित मोतीलाल नेहरु इलाहाबाद

(प्रधान इंडियन नेशनल कांग्रेस अमृतसर 1919, एवं कलकत्ता 1928)

स्वामी दयानन्द महाराज जी के दर्शन मैंने केवल एक बार किए और वह भी अल्प आयु में। इसके पश्चात् अवसर प्राप्त नहीं हुआ। मैं कानपुर सरकारी स्कूल में पढ़ता था। मेरी आयु लगभग 15 वर्ष की थी। उन दिनों स्वामी जी ने सांयकाल के समय परेड के मैदान में एक उपदेश दिया। परेड का मैदान सरकारी स्कूल से मिला हुआ है। मैं क्रिकेट खेल कर अपने आवास की ओर वापिस जा रहा था। शामियाने के नीचे लोगों की भीड़ देखकर मैं भी इसमें शामिल हो गया और धीरे-धीरे आगे बढ़कर स्वामी जी के निकट पहुंच गया। वह मूर्त्ति पूजा के खण्डन का उत्कृष्ट उपदेश दे रहे थे। मैं काफी समय तक ध्यान से सुनता रहा। इस दौरान स्वामी जी की दृष्टि कई बार मुझ पर पड़ी। मुझ को वहाँ केवल खड़ा होने का स्थान मिला था। मुझे संकेत से बुलाया। लोगों ने रास्ता दिया और मुझे निकट बैठने को कहा। मैं बैठ गया। उपदेश सुनता रहा। इतने में लोगों ने अन्दर बाहर से पत्थर फेंकने शुरु कर दिए। कुछ लोगों को जो बैठे थे चोटें भी आई और एक बार समारोह बिखर गया। लोग भागने लगे। मैं उसी स्थान पर बैठा रहा। थोड़ी देर में कुछ लोग फिर एकत्रित हुए परन्तु स्वामी जी ने उपदेश कम कर के शीघ्र समाप्त कर लिया। जिस समय लोग इधर-उधर भाग रहे थे स्वामी जी ने मेरा नाम पूछा और पढ़ने लिखने के बारे में कुछ प्रश्न किए। यह सुनकर कि मैं संस्कृत नहीं पढ़ता चिन्ता प्रकट की और कहा अंग्रेजी, फारसी के साथ संस्कृत अवश्य पढ़नी चाहिए। उपदेश समाप्ति पर मुझे कहा कि तुमको मुझसे कुछ पूछना है। मैंने कहा आप तो मूर्ति पूजा के खिलाफ है। मैं हर प्रकार के पूजन के खिलाफ हूँ और मुझे परमात्मा के होने पर भी संदेह है। वह हंसे और कहा अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव है। मुझे फिर मिलना बातचीत होगी। मैं उस समय दसवीं क्लास में था। परन्तु इस के पश्चात् दुर्भाग्य से कभी दर्शन का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। यह घटना 1875 के आसपास की है। विशेष

बात यह है कि उनका व्यक्तित्व इतना बड़ा था कि इस घटना की एक-एक बात मेरे दिल पर पत्थर की लकीर की सी है।

(प्रकाश ऋषि अंक 1920)

44. मिस्टर विपिन चन्द्र पाल बंगाली नेता

(स्वदेशी प्रचार 1905)

हिन्दू जाति को ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की प्रशंसनीय सेवा से एक अद्‌भुत सम्मान मिल चुका है। ऋषि दयानन्द ने हमें अपनी पुरानी संस्कृति की ओर ले जाकर एक शानदार कार्य किया है जो आज तक किसी समाज सुधारक द्वारा नहीं किया गया। जब इनके कार्य पर विचार करता हूँ तो मेरा शीश इनके चरणों में झुक जाता है। तत्व ज्ञान के अंतर के बावजूद मैं विवश हो जाता हूं और अपनी एवं ब्रह्म समाज की ओर से ऋषि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। उनकी धार्मिक सेवाओं के लिए जो उन्होंने की हैं मैं ऋषि दयानन्द को स्वतन्त्रता का भविष्य वक्ता एवं शान्ति का दूत समझता हूं।

(समाचार पत्र तेज दिल्ली)

45. पंडित बिशन नारायण-लखनऊ

(प्रधान इंडियन नैशनल कांग्रेस कलकता 1911)

भारतवर्ष में स्वामी दयानन्द जैसा दूसरा कोई सुधारक इस शताब्दी में नहीं हुआ।

(स्वामी दयानन्द जीवनी पंडित लेखराम द्वारा)

46. शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

(प्रसिद्ध वक्ता, लेखक, प्रधान इंडियन नैशनल कांग्रेस कलकता 1920)

मैं निसन्देह कह सकता हूँ कि मेरी सारी आयु के बदले यदि मुझे चन्द मिनट स्वामी दयानन्द जी के पवित्र चरणों में बैठकर बात करने का अवसर प्राप्त हो तो मैं यह सौदा महंगा नहीं समझूँगा स्वामी दयानन्द

जी ने मुझे मेरी आत्मा का दान दिया। इसलिए मैं उन का पुत्र होने के कारण उनका कृतज्ञ हूँ। स्वामी दयानन्द ने मृतक हिन्दु समाज को जीवित, जागृत, रचनात्मक आत्म-विश्वास एवं प्रभु से सीधा सम्बन्ध रखने वाली आत्मा प्रदान की। इसलिए हिन्दु होने के नाते मैं उनका ऋणी हूँ। स्वामी दयानन्द ने वेद भूमि में वेदों के गिरे हुए ध्वज को उठाकर खड़ा कर दिया। इसलिए वैदिक धर्मी होने के नाते मैं उनका धन्यवादी हूँ।

स्वामी दयानन्द ने आर्य भूमि में आर्य सन्तान के सम्मुख आर्य जीवन प्रकट किया और आर्य-अनार्य का जो अन्तर है वह बताया। इसलिए आर्य सन्तान होने से मैं उनका उपासक हूँ। स्वामी दयानन्द ने हम भारतीयों को मातृभूमि और मातृभाषा से प्यार करना सिखाया। इसलिए मैं उन का आभारी हूँ। मेरे दिल में उनके लिए ऊँचा स्थान है। भारतीयों की वर्तमान पीढ़ी चरित्र की कमी के कारण दयानन्द जी की शिक्षा को पूरे तौर पर नहीं समझ सकती कि स्वामी दयानन्द जी ने हिन्दुओं के लिए क्या किया है। स्वामी दयानन्द ने हिन्दु जीवन और हिन्दु इतिहास के लिए क्या किया है। स्वामी दयानन्द की शिक्षा का भारतीयों पर क्या प्रभाव पड़ा है। यह ऐसे प्रश्न हैं कि जिनका उतर एक सदी के पश्चात मिल सकता है। वर्तमान के लोग स्वामी दयानन्द की शिक्षा को पूरी तरह समझने के योग्य नहीं है।

(प्रकाश ऋषि अंक 1910)

47. श्री महात्मा मोहन दास कर्म चन्द गांधी

(प्रधान कांग्रेस बालगांव 1924)

असहयोग आंदोलन के जन्मदाता

(खादी प्रचारक एवम् हरिजन उद्धारक)

स्वामी दयानन्द एक बड़े विद्वान एवं समाज सुधारक थे। देश की आवश्यकता के लिए उन्होंने घर की सुख-सुविधा को त्याग कर अनेक कष्ट उठाए। काठियावाड़ में माता-पिता के साथ बड़ा प्यार था और

16 वर्ष के बच्चे के लिए यह अति कठिन होता है कि वह माता पिता तथा सगे-सम्बन्धियों को छोड़कर वन में भटकता फिरे परन्तु देश भक्ति के कारण स्वामी दयानन्द घर से निकल पड़े। ऐसे व्यक्तित्व का यदि कोई अपमान करेगा तो में उसे पाप समझूँगा।

(एक दूसरे अवसर पर) महर्षि दयानन्द के बारे में मेरा दृढ़ विश्वास है कि वह वर्तमान भारत के ऋषियों, सुधारकों और नेक व्यक्तियों में से एक थे। उनका क्रियात्मक जीवन लोगों को आकर्षित करता था। उनके जीवन का प्रभाव भारतवर्ष पर बहुत पड़ा। आर्य समाज दयानन्द की कीर्ति है। आर्य समाज के विरोधी भी मानेंगे कि आर्य समाज ने भारत माता की सेवा की है। आने वाली पीढ़ी दयानन्द का मूल्यांकन आर्य समाज के कार्यों से करेगी।

(प्रकाश ऋषि अंक)

48. सर रविन्द्रनाथ टैगोर

(शान्ति निकेतन बोलपुर (बंगाल) (1914 में नोबेल पुरस्कार मिला)

महागुरु दयानन्द को मेरा अभिनंदन है जिन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से भारतवर्ष के आत्मिक इतिहास की सच्चाई और एकरूपता को देखा। जिस महागुरु के मन ने भारत माता के जीवन के हर पहलु को प्रकाशित किया। जिस गुरु का लक्ष्य भारत माता की अज्ञानता, अविद्या, आलस्य को दूर कर के प्राचीन इतिहास के बल पर अज्ञान से नेकी, सत्य, पवित्रता को उजागर करना है।

(आर्य गजट)

(एक और अवसर पर) महर्षि ने बाल ब्रह्मचारी रह कर ब्रह्मचर्य का उदाहरण पुनः लोगों के सामने रखा जो हमारे लिए जनकल्याण का पथ-प्रदर्शक है। इनके जीवन का एक-एक क्षण लोगों की भलाई के लिए व्यतीत हुआ। दृढ़ ईश्वर विश्वास ने उनको हमेशा सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रकाश प्रदान किया।

(आर्य गज़ट 1926)

49. मिस्टर वी.जे. पटेल

(भूतपूर्व प्रधान विधानसभा, दिल्ली, शिमला)

मुझे स्वामी दयानन्द के उत्तम विचारों से पूरी सहमति है। मैं उन का बड़ा प्रशंसक हूँ।

(एक अन्य अवसर पर) मेरी दृष्टि में ऋषि दयानन्द एक सच्चा राजनीतिक नेता था क्योंकि उसने कहा था कि गैरों का अच्छा शासन भी अपने शासन के समान नहीं। जो बातें आज हम जान रहे हैं वह महर्षि ने 50 वर्ष पूर्व बता दी थी। खेद है कि हमने बड़ा समय नष्ट किया। यदि हम 50 वर्ष पूर्व ही ऋषि के आदेश पर चलते तो भारत स्वतन्त्र होता।

(समाचार-पत्र प्रकाश लाहौर)

50. सर शंकर नायर सदस्य कौंसिल ऑफ स्टेट

(प्रधान इंडियन नैशनल कांग्रेस 1897)

(भूतपूर्व न्यायाधीश उच्च न्यायालय मद्रास)

स्वामी दयानन्द ने भारत में एक महान् क्रान्ति पैदा की। ऋषि ने जो उपकार हिन्दु जाति पर किए हैं उनका उल्लेख करना बहुत कठिन है। जो भलाई उन्होंने महिलाओं और निम्न जातिओं पर की है उसका उल्लेख किए बिना मैं नहीं रह सकता। हमें बताया जाता था कि वेदों में महिलाओं को शिक्षित करने की आज्ञा नहीं है। महिलाओं के सुधार के लिए बाबू केशव चन्द्र सैन, थियोसोफिकल सोसायटी व अन्य संगठनों ने कुछ कार्य किया। परन्तु जो सफलता ऋषि दयानन्द को मिली वह किसी और व्यक्ति को नहीं मिली। ऋषि दयानन्द ने वेदों से महिलाओं की शिक्षा का अधिकार बतलाया। यह साबित किया कि महिलायें योगाभ्यास के द्वारा अपनी आत्मा की उन्नति कर सकती हैं। मैं देखता हूँ जहाँ जहाँ आर्य समाज है वहाँ की महिलाओं में जागृति पैदा हो गई है। मैं अपनी बहिनों से प्रार्थना करुँगा कि आर्य समाज का प्रकाश अशिक्षित बहनों तक पहुचाएं ताकि उनमें भी क्रान्ति आ जाए।

आज हिन्दु जाति आर्य समाज की ओर उसी प्रकार आंखें लगाए हुए है जिस प्रकार एक किसान घनघोर घटाओं की ओर आशा भरी आंखों से देखता है। ऋषि दयानन्द ने अछूतों को मिलाने का तरीका दुनिया को दिखा दिया। इस ऋषि का दिल कितना विशाल था। ऋषि दयानन्द ने धर्म के लिए अपने प्राणों की भी परवाह नहीं की।

(एक उपदेश जो दयानन्द हाई स्कूल दिल्ली में 19 फरवरी 1928 को दिया)

51. पंडित मदन मोहन मालवीय इलाहाबाद

(संस्थापक हिन्दु विश्वविद्यालय बनारस, (प्रधान इंडियन नैशनल कांग्रेस लाहौर 1909 एवम् दिल्ली 1918)

ऋषि दयानन्द को मैं देशभक्तों में आदरणीय और ब्रह्मचारियों में पूजनीय और हिन्दु जाति की सेवा करने वाला सबसे बड़ा मानता हूँ। उनकी शिक्षा से स्वामी श्रद्धानन्द के मन में ऐसे ऊँचे विचार पैदा हुए कि उन्होंने गुरुकुल की पवित्र प्रणाली को जारी किया। देश की पराधीनता पर स्वामी दयानन्द का दिल अत्यन्त दुखी था। "सत्यार्थ प्रकाश" का ग्यारहवां सम्मुल्लास पढ़ो। इसके एक-एक शब्द में ऋषि दयानन्द भारतवासियों को कह रहे हैं कि अपने देश के अंदर स्वतन्त्र बनो यह दुःख की बात है कि कई नेता परामर्श देकर चले गये और चले जा रहे है। लेकिन हमारे अंदर जागृति नहीं आई। आपने यदि ऋषि दयानन्द की शिक्षा का पालन नहीं किया तो ऋषि का क्या सम्मान किया।

(वार्षिक उत्सव गुरुकुल कांगड़ी 1927)

52. भारतीय बुलबुल श्रीमती सरोजिनी नायडू

(प्रधान इंडियन नेशनल कांग्रेस 1925)

ऋषि दयानन्द उस दर्पण की भांति हैं जिसमें लोग हर प्रकार के रंग देखते हैं। कोई उनको ऋषि, कोई राजनीति के नेता, कोई सत्पुरुष

और कोई धार्मिक पथ-प्रदर्शक कहता है। और वह निःसन्देह इन सबका मिश्रण हैं। लेकिन मैं ऋषि दयानन्द को हर प्रकार की दासता अर्थात् सामाजिक, मानसिक और हर प्रकार की गुलामी से छुड़ाने वाला मानती हूँ। ऋषि दयानन्द ने हमें आत्म-विश्वास सिखाया और बताया कि दुनिया में सुन्दरता त्याग है, सुन्दरता बल है और सुन्दरता स्वतन्त्रता है।

(समाचार पत्र तेज दिल्ली)

53. श्री विजय राघव आचार्य

(प्रधान एकता सम्मेलन इलाहाबाद)

स्वामी दयानन्द ने जिस प्रकार जीवन व्यतीत किया और जैसे उनका देहान्त हुआ वह ऐसा था कि यदि उनका जन्म और मृत्यु दक्षिण भारत में होती तो यद्यपि आप मूर्त्ति पूजा के खंडन करने वाले थे आप को देवों की पदवी दी जाती और आप की मूर्त्ति मंदिरों में रखकर पूजा की जाती ।

स्वामी जी ने वर्तमान काल में जो हिन्दू धर्म की सेवा की है। हमारे विचार में और किसी व्यक्ति ने नहीं की। आपका व्यक्तित्व दुनिया के लिए उत्तम धन था और भारत को इस पर गौरव करना चाहिए। यदि ईश्वर हमें उन्हें एक हजार वर्ष पूर्व प्रदान करता तो देश की सामाजिक एवं राजनीतिक अवस्था बिल्कुल भिन्न होती और किसी व्यक्ति ने हम हिन्दुओं को मृतक जाति न समझा होता। वास्तव में महर्षि दयानन्द दुनिया में उन महापुरुषों में से थे जिन के परमात्मा के साथ गहरे सम्बन्ध हैं।

(ऋषि प्रकाश अंक 1926)

54. बाबु अरविन्दो घोष (पाण्डीचेरी)

(आर्य मैग्ज़ीन अक्टूबर, नवम्बर 1914)

1. स्वामी दयानन्द संस्कृत के महान विद्वान थे। जो शास्त्र सामग्री इनको मिली इससे जो उन्होंने कार्य किया वह अपने आप में

उदाहरण है। वेदों के विषयों का पथ इस युग में किसी को अगर ज्ञात हुआ तो वह दयानन्द है। इसने हमें वेदों की चाबी प्रदान की है। जिससे हम बहुमूल्य रत्न निकाल सकते है।

2. दयानन्द सत्य के प्रतीक थे। जहाँ सत्य दृष्टिगोचर हो समझ लो कि उस पर दयानन्द की मोहर लगी हुई है। देश, राष्ट्र, धर्म की सेवा का यदि कोई कार्य करना हो तो वह अवश्य हो जाएगा क्योंकि दयानन्द के अनुयायी मिल जाते हैं।
3. आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने वैदिक धर्म को जीवित करने का एक बार पुनः प्रयास किया। दयानन्द के वेद भाष्य का आधार पुरातन विद्या है जो निरुक्त में पायी जाती है। वह संस्कृत के एक सम्मानित विद्वान थे। जिन्होंने अपनी विद्या का प्रयोग सराहनीय बुद्धिमता से और स्वतन्त्रता से किया।
4. आज तक वेदों के जितने भाष्य हुए हैं उन सब में से दयानन्द का भाष्य ही ऐसा है जो बुद्धि को प्रेरित करता है। भविष्य के बारे में हम कुछ नहीं कह सकते लेकिन इतना अवश्य कहेंगे कि जितने भाष्य धरती पर हैं उन सब में से दयानन्द का भाष्य उत्तम है।

53. डॉ. सर पी.सी. राय कलकत्ता

(रसायन विज्ञान के प्रसिद्ध वैज्ञानिक)

यद्यपि मैं आर्य समाज के सभी विचारों से सहमत नहीं हो सकता लेकिन इसके नियमों एवं इन द्वारा जो देश की सेवा की जा रही है उसकी हृदय से सराहना करता हूँ। वेद एक ईश्वर की पूजा सिखाता है। और आर्य समाज इसका प्रचार करता है। इसने जाति पाति को तोड़ दिया है। मैं इस जाति-पाति के बंधन को भारत की राजनीतिक उन्नति में बहुत बाधक समझता हूँ। आर्य समाज ने अछूतों की सहायता की ओर हाथ बढ़ाया है। इनको साथ मिलाकर गले लगाया है। इनके नेताओं में कार्य करने की रुचि है और उन्होंने इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए कुर्बानी की है। मुझे दयानन्द कॉलिज लाहौर देखने का अवसर प्राप्त हुआ है।

मैं वहाँ के कार्य करने वालों से बहुत प्रभावित हुआ। आर्य समाज अपने प्रोग्राम में महिला शिक्षा को उच्च स्थान प्रदान करता है आर्य समाज ने मातृभूमि की उन्नति के लिए बहत कुछ किया है। जो हमारे लिए गौरव का विषय है और जिसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

56. लाला हरदयाल एम.एस

निवासी स्वीड़न, नार्वे

(पंजाब विश्वविद्यालय के आज तक किसी ने इतने अंक प्राप्त नहीं किए जितने लाला हरदयाल जी ने)

स्वामी दयानन्द ने हिन्दु लोगों के दिलों में त्याग, परोपकार और देशभक्ति की अग्नि प्रज्जवलित की और इसी की ही हमारे दुर्भाग्यपूर्ण देश को सब से अधिक आवश्यकता है। स्वामी जी ने शादी नहीं की और आयु पर्यन्त ब्रह्मचारी रहे। इनका परिवार आगे नहीं बढ़ा। लेकिन इनके आध्यात्मिक प्रवचनों से ऐसे सपूत पैदा हुए कि पंजाब में सिक्ख गुरुओं के पश्चात् ऐसा उजाला नहीं हुआ। हर हिन्दु को जो धार्मिक शिक्षा मिली है इस सब का श्रेय स्वामी जी को है क्योंकि इस महर्षि ने ही त्याग की गंगा प्रवाहित की है। और उत्तर भारत में हर प्रकार के आंदोलन का बीज आरोपण किया है। भारत के इतिहास में स्वामी जी का नाम पवित्र सुधारकों में सुनहरी अक्षरों में लिखा जाएगा। क्योंकि उन्होंने हिन्दु जाति और उसके सुधार के लिए जीवन लगा दिया।

27. सरशियो स्वामी अय्यर

(भूतपूर्व न्यायाधीश उच्च न्यायालय मद्रास)

स्वामी दयानन्द एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दु जाति की नई दुनिया में ग्रहण करने योग्य आवश्यकताओं को बड़ी दूरदर्शिता से महसूस किया। जिस आर्य समाज की उन्होंने स्थापना की वह उस प्रयत्न की यादगार है, जो उन्होंने हिन्दु धर्म की 'तथाऽस्तु' के विचार से ऊपर उठकर उनको आत्मबल के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित

किया। स्वामी जी ने धार्मिक इतिहास में अमूल्य परिवर्तन का कार्य किया है। उसके लिए मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और उनके इस कार्य के लिए कृतज्ञ हूँ।

58. श्री युत एस. सत्यमूर्ति एडवोकेट मद्रास

ऋषि दयानन्द का यह लक्ष्य था कि पुरानी हिन्दु जाति को स्वतन्त्र बना देवें। इसके लिए पूरे परिवर्तन की आवश्यकता थी। समय भी परिवर्तन का था। समस्त संसार में परिवर्तन का वातावरण था। भारत में भी ऐसा होना अनिवार्य था। जब भारत में परिवर्तन लाने वालों की सूची बनायी जायेगी तो ऋषि दयानन्द का नाम सबसे ऊँचा होगा।

59. श्री सी.वाई. चिन्तामणि

(मुख्य सम्पादक समाचार-पत्र लीडर, इलाहाबाद)

(भूतपूर्व शिक्षामंत्री यू.पी.)

स्वामी दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व उत्तम था। उनका जन्म ऐसे परिवार में हुआ जो नेक एवं पवित्र था। उनके माता पिता ऊँचे आचरण के प्राणी थे। उन्होंने अपना आचरण बहुत प्रसिद्ध बना लिया था जिसमें आत्म सम्मान शक्ति, निडरता और देशभक्ति निहित थी। उन्होंने अपने कार्यकाल में अपने उच्च विचारों से दूसरों पर गहरा प्रभाव डाला। उन के प्रयत्नों के परिणाम उत्तम एवं शानदार हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में वह एक उच्चकोटि के भारतीय थे। वह भारत के पाँच रत्नों में से एक थे। बाकी चार रत्न राजा राम मोहन राय संस्थापक ब्रह्म समाज, दूसरे रानाडे, तीसरे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और चौथे दादा भाई नारोजी

(समाचार पत्र लीडर फरवरी 1925)

एक अन्य अवसर पर शिक्षामंत्री के रुप में बिजनौर

यदि स्वामी दयानन्द द्वारा चलायी आर्य समाज न होती तो उत्तर भारत के स्त्री-पुरुषों की शिक्षा का परमात्मा ही मालिक था।

60. मिस्टर जी.एस. खाड़े नागपुर

(केन्द्रीय प्रान्तीय हिन्दू का लीडर)

मुझे बम्बई में घन्टों भर ऋषि दयानन्द के प्रवचन सुनने और उनसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। वह बड़े महात्मा थे और भविष्य वक्ता एवं विद्वान थे। उनके तर्क संगत विचारों के सामने कम लोग ठहर सकते थे। उन्होंने जो कार्य किया वह बड़ा सराहनीय है।

(तेज देहली 1925)

61. दिवान बहादुर हरविलास शारदा, अजमेर

(हिन्दू सीनियारेटी के लेखक, सदस्य एसेम्बली)

स्वामी दयानन्द सुधारक ही न थे अपितु जगतगुरु थे। उन्होंने देखा कि दुनिया अज्ञानता में डूबी हुई है। और उनका अपना देश स्वार्थ एवं भ्रम जाल में फंसा हुआ है। उन्होंने देखा कि वह प्रकाश जो लोगों एवं समाज को मुक्ति की राह पर ले जाता है बुझ चुका है। उन्होंने देखा कि अवनति का मुख्य कारण वैदिक शिक्षा की अनदेखी है। इस कारण उन्होंने वैदिक धर्म को पुनः जीवित करने का संकल्प लिया। उन्होंने घोषणा की कि वेद सारे प्राणिमात्र के लिए है। किसी एक जाति की सम्पत्ति नहीं है। वेदों में वह ज्ञान है जिस का व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में लागू होना अनिवार्य है। वेद सत्य है और सत्य के विरुद्ध शिक्षा से प्राणि मात्र का भला संभव नहीं है। स्वामी जी ने सारा जीवन वेद विद्या के प्रचार में व्यतीत कर दिया और उन्होंने अपनी वसीयत में यह चाहा है कि वेदों का प्रकाश देश देशान्तरों में किया जाए।

62. श्री पुरुषोत्तम दास ठाकुर दास बम्बई

(भारतवर्ष का प्रसिद्ध राजस्व ज्ञानी)

धार्मिक विचारों के अतिरिक्त जिस बात ने मुझे ऋषि दयानन्द का भक्त बनाया है वह है उसका समाज सुधार, बाल-विवाह एवं विधवा विवाह का कार्य। छूतछात को दूर करने के कार्य को ऋषि दयानन्द ने

आर्य समाज का एक अनिवार्य अंग बनाया। इसके अतिरिक्त दयानन्द ने हमारी भलाई के लिए पुरानी संस्कृति की ओर हमारा ध्यान दिलाया। इस प्रकार हमारे जीवन को सहज कर दिया। ऋषि के आने से पूर्व लोग समझते थे कि पुरानी संस्कृति हमारी उन्नति की राह में बाधक है। ऋषि ने बताया बुद्धि से काम लो और बीमारी के अनुसार उपचार करो। गुजरात में पहले आर्य समाज का अधिक प्रचार न था। अब हर तरफ आर्य समाज की गूँज सुनायी देती है जो इसकी सत्यता का प्रमाण है। मैं वैष्णव सम्प्रदाय में उत्पन्न हुआ और उसी में मेरा पालन पोषण हुआ है। परन्तु आर्य समाज के सत्य की छाप मेरे दिल पर पुष्ट हो चुकी है। ईश्वर से प्रार्थना है कि इस देश में ऋषि दयानन्द जैसे हजारों जन्म लेवें जिनका कार्य न केवल वैदिक धर्म के ध्वज को ही स्थापित करना हो परन्तु सच्चे देश भक्त हो।

(समाचार-पत्र तेज दिल्ली)

63. लाला हरकिशनलाल बी.ए.

(बैरिस्टर एटला लाहौर)

(भूतपूर्व मन्त्री पंजाब सरकार, भारतीय बीमा कम्पनी के निदेशक)

हिन्दुओं के दिल तथा बुद्धि सात-आठ सौ वर्षों से पैन्शन ले चुके थे या समाधि में थे। स्वामी जी आए, दिल और बुद्धि ने अपने कार्य दिखलाए और नए जीवन का शुभ आरम्भ हुआ। स्वामी दयानन्द जी ने नया जीवन प्रदान किया। और भारत की समाधि तोड़ दी। या तो वह मसीहा थे कुछ ना कुछ अवश्य थे।

64. मिस्टर नरसिंह चिन्तामणी केल्कर

(एम.एल.ए., संपादक, केसरी, पूना)

मेरा विचार है कि आप इस सत्य की प्रशंसा करेगे कि दक्षिण में इस समय सुधार का महान कार्य हो चुका है। यह उन्नति स्वामी दयानन्द महाराज जी के द्वारा हुई है। उनको मूर्ति पूजा का विरोधी जाना

जाता था परन्तु अब उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। मुझे दुख होता है यह मानते हुए कि हम छूत-छात के प्रति बहुत तंग दिल है। समय आ गया है कि हम उस छूतछात को हटाने के कार्य को भली प्रकार समझें जो इस समय बहुत फैल चुकी है। निसन्देह यह आन्दोलन स्वामी दयानन्द का चलाया हुआ है। इस कारण स्वामी दयानन्द पर आरोप लगाना अनुचित है। मैं उन लोगों में से हूँ जो आर्य समाज को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। दक्षिण के बहुत से मेरे भाई इस विचार से सहमत हैं महाराष्ट्र वाले इस बात को समझते हैं कि ऋषि दयानन्द के कारण हिन्दु जाति कायम रही है। आर्य समाज सामाजिक कार्यों, विधवा विवाह तथा अछूतोद्धार में सबसे आगे रहा है। सत्य तो यह है कि सनातन धर्म और आर्य समाज में अन्तर नहीं रहा। वास्तव में आर्य समाज ने सनातन धर्म पर विजय पाई है।

65. श्री शापुर सकलात वाला

(एक उपदेश की रिपोर्ट)

(भूतपूर्व सदस्य ब्रिटिश संसद)

यदि आर्य समाज के संस्थापक के विचारों को मानकर प्रगति की ओर लाया जाता है और उस पर उसारा जाता तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती। आर्य समाज सभी आर्य लोगों के भ्रातृ भाव की संस्था है। यदि दियानतदारी के साथ प्राणि-मात्र से प्यार के साथ चलाया जाता तो क्या बन गया होता और हमें 1875 के उपद्रव और मारकाट से मुक्ति मिल जाती।

66. डॉ. सर हरि सिंह गौड़ नागपुर

स्वामी दयानन्द ने भारत को एक सूत्र में पिरोने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। इससे हिन्दु जाति एवं आर्य समाज की जो उन्नति हुई है वह प्रत्यक्ष है। भारत ही नहीं अपितु अन्य देशों में भी आर्य समाज का प्रचार हुआ है। जब स्वामी जी ने देखा कि जाति

मतभेद एवं मूर्त्ति पूजा से हिन्दू अपमानित हो रहे हैं तब उन्होंने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। इस के अतिरिक्त स्वामी जी ने समाज सुधार का कार्य किया। 50 वर्ष में लाखों नर नारी आर्य समाज में शामिल हो गए है। आर्य समाज हिन्दुओं के विरुद्ध नहीं बल्कि हिन्दु धर्म के वास्तविक स्वरुप को जनता के सामने प्रस्तुत करता है। हिन्दुओं को चाहिए कि वह आर्य समाज के नियमों को स्वीकार करें इस में उनकी सुरक्षा है।

(समाचार पत्र तेज़ दिल्ली 1925)

एक अन्य अवसर पर

यदि बुद्ध का धर्म प्रेम का धर्म था तो भी उसे असफलता हुई। जहाँ बुद्ध असफल रहा वहाँ ऋषि दयानन्द को सफलता मिली। मुझे पूर्ण विश्वास है कि महात्मा बुद्ध ने महात्मा दयानन्द की आत्मा का सत्कार किया होगा और कहा होगा कि जहाँ मैं असफल रहा आपने पूर्ण सफलता प्राप्त की।

(अखबार तेज दिल्ली)

67. श्री एम.एस. ऐने

(सदस्य सैन्ट्रल एसेम्बली भारत)

जब मैं यह विचार करता हूँ कि ऋषि दयानन्द ने देश जाति की कितनी सेवा की है जिस से देश में धार्मिक प्रगति हुई है तो मुझे संस्कृत के निम्नलिखित मन्त्र की सच्चाई याद आती है।

भवोहि लोका भयूदयाय ताहशाम्

मुझे विश्वास है कि मेरे साथ भारत का हर व्यक्ति यह अनुभव करता होगा कि ऋषि दयानन्द का जन्म इसलिए हुआ था कि वह हमें घोर अन्धकार से निकाल कर सत्य एवं स्वतन्त्रता की राह पर लाएं। अपने जीवन की कमियों के कारण जो लोग सत्य के इच्छुक हैं उनके लिए वह शक्ति का स्तम्भ थे। उनकी शानदार मृत्यु वर्तमान एवं आने

वाले लोगों को प्रेरित करेगी कि वह राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दें और अमूल्य वैदिक धर्म का प्रचार करें।

68. स्वर्गीय जे.एम.सैन गुप्ता

(बैरिस्टर भूतपूर्व मेअर कलकता कारपोरेशन)

मेरे विचार में हम जो राष्ट्र उन्नति कर रहे हैं वह स्वामी दयानन्द एवं राजाराम मोहन राय के कारण है जो सामाजिक एवं धार्मिक सुधारक थे। यदि उन्होंने मार्गदर्शन न दिया होता तो क्या महात्मा गांधी के लिए कुछ कर सकना मुमकिन हो सकता था? क्या वह छूतछात के विरुद्ध लड़ाई के लिए पूरे देश को अपने साथ मिला सकते थे? यदि स्वामी दयानन्द ने स्वयं कष्ट सह कर मैदान तैयार न किया होता तो यह कार्य असंभव था। इंडियन नैशनल कांग्रेस यदि ऐसा प्रोग्राम तैयार भी करती तो यह समझना कठिन है कि लोग उस को मान लेते।

69. श्री सुभाषचन्द्र बोस (प्रकाश लाहौर)

(नेता नवयुवक संस्था बंगाल)

आर्य समाज के नियम बड़े उदार हैं और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को मैं संसार के सारे राजनीतिक नेताओं एवं पथ प्रदर्शकों में ऊँचा स्थान देता हूँ।

(1929 अमरावती में एक व्याख्यान)

70. साधु टी.एल. वस्वाणी

(बैरिस्टर भूतपूर्व प्रिंसीपल दयाल सिंह कॉलिज लाहौर)

मैं ऋषि दयानन्द के चरणों में श्रद्धा एवं प्यार के फूल अर्पित करता हूँ क्योंकि मैं समझता हूँ कि वह हिन्दु धर्म को नये सिरे से चलाने वाले थे। अब अधिक समय प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी कि हिन्दु अपनी सन्तान को उन पवित्र आत्माओं के बारे अवगत कराएं जो समय समय पर हिन्दु जाति को बचाने के लिए संसार में पैदा हुए। ऋषि दयानन्द

का नाम भी लें और एक दिन आएगा जब मुसलमान यह जान लेंगे कि ऋषि दयानन्द ने इस सत्य का प्रचार किया कि परमात्मा एक है। उन्होंने इसलाम की वास्तविकता को देख लिया था।

ऋषि दयानन्द एक विद्वान प्रचारक थे। उनका बलिदान हुआ। ऋषि दयानन्द के उपदेश आज के नेताओं की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली थे। इन में बल और सच्चाई थी। वर्तमान में जो संगठन की आवाज आ रही है इसमें मैं ऋषि दयानन्द की आवाज सुनता हूँ तथा अछूत उद्धार में ऋषि दयानन्द को कार्य करता देखता हूँ। वैदिक धर्म का उन्होंने पुनः नाद बजाया। इसमें जाति-पाति, रंग-भेद वाली बात नहीं है। इसमें शुभ कर्म करने की प्राथमिकता है। आज कल की शिक्षा को जानकर मुझे दुख होता है। मैं पूछता हूँ कि वास्तविकता कहां है। राष्ट्रीय शिक्षा की रुह कहां है? ऋषि दयानन्द ने पुरानी शिक्षा को आदर्श माना था। इसी से भारत में नई चेतना आएगी। वर्तमान में जो दुख देने वाली घटनाएं घट रही हैं मैं समझता हूँ कि इस महामानव को हमने वास्तव में नहीं जाना। मनुष्य जैसा सोचता है वैसा कर्म करता है। दयानन्द क्या था? इसको जानने के लिए ज्ञान अनिवार्य है। उसके मिशन को समझने की आवश्यकता है। जिसको उन्होंने अमानत के तौर पर अपूर्ण ही छोड़ा था। उनका मिशन केवल आर्य समाज के लिए ही नहीं। ऋषि दयानन्द सारे हिन्दु समाज के थे और राष्ट्र के धरोहर थे। वह मनुष्य मात्र के लिए सम्पत्ति थे।

ऋषि दयानन्द एक जीवित शक्ति थी। तुम उस की अनदेखी नहीं कर सकते। न तो उसे छोड़ सकते हो। न ही दबा सकते हो यह जरुरी है कि तुम उसको जानो तुम्हें ऋषि दयानन्द की बात माननी पड़ेगी।

ऋषि दयानन्द प्रभावशाली शक्ति है, उसका जीवन पुराने आदर्शों की भांति चमक रहा है जो अमर है। पुराने काल के ज्ञान को समझ कर उस पर अनुकरण करके भारत का नवनिर्माण होगा। कौंसिलों के वाद-विवाद सरकारी कमीशनों और संसद के निर्णय से नया भारत नहीं बनेगा।

(समाचार पत्र तेज 1927)

71. डॉ. बी.एस. मुन्जे

(प्रधान हिन्दु महासभा नागपुर)

स्वामी दयानन्द एक महान ऋषि थे जिनमें देवताओं के से गुण थे। उन्होंने हिन्दु संगठन का कार्य उचित तौर पर धर्मानुसार आरम्भ किया। उनके जीवन काल में उनके प्रयत्न की अधिक प्रशंसा नहीं हुई। साधारण तौर पर एक व्यक्ति के गुण उस समय सामने आते हैं जब कोई बड़ा खतरा उसके सम्मुख आता है। हिन्दु जाति की आज यही हालत हैं। इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हिन्दु सोसायटी का हर अंग जिसमें पौराणिक भी शामिल है इस नई जागृति और जाति को पुनः जीवित करने वाले प्रकाश से जो ऋषि दयानन्द ने फैलाया है, मार्ग दर्शन प्राप्त कर रहे हैं और अपने-अपने भाग की ज्योति ग्रहण करके इक्ट्ठे लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं यद्यपि सब के मार्ग भिन्न हैं। जब भारत में हिन्दु संगठन, हिन्दु गुरुओं एवं हिन्दु धर्म की महानता का कार्य पूरा हो जायेगा तो इसका श्रेय ऋषि दयानन्द को मिलेगा। ऋषि दयानन्द ने मर रही हिन्दु जाति को मृत्यु के मुंह से बचाया।

(आर्यन कांग्रेस मद्रास दिसम्बर 1927)

72. दीवान बहादुर राजा नरेन्द्र नाथ एम.ए.

(भूतपूर्व जिलाधीश, प्रधान हिन्दु महासभा)

गत 40 वर्षों में योरुप और भारत के बुद्धिजीवियों ने भारत की पुरानी सभ्यता, संस्कृति की ओर ध्यान दिलाया है। इसमें जो भाग, भारत विशेष तौर पर बंगाल के बुद्धिजीवियों ने लिया है उसके मार्गदर्शक महर्षि दयानन्द है। जब इनका पदार्पण हुआ तो उस समय आर्यावर्त्त देश की दशा यह थी कि अंग्रेजी शिक्षा ने पुरानी धार्मिक संस्कृति की जड़ें हिला दी थी।

हमें अपने सामाजिक जीवन में कोई अच्छाई दिखाई नहीं देती थी। भारत में अंग्रेजी शिक्षा इस विचार को लेकर जारी की गई थी कि हिन्दुओं की सभ्यता संस्कृति गलतियों से भरी पड़ी है। जिसके प्रचार

प्रसार को रोकना सरकार का दायित्व है। यह कहा जाता था कि हिन्दु धर्म में मूर्त्ति पूजा और प्रकृति जड़ पूजा के सिवाए कुछ भी नहीं है। उनके धार्मिक ग्रन्थों में केवल कहानियां हैं। जिनको मानना बुद्धि और अनुभव से दूर है। उनका विज्ञान एवं चिकित्सा-ज्ञान अनुचित नियमों पर आधारित है। हम इन लोगों में से नहीं है जो हर पुरानी बात की प्रशंसा करें। और न ही इस बात से इंकार है कि पश्चिमी देश की जातियों ने विज्ञान में बड़ी उन्नति की है और न ही महर्षि दयानन्द का ऐसा विचार था। लेकिन खरे को खोटे से पृथक करना एक अति कठिन कार्य है। इस कार्य को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने अत्यन्त सुचारु रुप से किया। जिसके लिए उनके नाम को दुनिया के इतिहास में सम्मान के साथ याद किया जाएगा। इसके अतिरिक्त एक बड़ी बात यह है कि उन्होंने पुरानी संस्कृति को नष्ट होने से बचा लिया और दुनिया में सत्य का प्रचार किया। जैसा कि आवागमन, ईश्वर, जीव का अनादि होना आदि।

(एक अन्य अवसर पर) जहाँ तक मेरी सोच काम करती है हिन्दु समाज पूरी तरह से तब तक संगठित नहीं होगा जब तक उन नियमों का प्रचार प्रसार नहीं होता जिन पर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की है।

73. श्री भाई परमानन्द जी एम.ए.

(प्रोफेसर दयानन्द कॉलिज लाहौर, प्रधान हिन्दु महासभा)

स्वामी दयानन्द एक महापुरुष थे। मैं उनके मिशन को ईश्वरीय मानता हूँ। भगवत गीता में लिखा है जब-जब धर्म की ग्लानि होती है तो धर्म की स्थापना और अधर्म को नष्ट करने युगों युगों में मैं आता हूँ। स्वामी दयानन्द जी इस मिशन को लेकर दुनिया में आए थे। इनके कार्य की समीक्षा इनका मिशन ही पारखी (कसौटी) है। इनका मिशन था वैदिक धर्म की सुरक्षा। सियासी दुनिया में हम एक दूसरे के साथ प्रेम प्यार करें लेकिन एक बात कभी ना भूलें कि अपने अस्तित्व को

कायम रखना है और सुदृढ़ करना है। वैदिक धर्म और सभ्यता दोनों एक हैं। आर्य धर्म को दुनिया में कायम रखना और वैदिक धर्म की सुरक्षा दोनों एक है। यही स्वामी जी का लक्ष्य था। ऋषि दयानन्द के साथ पुरातन ऋषियों की आध्यात्मिक शक्ति थी। ऋषि दयानन्द का जीवन भारतवर्ष के लिए कोई नया जीवन नहीं था। ऋषि दयानन्द ने अपने कार्य से पुरातन काल के महान ऋषियों के जीवन का जीता जागता चित्र देश के सम्मुख रखा। इस से पूर्व हम भारतवासी पवित्र जीवन को शास्त्रों एवं पुस्तकों में पढ़कर प्रसन्न होते थे। लेकिन ऋषि दयानन्द ने जीवित प्रमाण प्रस्तुत किया कि ऋषि ऐसे होते थे।

74. स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक

(लेखक जर्मन यात्रा)

ऋषि दयानन्द ने जो मेरे जीवन पर प्रभाव डाला है। उसे मैं वाणी द्वारा कहने में समर्थ नहीं। मैंने जो सीखा है और उत्तम विचार ग्रहण किए हैं वह ऋषि दयानन्द की कृपा है। अमरीका में मुझे सैंकड़ों कठिनाईयों से दो–चार होना पड़ा लेकिन ऋषि के उपदेशों ने मेरी सहायता की। यदि मैंने ऋषि दयानन्द की जीवनी और सत्यार्थ प्रकाश को न पढ़ा होता तो अवश्य ईसाई बन गया होता। अंग्रेजों और फ्रांस वालों के देश में जो प्रलोभन हैं वे युवकों को नष्ट करने वाले हैं। मैं वहाँ अकेला था। मैंने सामना किया वास्तव में यह मेरी शक्ति नहीं थी। उस महान आत्मा के उपदेश के कारण हुआ।

75. श्री केरेन्द्रकर

(सदस्य कौंसिल ऑफ स्टेट)

यदि कोई स्वामी दयानन्द जी का दर्शन करना चाहे तो उनका शरीर तो नजर नहीं आएगा परन्तु जो कार्य उन्होंने किए हैं उनका ध्यान करने से उनकी मूर्त्ति अन्तःकरण में नज़र आएगी। स्वामी जी के कार्य को आर्य समाज ने बढ़ाया है। आर्य समाज में विद्वानों का सम्मान सबसे

अधिक है। हमारे महाराष्ट्र में आर्य समाज की बड़ी प्रशंसा हो रही है। हमें इस पर गौरव है। जिस मंदिर की नींव जितनी गहरी होती है वह भवन उतना दृढ़ होता है। स्वामी जी के प्रताप से लोगों को सत्य का मूल्य ज्ञात हो गया है। यहीं नींव (बुनियाद) है।

(दिल्ली में उपदेश 1925)

76. सरदार सरदूल सिंह जी कवीशर

उत्तरी भारत में जो शिक्षा की लहर चली है वह आर्यसमाज के कारण है। इस समय पंजाब में जो मुसलमानों एवं अन्य सम्प्रदायों में शिक्षा की उन्नति दिखाई देती है वह आर्यसमाज की देखा देखी है। उत्तरी भारत में सबसे पूर्व आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता का बीज बोया। खिलाफत आंदोलन में मुसलमानों को हिन्दुओं से जो सहायता मिली इसी स्वतन्त्रता की लहर के कारण थी।

77. डॉ. सत्यपाल जी.बी.ए.

(एम.बी.बी.एस. लाहौर)

मैं और भगवान दयानन्द के गुणों का वर्णन। सूर्य, कहाँ, मिट्टी का कण, समुद्र और लहरों का गुणगान, एक अवगुण मानता हूँ। देश और जाति के हितैषी दयानन्द राह से बिछुड़ गए। भारतवासियों को सीधी राह पर लाने वाले दयानन्द को मेरा शत-शत प्रणाम। यदि मुझे यह विश्वास न होता कि प्रभु-भक्ति का अधिकार सब को एक जैसा है तो मैं यह सब कुछ लिखने की चेष्टा न करता।

कहा जाता है कि दयानन्द असहनशील थे उन में सहनशक्ति न थी। जब कि उन के दिल में चींटी तक के लिए प्रेम था। बेजबान प्राणियों के लिए भी जिस के दिल में दया थी जो अपने पर आक्रमण करने वाले को भी क्षमा कर सकता था। जो विष देने वाले पर भी नाराज नहीं हो सकता। गऊ, विधवा अनाथ, दुखिया कोई भी उन की दया दृष्टि

से वंचित नहीं रहा। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि दयानन्द में सहनशीलता नहीं थी। एक प्रकार से वह असहनशील थे क्योंकि वह पाप को सहन नहीं करते थे। जैसे सूर्य को अंधकार से, जल को अग्नि से वैर है, इस प्रकार भगवान को सच्चे भक्त के पाप से वैर होता है। ये शुद्ध पवित्र आत्माएं संसार में अत्याचार, पाप, बुराई और अज्ञान से युद्ध करने के लिए आती हैं और जब तक संसार में रहती हैं ये युद्ध जारी रखती है। दयानन्द को भय था तो परमेश्वर की शक्ति का। संसार के राजसुख, सुविधा, धन सम्मान, पदवी कोई भी चीज इस शेर आदमी को फुसला नहीं सकती थी। बस यही दयानन्द की असहनशीलता थी। भारतवर्ष में इस समय जो लहर चल रही है उसका जन्मदाता ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं। जब अंग्रेजी संस्कृति ने अपना माया जाल बिछाया था तो सब बुद्धिजीवी उसकी ओर चल पड़े। उस समय इस पवित्र-आत्मा ने अपना नाद बजाया। लोगों को आने वाले भय से परिचित कराया। मन में आता है कि सौ जन्म इस पवित्र नेता पर वार दूँ।

78. स्वर्गीय पंडित माधव राव सपरे

(प्रधान भारत हिन्दी सम्मलेन देहरादून)

निसन्देह महर्षि दयानन्द की कृपा से आर्य समाज ने भारतवर्ष में सराहनीय कार्य किया है हिन्दी भाषा का प्रचार समाज सुधार, शिक्षा का प्रसार कुछ ऐसे कार्य हैं जिनको मैं बड़े आदर से देखता हूँ। परमात्मा से प्रार्थना है कि आप लोगों को इन सारे कार्यों में सफलता मिले।

79. स्वामी सत्यानन्द कलकता

(प्रधान हिन्दु मिशन बंगाल)

ऋषि दयानन्द भारत के उन वीरों में से थे जिन्होंने 19वीं शताब्दी में इस्लाम व ईसाई लहर को बंद करके वैदिक धर्म को पुनः जीवन

प्रदान किया। वैदिक योग्यता, उत्तम आचरण और उत्कृष्ट जीवन से आप स्वामी शंकराचार्य जैसे सुधारक के समान थे। ऋषि दृष्टि से आप आर्य जाति के पतन के कारण जानते थे। इस लिए आप ने शुद्धि और संगठन का बीज आरोपण किया। आपकी शिक्षा का परिणाम अच्छा निकला और मृतक हिन्दु जाति पुनः जीवित हो गई। भारत के इतिहास में आपका नाम ऋषि और देशभक्त के रुप में सदा रहेगा। मेरा सिर वर्तमान काल के उन अद्वितीय ऋषि के चरणों में आदर और सत्कार के साथ झुक जाता है जो हिन्दु आन्दोलनों के जन्मदाता है।

80. श्री गणेश डी. सावरकर

(बैरिस्टर रत्नागिरि)

मैं स्वामी दयानन्द का दिल से आदर-सत्कार करता हूँ। वह वास्तव में एक ऋषि थे। उच्च कोटि के समाज सुधारक और जातिभक्त थे। उन लोगों को छोड़कर जिनका लक्ष्य जाति के साथ गद्दारी करना और कायरों की भांति असत्य के सामने झुकना एवं व्यर्थ बोलना है, जिन का लक्ष्य अपनी जाति को छोड़कर बाकी दुनिया की सभी जातियों का साथ देना है, जिन को निष्पक्ष राजनीति के बारे में कुछ ज्ञान नहीं है। हिन्दु दुनिया हमेशा स्वामी दयानन्द की कृतज्ञ रहेगी।

81. श्रीयुत एस.टी. शेषागिरि

(न्यायधीश उच्च न्यायालय मद्रास)

वर्तमान में किसी सुधारक ने भारत के दृष्टिकोण को इस प्रकार नहीं बदला जैसे कि स्वामी दयानन्द ने बदला है। यह उन का पश्चिम के बुद्धिजीवियों के साथ कठोर संघर्ष था जिस ने उन की आंखें खोल दीं और उनको भारत में धार्मिक ज्ञान के असीम भंडार का पता चला। भारत में और विदेश में अब जो वेदों का अध्ययन होता है वह स्वामी दयानन्द के कारण है। स्वामी जी ने हर कार्य में, जो उन्होंने

अपने हाथ में लिया, अपनी विद्वता और बुद्धिमता को दर्शाया क्योंकि उनमें आत्मविश्वास था। उन का जीवन पवित्र एवं सरल था। उनकी इच्छा थी कि भारत उस काल की ओर लौटे जब वह अपने ऋषियों के माध्यम से धार्मिक दुनिया पर छाया हुआ था जैसे कि हिन्दू धर्म में युगों से होता आया है। स्वामी दयानन्द का ज्ञान इन सिद्धांतों में शामिल है। लेकिन यह केवल स्वामी दयानन्द के कारण है कि पवित्र वेदवाणी को गंदगी से बाहर निकाला गया है। उस महर्षि के बिना यह कार्य असंभव था। यद्यपि वेदों को वह स्थान प्राप्त न हुआ जों ऋषिदयानन्द चाहते थे फिर भी उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी है यह सब स्वामी दयानन्द की लगन का परिणाम है।

भारत को ऐसे दृढ़ संकल्प वाले, अडिग, शक्ति शाली और ऊँचे विचारों वाले महापुरुषों की आवश्यकता है जो इस कार्य के आगे ले जाएं।

82. सर सीता राम एम.ए.

(अध्यक्ष विधान परिषद यू.पी.)

काफी समय से मैं सनातन धर्मी विचारधारा को लिए हुए और स्वामी दयानन्द सरस्वती का सम्मान करते हुए भी इसे अच्छा नहीं समझता था कि स्वामी जी के अनुयायी और भक्त उन्हें ऋषि कहें, मैं इस तथ्य को भी नहीं समझता था कि स्वामी जी किस प्रकार ऋषि के योग्य है। कुछ वर्षों से जैसे-जैसे मैं स्वामी जी की विद्वता और विचारों पर ध्यान देता हूँ तो उनको भविष्य वक्ता के रुप में देखता हूँ। अब कई वर्षों से मुझे यह पूर्ण विश्वास हो गया है कि स्वामी जी उच्च कोटि के ऋषि हैं।

स्वामी दयानन्द विद्वान, बुद्धिमान, तत्वज्ञानी और प्रभावशाली वक्ता थे। निसन्देह स्वामी जी की आत्मा पवित्र और बलवान थी। उनका चरित्र बढ़िया तथा विचार उत्तम थे। ऋषि दयानन्द में ईश्वर की जीती जागती कला थी। इस कारण वह सम्मान एवं पूजा के पात्र है।

83. सर राजा रामपाल सिंह

(सदस्य कौंसिल ऑफ स्टेट्स)

ऋषि दयानन्द ने अनुभव किया कि हिन्दु जाति के युवक दूसरे धर्म के बनावटी जवाहरात की ओर आकर्षित हो रहे है। इनको पता नहीं कि असली जवाहरात तो वेदों में निहित है। सत्य यह है कि ऋषि दयानन्द ने अज्ञानता के पर्दे को ज्ञान और बुद्धिमता की शक्ति से हटा दिया। और यह प्रकाश फैला दिया कि हिन्दू धर्म सत्य पर आधारित है। स्वामी जी ने जो उपदेश 50 वर्ष पूर्व दिया था आज दुनिया उस की ओर स्वयं जा रही है। शुद्धि, अछूतोद्धार एवं महिला शिक्षा का उपदेश सब से पहले स्वामी जी ने दिया। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि ऋषि बोध उत्सव हर्ष-उल्लास के साथ मनाएं ताकि ऋषि की पवित्र याद हमारे दिलों में ताजा रहें।

84. श्री युत पंडित नीलकंठ दास शास्त्री

(सदस्य विधानसभा)

ऋषि दयानन्द पर न केवल भारत बल्कि सारे विश्व को मान करना चाहिए। वर्तमान में जब लोगों की भीड़ को देखता हूँ तो प्रसन्नता होती हैं, क्योंकि ऋषि दयानन्द ने वह महान कार्य किए हैं जिनके कारण उनका जितना सम्मान किया जाए कम है। ऋषि के साहित्य ने मुझ पर ऐसा प्रभाव डाला है कि मैं यह समझता हूँ कि ऋषि में असाधारण आत्मिक शक्ति थी और उत्तम आचरण के साथ उनकी बौद्धिक शक्ति उत्कृष्ट थी। ऋषि से पूर्व भी कुछ महानुभाव हुए हैं लेकिन ऋषि दयानन्द ने जो कार्य किया वह उनसे कहीं अधिक शानदार है। महात्मा बुद्ध ने केवल आत्मिक शक्ति पर बल करने का उपदेश दिया। इसी प्रकार हजरत ईसा ने आत्म-त्याग पर पर दुनिया को चलाने का प्रयत्न किया। फिर जब हज़रत मौहम्मद पैदा हुए तो उन्होंने दुनिया में एक ईश्वर का उपदेश दिया। इसलिए इन पथ-प्रदर्शन करने वालों की शिक्षा अधूरी एवं अपूर्ण थी। ऋषि दयानन्द ने इस त्रुटि को पूरा किया। तीनों

बातों को मिलाकर एक साथ प्रचार किया। यह ऋषि की बड़ाई थी। ऋषि यदि चाहते तो बुद्ध एवं ईसा की भांति नया धर्म चला सकते थे लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। यह उनका बड़प्पन था।

85. पंडित इक़बाल नारायण घरटू एम.ए.

(भूतपूर्व सचिव थियोसोफिकल सोसाईटी बनारस)

यादगारे जमाना है ये लोग,
याद रखना, फसाना हैं ये लोग।

भारत की 19वीं सदी के इतिहास में दयानन्द का नाम उन महानुभावों की सूची में कायम रहेगा जिनका जन्म समय समय पर आवश्यकता के अनुसार किसी विशेष कार्य को करने के लिए प्रभु की इच्छानुसार होता आया है। स्वामी जी ने दूसरे धर्मों के विचारों की सहायता के बिना हिन्दु धर्म में एक बड़ा परिवर्तन किया जिस के फलस्वरुप हिन्दुओं के दिलों में अपने धर्म के प्रति सम्मान बढ़ गया और उनको विदित हुआ कि हिन्दु एक मृतक शव नहीं अपितु नई आशाओं की फुलवारी है। यह एक बड़ी सेवा थी जो स्वामी जी ने हिन्दुओं के लिए की।

86. प्रोफेसर जितेन्द्र लाल बैनर्जी, कलकता

गत शताब्दी में गुजरात ने भारत को दो महापुरुष दिए। एक दयानन्द एवं दूसरा गांधी। दयानन्द आजीवन अज्ञान, अन्धकार और रीति-रिवाजों से संघर्ष करते रहे। उन्होंने हिन्दु धर्म को शक्तिशाली बनाया। उनका उपदेश था कि भारतवासी शक्तिशाली बनें जिसके लिए उन्होंने व्यक्तिगत, राजनीतिक और सामाजिक स्वतन्त्रता की शिक्षा दी।

87. श्री जी.के. दियोधर एम.ए.

(सचिव सरवेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी पूना)

मैं महर्षि दयानन्द को भारत के नवनिर्माण करने वाले नेताओं में से पहली पंक्ति का नेता मानता हूँ। एक विशेष बात जिस के लिए

मैं उनका सम्मान करता हूं वह यह है कि उन्होंने कहा कि भारत की आधारशिला दो बातों पर होनी चाहिए। एक धर्म के प्रति निष्ठा और दूसरा समाज सुधार। यह दोनों कार्य साथ साथ करने चाहिए। भारत के नवनिर्माण करने वालों में मैं स्वामी दयानन्द को राजाराम मोहन राय, न्यायमूर्ति रानाडे, श्री दादा भाई नारौजी जैसे बड़े-बड़े राजनीतिक नेताओं की पहली पंक्ति में खड़ा करता हूँ। जो सराहनीय कार्य उन्होंने उत्तरी भारत में किया है उसके लिए मेरे हृदय में उनके प्रति अगाध श्रद्धा है।

88. पंडित वेंक्टेश नारायण तिवारी

(एम.ए. इलाहाबाद)

जितने समय तक परमपूज्य महात्मा स्वामी जी इस देश के कार्यक्षेत्र में रहे उसमें उन्होंने देश में एक अनुपम शक्ति प्रवाहित की जिसके अमृत जल को पीकर प्यासी आत्माएं वर्षों तक तृप्त रहेंगी। मैं स्वामी दयानन्द जी को राजाराम मोहन राय, न्यायमूर्ति गोविन्द रानाडे और दादा भाई नारोजी के साथ गिनता हूँ जो भारत के नव-निर्माण के चार मुख्य नेता हैं। इन चारों के कारण देश की उन्नति का आरम्भ हुआ। परन्तु स्वामी जी ने राष्ट्रजीवन में एक अद्‌भुत शक्ति का बीज आरोपण किया जो दूसरों के प्रयत्नों में विद्यमान नहीं था। वह शक्ति आत्मविश्वास और देश गौरव के विचारों को जगाने की थी। स्वामी जी की सिंह गर्जना से शमशान भूमि के मृतक जीवित हो गए। और निर्जीव अस्थियों में, वर्षों के आक्रमणों के पश्चात्, वीरता एवं बल का पुनः अविष्कार हुआ।

89. पंडित हृदय नाथ कुंजरु

(सदस्य विधानसभा)

दुनिया में कोई वस्तु स्थिर नहीं रहती। इसी प्रकार सम्प्रदायों में परिवर्तन होता रहता है। हिन्दू धर्म में बहुत निर्बलता आ गई थी। ऋषि दयानन्द ने इस निर्बलता को दूर करके हिन्दू जाति के शरीर में एक

नई चेतना पैदा कर दी। ऋषि दयानन्द ने उस समय कार्य का आरम्भ किया जब राजनीति के आंदोलन का विचार भी नहीं पनपा था। वर्त्तमान में छोटी जातियों को ऊँचा उठाने का कार्य सरल प्रतीत होता है। परन्तु जरा सोचिए 40 वर्ष पूर्व का समय, जिन लोगों ने उस समय कार्य को आरम्भ किया, उन की धर्म के प्रति कितनी निष्ठा रही होगी। महिलाओं की हालत ऋषि दयानन्द के आने से पूर्व एक जूती के समान थी। महर्षि ने कहा वेदों के ज्ञान का अधिकार महिलाओं को भी हमारे समान हैं। हिन्दू जाति के अनाथों को बचाने का विचार ऋषि दयानन्द की देन है। इस प्रकार ऋषि दयानन्द ने सारी हिन्दू जाति पर उपकार किया।

90. सी.पी. रंगाआयर

(सदस्य विधानसभा मद्रास)

ऋषि विश्वभर के महान पुरुषों में से थे। उनकी पदवी ऋषि से बढ़कर थी। वह महर्षि थे। मैं इस से भी आगे जाता हूँ और इन्हें ब्रह्म ऋषि कहता हूँ। मेरी राय में वह वशिष्ठ और विश्वामित्र के समान थे। दयानन्द वेदों के खजाने को हमारे द्वारों पर लाए और बड़ी शक्ति से वेदों के उत्कृष्ट विचारों को लोगों के सामने रखा। ऐसा करना महर्षि का ही कार्य था। दयानन्द का ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जीवन में धार्मिक निधि है। जो वेदों की चाबी है। जो लोग बहक रहे हैं और स्वराज्य, स्वतन्त्रता के हवाई किले बनाते हैं वह सत्यार्थ प्रकाश, जो स्वराज्य की कुंजी है को पढ़ें और समझें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि हमारी जाति सत्यार्थ प्रकाश में दर्शाए ज्ञान का अनुकरण करें तो दुनिया की कोई शक्ति स्वतन्त्रता को रोक नहीं सकती।

(आर्य मित्र)

91. बाबू पुरुषोत्तम दास टन्डन एम.ए.

(एल.एल.बी. इलाहाबाद)

स्वामी दयानन्द वर्तमान काल के उन चंद महात्माओं में से हैं। जिन्होंने देश के बारे विचार करने और इस को उन्नत करने के नियमों

को अपने सम्मुख रखा। अंग्रेजी भाषा की बढ़ रही लहर को रोकने के लिए उन्होंने अपने देश की राष्ट्रभाषा की आवश्यकता को जाना। इसीलिए आर्य समाज के हर सदस्य के लिए राष्ट्र भाषा अर्थात हिन्दी का जानना अनिवार्य बनाया। स्वामी जी ने अपनी लेखनी के बारे में कहा है कि "मेरी पुस्तकों का अनुवाद भारतवर्ष की भिन्न-भिन्न भाषाओं में न करें अपितु यह अनिवार्य है कि वह आर्यभाषा हिन्दी सीख कर अध्ययन करें। मेरी मातृ भाषा गुजराती थी। लेकिन मैंने आर्य भाषा हिन्दी की उन्नति के लिए हिन्दी में लिखना जरुरी समझा। सब भारतीयों को चाहिए कि वह आर्य भाषा को उन्नत करें। आर्य समाज के नेताओं और भारत के कुल नेताओं से मेरी प्रार्थना है कि इस बड़े नियम को अपने सम्मुख रखें और अपने राष्ट्र के कार्यों में इस का प्रयोग करें। मैं इसमें कठिनाई अनुभव करता हूँ लेकिन मुझे विश्वास है कि प्रयत्न, राष्ट्रीयता और कुर्बानी को ध्यान में रखकर इस समस्या का समाधान हो जाएगा। इस को अपना कर स्वराज्य का मौलिक लक्ष्य (मूलमंत्र) हमारी पकड़ में आ जाएगा।"

92. लाला दुनीचंद वकील अम्बाला

स्वामी दयानन्द एक ऐसे उच्च कोटि के प्रचारक थे कि इनके आगमन से स्वतन्त्रता अपने आप मिल जाती। मनुष्य आचरण और धर्म से ऊँचा उठ जाता है। सत्यार्थप्रकाश उनकी शिक्षा का दर्पण है। आजकल के राजनीतिक संघर्ष में हर हिन्दू, मुसलमान, इसाई और यहुदी को सत्यार्थप्रकाश का छटा सम्मुल्लास पढ़ना चाहिए। इससे विदित होगा कि स्वामी जी महाराज के स्वराज्य की महानता क्या है। उनकी पद्धति के अनुसार राजा मंत्री, शिक्षा विभाग और उसके सदस्य विधानसभा और कानून से सम्बन्धित सभी सदस्यों को जनता निर्वाचित करे। यह योजना योरुप के उत्तम से उत्तम स्वराज्य एवं असाम्प्रदायिक जातियों की योजना से अति उत्तम हैं।

93. डॉ. गोकुल चंद नारंग

(भूतपूर्व प्रोफेसर दयानन्द कॉलिज लाहौर वर्तमान मंत्री पंजाब)

मैं स्वामी दयानन्द जी की शारीरिक शक्ति और बल का इतना प्रशंसक हूँ जितना उनकी विद्वता एवं उत्तम विचारों का। स्वामी जी जैसे कई विद्वान भारत में हुए हैं परन्तु उनका शरीर इतना बलवान नहीं था जितना स्वामी जी का और उन्होंने शारीरिक उन्नति के लक्ष्य को जानकर इस पर इतना बल दिया हो और प्रयत्न किया हो जितना स्वामी जी ने फलस्वरुप वह जहां आत्मिक शक्ति और बुद्धि के कारण उस समय के योग्य विद्वान थे वहाँ वह शारीरिक शक्ति में भी दूसरे पढ़े लिखे लोगों में अधिक बलशाली थे। मुझे तो स्वामी जी का सुडौल शरीर एक पुस्तक प्रतीत होता है जिस से भारतवासी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

94. महामहिम सायाजी गायकवाड़ बड़ौदा

सामाजिक सुधार के क्षेत्र में आर्य समाज ने ब्रह्म समाज की अपेक्षा इतना अच्छा कार्य किया है कि जिस की प्रशंसा के लिए शब्द नहीं। आर्य समाज का संस्थापक स्वामी दयानन्द अपने काल का एक उत्कृष्ट पुरुष था जिसकी योग्यता उच्च कोटि की थी। उसकी विद्वता को विदेशी लोगों ने भी स्वीकार किया है।

(बम्बई में उपदेश 1907)

भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के नेताओं के विचार

95. महामहोपाध्याय पंडित शिवकुमार शास्त्री, बनारस

(सनातनधर्मी)

इस कलियुग में वेद वाणी का उद्धार स्वामी दयानन्द ने ही किया है।

(आर्य डायरेक्टरी 1928)

96. प्रसिद्ध सनातन धर्मी नेता पंडित दीनदयाल जी

(व्याख्यान वाचस्पति झज्जर)

मैं जहाँ स्वामी दयानन्द का चित्र देखता हूँ उसके सामने सिर झुका देता हूँ।

(वन्दे मातरम्)

97. स्वर्गीय पंडित सत्याव्रत

(साम आश्रमी उपदेशक कलकता सोसायटी)

मैं 40 वर्ष पश्चात् जम्मु कश्मीर गया था। मैंने बिहार, यूपी और पंजाब के हालात को देखा। स्वामी दयानन्द जी के प्रभाव और आर्यसमाज के कारण बहुत परिवर्तन हुआ है। अब वेदों के बिना कोई बात नहीं करता। हर एक बात में वेदों का प्रमाण माँगा जाता है। निसन्देह स्वामी दयानन्द वर्तमान काल के आचार्य हैं। धार्मिक मतभेद के होते हुये भी हम स्पष्ट मानते हैं कि उन्होंने एक युग की आधारशिला रखी है। ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'' में लिखे 46 विषयों को हम उचित समझते हैं।

98. कविराज भोलेनाथ शास्त्री

(वैयाकरण आचार्य वेदान्त विशारद विश्वनाथ संस्कृत कॉलिज कलकत्ता)

जब मुसलमान और इसाईयों की संख्या बढ़ने लगी तो पढ़े लिखे लोग विदेशी चमक दमक के जाल में फंस कर उन की ओर पग बढ़ाने लगे। ब्राह्मणों पर से लोगों की श्रद्धा उठने लगी, मन्दिरों का अपमान होने लगा। तब दयानन्द ने आकर वेदों का प्रचार किया। जिस से भोले भाले लोग हिन्दु धर्म में मिलकर धार्मिक सदस्य बनने लगे। यदि स्वामी जी न आते तो भारतवर्ष में हिन्दुओं के होते हुए भी वेद शब्द रह पाता इस में सन्देह है। मेरी राजनीतिक दृष्टि में महत्मा गांधी आदि नेताओं से स्वामी दयानन्द की पदवी ऊँची है। *यदि ऋषि दयानन्द ने भारत को आर्यों की जन्मभूमि न कहा होता तो इनको स्वराज्य का अधिकार ही न होता।*

99. लाला हरदयाल नाग (चान्दपुर बंगाल)

(सदस्य विधानसभा)

स्वामी दयानन्द वर्तमान काल में सब से बड़ा गोरक्षक हुआ है। स्वामी जी का गाय के प्रति इतना सम्मान था कि गोरक्षा के लिए अलग से एक पुस्तक *"गो करुणा निधि"* लिखी जिसमें आर्थिक दृष्टि से गो की रक्षा पर बल दिया और गाय की उपयोगिता का वर्णन किया। स्वामी जी के अनुयायियों में भी गाय के प्रति वही श्रद्धा है जो इन के गुरु दयानन्द के दिल में थी। जिन कारणों से मैं उनका सम्मान करता हूँ उनमें गाय रक्षा का कार्य एक हैं।

100. पंडित निकछेदा राम जी शास्त्री

हम स्वामी जी को हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं उनका तप एवं ब्रह्मचर्य बल सैंकड़ों मुख से प्रशंसा के योग्य है।

101. स्वामी मुकन्दानन्द

(प्रसिद्ध काश्मीरी दण्डी सन्यासी)

हमारे ही वर्ग के दयानन्द ने वह कार्य किया जो शंकराचार्य जी भी न कर सके। स्वामी शंकराचार्य को राजसिन्धवा का बल था उन्होंने वेदों को निष्कलंक करने का कोई प्रयत्न नहीं किया। दयानन्द ने वेदों को निष्कलंक कर डाला।

102 पंडित गुरुदत्त एम.ए.

(प्रोफेसर राजकीय कॉलिज लाहौर)

'संस्कृत एवं विज्ञान का विद्वान'

आश्चर्य की बात है कि पाश्चात्य सभ्यता के जाने बिना और अंग्रेजी से दूर होने पर भी केवल वेदज्ञान के बल पर इस महापुरुष स्वामी दयानन्द जी ने कितना अति उत्कृष्ट कार्य किया। यदि स्वामी जी अंग्रेजी जानते होते तो हम यह समझते कि यह सब अंग्रेजी भाषा के कारण है।

सत्यार्थ प्रकाश को मैंने अपनी आयु में 14 बार पढ़ा। जैसे-जैसे इसे पढ़ा मेरी विद्वता में, जानकारी में, मेरे ज्ञान में बढ़ोतरी होती गई। मुझे नित्य नये ज्ञान का आभास हुआ।

103. श्री जी.के. रुद्र एम.ए.

(प्रिंसीपल सेन्ट स्टीफन कॉलिज दिल्ली)

वर्तमान भारत में वेदों के पुराने काल को नवजीवन प्रदान करने की दयानन्द के अन्दर एक ज्वाला प्रज्जवलित थी। वह एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में गया। वेदों से सम्बन्ध रखने वाली पंजाब की धरती ने उस के संदेश को अपनाया। वह संदेश था *"वेदों की ओर लौटो"।* आज हम देख रहे हैं कि शिक्षित पंजाब आर्य समाज के कार्यों का परिणाम है। इसमें मूर्त्ति पूजा नहीं। यह अज्ञान, अविद्या से मुक्त है। जिन्होंने पचास वर्षों में भारतीयों की भ्रान्तियों को देखा है उनको स्वामी जी की आवाज का जादू दिखाई देगा और किसी बात के लिए न सही वर्तमान भारत में होने वाली उन्नति में पुरातन संस्कृति की सुरक्षा के लिए हम उनका सम्मान करते हैं। भारत वर्ष का भविष्य उसकी दृष्टि में है। जो जातियों की किस्मत को जानता है लेकिन स्वामी दयानन्द ने भारत के इतिहास में उत्तम कार्य किया है और भारत को सत्य और शुद्ध आत्म ज्ञान का उपदेश दिया है और आगे आने वाली पीढ़ी को ऊँचा उठाने का पवित्र और अलौकिक कार्य किया है।

(आर्य गजट)

104. राय बहादुर पंडित शिव नारायण

(शमीम) जालन्धर (बुद्ध धर्म का अनुयायी)

मुझे जालन्धर में पहली बार दयानन्द सरस्वती के दर्शन हुए थे। उनके उपदेश सुनने का अवसर प्राप्त हुआ था। हमने उनके उपदेशों की महानता को समझा नहीं इसलिए सराहना नहीं की। हमको इतना आवश्य विदित हुआ कि यह व्यक्ति निडर है और इस स्पष्टवादी को

दुनिया में किसी की परवाह नहीं चाहे कोई नाराज भी क्यों न हो। ज्ञान इतना था कि जालन्धर जैसे नगर में क्या बड़े-बड़े नगरों में कोई संस्कृत का विद्वान उसके सम्मुख नहीं आता था। प्रसन्नता है कि समाज को दिनों-दिन सफलता मिल रही है। यह यू.पी. में भी अपना प्रभुत्व जमा रहा है। बंगाल में भी इस के कार्य की चर्चा है और प्रान्तों में भी इस का ध्वज गड़ रहा है। संस्कृत की शिक्षा फैलायी है। शुद्धि का कार्य आरम्भ किया है। हिन्दु संगठन में भी अत्यधिक इसका ही हाथ है। हिन्दु जाति को मिलजुल कर रहना सिखा रहा है। यह कहना चाहिए कि इस समय यह एक बड़ी शक्ति है। यद्यपि शमीम विरोधी हो कर बुद्ध धर्म का अनुयायी हो गया, फिर भी सदा आर्य समाज का सेवक बना रहा। अब दयानन्द सरस्वती के कार्यों को इतना सराहा जाता है कि अब वह श्री महात्मा स्वामी दयानन्द जी कहलाते है। दयानन्द का शिवरात्रि की रात को घर छोड़ना हिन्दु जाति के लिए शुभ है।

105. श्री लाला शिवव्रत लाल जी वर्मन एम.ए.

(लेखक, सम्पादक, राधास्वामी मत का नेता)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती बड़े बुद्धिमान, समझदार, सुलझे हुए नेता थे। वह दूरदर्शी, बुद्धिजीवी थे। वह समुंद्र तुल्य थे। वायु के कारण जो ज्वार भाटा की लहरें उठती है उनका उन पर कोई प्रभाव न था। एक रस, शान्तचित, शक्ति, बल, ओज, निडरता उनमें कूट-कूट कर भरी थी। वह ऐसे पुरुष थे जिनकी महानता को लोगों ने नहीं जाना। उनका अपमान किया। लेकिन वह दिन निकट आ रहा है जब आने वाली पीढ़ी के युवक जान लेंगे कि वह एक महान पुरुष था। वह हिन्दु जाति के सम्मान या अपमान का पात्र था। यदि वह लोग जिन्होंने उनका अपमान किया जीवित रहे तो वह प्रायश्चित करेंगे कि उन्होंने दयानन्द को जानने में भूल की और बिना सूझबूझ उनका अपमान किया। वह एक बुद्धिमान, विद्वान जाति भक्त एवं देशभक्त थे।

106. लाला काशीराम

(प्रधान ब्रह्मसमाज पंजाब)

निसन्देह स्वामी दयानन्द संस्कृत के बड़े विद्वान थे। उन्होंने आर्यावर्त के ऋषियों, महर्षियों और वेदों की अमूल्य निधि को हमारे समक्ष इस प्रकार रखा कि अब यह भूमि में गड़ा हुआ खजाना नहीं रहा। विशेष तौर पर पंजाब और भारत के दूसरे प्रान्तों में वेदों के पढने, पढ़ाने, सुनने सुनाने का कार्य घर घर हो रहा है। स्वामी जी में राष्ट्र भक्ति और अपनी सोई हुई जाति को जगाने का असीम जोश था। इस के लिए उन्होंने भरसक प्रयत्न किया। समाज सुधार का हामी मूर्त्ति पूजा और अज्ञानता का विरोधी इस युग में विरला ही होगा। जैसे वह शरीर से बलशाली थे वैसे ही दृढ़ संकल्प वाले थे। जिस शक्ति और वीरता से वह अपने धार्मिक विचारों को प्रस्तुत करते थे वह उच्च नेताओं और महान पुरुषों के समान था। वह सत्य के प्रचार और झूठ के नाश में मित्र या शत्रु की नाराजगी की परवाह नहीं करते थे। *स्वामी जी बाल विवाह के विरुद्ध थे। ब्रह्मचर्य और शुद्धचरित्र के उदाहरण थे। समाज सुधारक के प्रतीक, मूर्त्ति पूजा और पोप पूजा के वैरी थे। संस्कृत के विद्वान और दीवाने थे। सोई जाति को जगाने और संगठित करने के कारण नहीं बल्कि निराकार, निर्विकार, सर्वाधार एक परमेश्वर के पुजारी और उपासक थे।* आर्य समाज के संस्थापक होने के कारण वह हम सबकी ओर से सम्मान और हार्दिक प्रशंसा के हकदार हैं।

107. सर योगिन्द्र सिंह

(शिक्षा मंत्री पंजाब)

स्वामी दयानन्द ने एक ही दृष्टि में आर्यावर्त्त को स्वतन्त्रता दिलाने का प्रयत्न किया। फिर जब चारों ओर देखा तो देश को कड़ी जंजीरों में जकड़ा पाया। आत्मिक शक्ति ने स्वतन्त्रता की तड़प पैदा की। वेद मंत्रों का उच्चारण किया। हिन्दू जाति को पुनः आत्मज्ञान का स्मरण कराया। जाति-पाति एवं अन्य अज्ञानता के बंधनों से मुक्त कराकर स्वतन्त्रता

का उपदेश दिया। परिणामस्वरुप आज का पंजाब 50 वर्ष के पूर्व के पंजाब से भिन्न है।

108. सरदार रुप सिंह जी

(भूतपर्व सहायक आयुक्त पंजाब)

मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्वामी दयानन्द जी महाराज एक सिद्ध योगी थे। सिक्खों की यह आम शिकायत है कि उन्होंने गुरुनानक देव जी के बारे में लिखा है कि ....

यह कार्यवाही एक गुलाब सिंह दासीएसिक्ख की थी जिसने श्री स्वामी जी को गलत सूचना देकर इस प्रकार गलत शब्द लिखवाए। वह ऐसे सत्य के पुजारी थे कि यदि हम लोगों को अवसर प्राप्त होता तो हम उनको वास्तविकता से अवगत कराकर संशोधन करने को कहते तो वह सत्य को तुरंत जान लेते। परन्तु दुख है कि उनका देहान्त हो गया।

(प्रकाश लाहौर)

109. सर डॉ. देवप्रसाद

सर्व अधिकारी एम.ए., एल.एल.डी.

(भूतपूर्व वाइस चांसलर कलकत्ता विश्वविद्यालय)

स्वामी दयानन्द जी एक महान आत्मा थे। मैं उनको कई बार मिला जब वह कलकता पधारे। आप अत्यन्त सरल और स्पष्ट हिन्दी भाषा में उपदेश करते थे। सभी युवक और वृद्ध उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण चुम्बक की भांति खिंचे आते थे। आपका कद लम्बा एवं शरीर बलशाली था। आकृति से स्नेह एवं प्यार टपकता था। आप ब्रह्मचारियों की भांति गेरुए रंग की पोशाक पहनते थे। आपकी आकृति मनमोहक थी। आवाज ऊँची और गूंजने वाली थी। फिर भी अत्यन्त मधुर थी। जो नाराज करने वाली या उकसाने वाली लगती नहीं थी। उपदेश सरल स्पष्ट बिना रुकावट युक्ति युक्त होता था।

वह सत्य को बलपूर्वक कहते थे। बहुत संख्या में लोग उनके समारोह में आते थे। कई संतुष्ट होते लेकिन कई लोगों का विश्वास डगमगा जाता और वह झगड़ते। स्वामी जी वाद-विवाद में रुचि रखते थे। देखने वाला दृश्य होता था। स्वामी जी ने ऐसे लोगों को उपदेश दिया जो सत्य को जानने के इच्छुक थे परंतु उनकी मानसिक अवस्था ऐसी नहीं थी कि वह उनके विचारों को मान लें लेकिन देश के युवकों के भीतर एक विशेष धारणा कार्य कर रही थी यह धारणा देश में फैली हुई न होती तो परमात्मा राम, कृष्ण, राम मोहन राय, विवेकानन्द, दयानन्द जैसे लोगों को अनुयायी बनाने वाले बोझ को उठाने के लिए पैदा न करता। स्वामी दयानन्द ने इस बोझ को सहर्ष उठाया। *स्वामी दयानन्द एक उच्च कोटि के महात्मा थे जिसकी इस गिरे हुए, हीन और आलसी देश को बहुत आवश्यकता थी।*

110. मुन्शी कन्हैयालाल

(अलखधारी लुधियाना)

ए... देखिए पंडित मुकन्दराम जी एक जो सत्यप्रिय समाचार पत्र लाहौर के संपादक हैं। उनकी कैसी प्रशंसा करते हैं। तुम लोग मेरे और नेक राह बनाने वाले लोगों के शत्रु हो, लेकिन हम लोग आपके वैरी नहीं है। हम लोग विधवाओं को पुरुष एवं गधों को मनुष्य बनाने वाले हैं। भारत की अच्छाई चाहते हैं। सुनों स्वामी जी की मन्त्रणा और भर्त्सना करो उनकी जो आप को एक ईश्वर सच्चिदानन्द की बजाए दूसरों को पूजने के लिए कहते है। गोबर के सिवाए मत दो उनको खाने को।

(सत्य प्रकाश सभा लाहौर 24 मई 1877)

111. महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर

(रविन्द्रनाथ टैगोर के दादा) (ब्रह्म समाज)

कलकत्ता में स्वामी जी का बाबू केशव चन्द्र सैन से, आवागमन पर शास्त्रार्थ हुआ। विचारों में अंतर होने के बावजूद बाबू जी स्वामी जी

का बड़ा सत्कार करते थे। 9 जनवरी 1873 को अपने घर स्वामी जी का उपदेश कराया। विषय था *''वैदिक धर्म की महानता''* इस उपदेश में नगर के बहुत बुद्धिजीवी एवं धनाढ्य शामिल हुए। इन्हीं दिनों ब्रह्म समाज का वार्षिक उत्सव हुआ। महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी गाड़ी भेजकर स्वामी जी को आने का निमन्त्रण दिया। बड़े मान-सम्मान के साथ सत्कार किया। महर्षि आपको एक दिन अपने मकान पर ले गए। वहाँ वह वेदि के चारों ओर मन्त्र लिखे हुए देख बड़े प्रसन्न हुए। महर्षि देवेन्द्र नाथ ने आप को अपने मकान पर रहने के लिए कहा परन्तु आपका उत्तर था *''गृहस्थियों के मकान में रहना मैं पसन्द नहीं करता''* कहते हैं कि बाबू केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी के अंग्रेजी भाषा न जानने पर खेद प्रकट किया। वेदों के विद्वान अंग्रेजी जानते तो इंगलिस्तान जाने के लिए मेरे मन पसन्द साथी होते। स्वामी जी ने कहा कि मुझे भी ब्रह्म समाज के नेताओं पर संस्कृत न जानने पर वैसा ही खेद है क्योंकि वह भारत के लोगों को ऐसी भाषा का धर्म सिखाने को कहते हैं जो उन को स्वयं नहीं आती।

112. विश्वविख्यात लाला दिवान चन्द एम.ए.

(वायस चांसलर आगरा विश्वविद्यालय)

(प्रिंसीपल दयानन्द कॉलेज कानपुर)

आर्य जाति के नवजीवन का कारण स्वामी दयानन्द हैं। स्वामी दयानन्द के जीवन में विशेष गुण यह था कि वह परमात्मा की कृपा मांगते थे। धार्मिक जीवन का रहस्य यही है और यह रहस्य स्वामी जी में स्पष्ट तौर पर विद्यमान था। उनकी सहानुभूति ऐसी थी कि कोई भी कुर्बानी ऐसी न थी जो वह दूसरों के लिए न कर सके। जो नियम उन्होंने अपने लिए निर्धारित किए उन पर जीवन भर अडिग रहे। किसी प्रकार का प्रलोभन यां भय उनको अपने स्थान से हिला न सका। यह बड़े गुण थे जिनके कारण वह नए आर्यावर्त्त के जन्म दाता बने।

113. राव बहादुर मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी

(भूतपूर्व इंसपैक्टर स्कूल बड़ौदा)

जिस प्रकार कोलम्बस ने दुनिया को अमरीका देश के दर्शन कराए उसी प्रकार महान योगी, परमतपस्वी महर्षि, पर-उपकारी दयानन्द ने वैदिक साहित्य के गुम हुए खज़ाने के दर्शन कराए और स्वयं उस समुद्र से रत्न निकाल-निकाल कर दिखाए। पाश्चात्य सभ्यता जिन जीवन मृत्यु के रहस्य को अब तक नहीं बता सकी ये रहस्य वैदिक धर्म में निहित है। वर्तमान एवं आने वाली पीढ़ियां परम तपस्वी दयानन्द के एहसान को कभी नहीं भूल सकेगी।

114. श्रीमती कस्तूरबाबाई जी

(धर्मपत्नी महात्मा गांधी)

स्वामी दयानन्द जी के जीवन में सत्य की खोज दिखाई देती है। वह केवल आर्य समाजियों के लिए नहीं बल्कि सारे विश्व के लिए सम्मान योग्य है।

115. श्रीमती विकास देवी जी

(सपुत्री देवगुरु भगवान देव समाज के संस्थापक)

मुझे बहुत प्रसन्नता होती है कि महर्षि दयानन्द ने पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं को भी उठाने और भलाई करने का पवित्र उत्तम कार्य किया। महर्षि के अंदर जो दया भावना थी वह उछल पड़ी। उसने महिलाओं की बुरी अवस्था देखकर दया की। इनमें एक विशेषता यह थी कि जब महिलाएं उनके पास आकर प्रार्थना करती कि महाराज उपदेश सुनाओं तो बाल ब्रह्मचारी तुरन्त उत्तर देते तुम्हारे पति देव तुम्हारे गुरु हैं। उनकी सेवा करो कभी साधु को गुरु न बनाना। तुम शिक्षा ग्रहण करो। अपने पति देवों को यहां भेजा करो और उनके द्वारा मेरे ज्ञान का लाभ उठाया करो। धन्य है वह जाति जिसके अंदर ऋषि दयानन्द की शिक्षा निहित है। धन्य है वह देश जिस के नागरिक अपने महर्षि का आदर सत्कार करते है।

116. पंडिता कौशल्या देवी जी

(प्रोफेसर क्वीनमैरीज कॉलिज लाहौर) धर्मपत्नी स्वर्गीय प्रोफेसर हश्मतराय राजकीय कॉलिज लाहौर

दयानन्द न केवल वेदों का विद्वान था बल्कि वर्तमान पश्चिमी ज्ञान का भी उसे पता था। यही कारण है कि आज के प्रश्नों के उत्तर वह कई वर्षों पूर्व देकर चला गया। माना कि बनारस में इस समय भी ऐसे पंडित मौजूद हैं जो वेदों के विद्वान कहे जा सकते है। लेकिन वह आधुनिक ज्ञान से परिचित न होने के कारण देश को लाभ नहीं पहुंचा सकते। ऋषि दयानन्द ब्रह्मचारी ही न था बल्कि सदियों से भूले बिसरे ब्रह्मचर्य आश्रम को नये सिरे से उजागर करने वाला देश में केवल एक ही था।

117. शहीद पंडित लेखराम

(प्रसिद्ध लेखक)

स्वामी जी भारत वर्ष की आंखे खोलकर इसमें नेत्र अंजन डाल गये हैं जिससे अब भारत वर्ष अज्ञानता की नींद में नहीं पड़ेगा।

118. स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

स्वामी जी ने अंधी श्रद्धा के युग में ज्ञान और तर्क से अनगिनत विचारों का वर्णन किया है। जिससे दुनिया चकित है।

119. पंडित गणपति जी शर्मा

1906 में श्रीनगर कश्मीर में राजा प्रताप सिंह की अध्यक्षता में एक शास्त्रार्थ संस्कृत भाषा में हुआ। एक अंग्रेज पादरी बनारस से आया। भरे दरबार में संस्कृत में बोलना आरंभ किया और हिन्दू धर्म की कठोर समालोचना की। किसी सनातनधर्मी पंडित में साहस न हुआ कि उसका उत्तर दे सके। भक्त नारायण दास जी एम.ए. गवर्नर जम्मु के अनुरोध पर राजा जी ने पंडित गणपति जी शर्मा को बोलने की आज्ञा दी कि

पादरी जी की समालोचना का दरबार में खड़े होकर उत्तर देवें। इस पर पंडित जी ने पादरी की इस प्रकार खबर ली और वह स्थान छोड़कर चला गया और हिन्दी में बोलना आरम्भ कर दिया। राजा जी ने पंडित जी का सम्मान किया और पुरस्कृत किया 'एक राय'।

जैसे कुमारल भट्ट ने एक उत्कृष्ट कार्य किया था वैसे ही इस विज्ञान के युग में स्वामी दयानन्द ने किया है।

120. प्रोफेसर शिवपाद सुंदरम

(बी.ए. विक्टोरिया कॉलिज जाफना श्री लंका)

स्वामी दयानन्द ने पंजाब को वस्तुतः पुण्य भूमि बना दिया है। मेरी जन्म भूमि धर्म से रिक्त है। धर्म से लोग अनभिज्ञ हैं। मैं नहीं जानता इस देश में धर्म की स्थापना कब होगी। इस धरती पर एक दयानन्द को जन्म लेना चाहिए।

121. पंडित तारानाथ

(तर्क वाचस्पति भट्टाचार्य कलकत्ता)

आश्चर्य है कि जब हम ने स्वामी दयानन्द जी महाराज से प्रश्न किए तो अनुमान था कि दुनिया में कोई उत्तर देने वाला नहीं है। लेकिन उन्होंने तुरन्त उत्तर दे दिए।

(स्वामी दयानन्द की जीवनी)

122. श्री एंटी गडवानी

(आचार्य प्रेम महाविद्यालय वृन्दावन)

भारतवर्ष के उच्चकोटि के नेताओं में ऋषि दयानन्द का नाम विशेष तौर पर उल्लेख करने योग्य है। दृढ़ आत्मविश्वास और धैर्य उनका मूलमंत्र था। सूर्य किरणों से प्रकाशित होकर उन्होंने ना तो घर को देखा, न सुख की चिंता की, सत्य की खोज में बहुत कष्ट उठाए लेकिन हिन्दु धर्म को पुनः जीवित करने के लिए संघर्ष किया। उसका

परिणाम आज हम अपनी आंखों से देख रहे है। ऋषि दयानन्द परिवर्तन लाना चाहते थे। वह भारत की वैदिक संस्कृति को फैलाने के लिए प्रयत्न करते रहे।

123. श्री प्रिंस नरेन्द्र शमशेर जंग

(राणा बहादुर नेपाल)

महाभारत के युद्ध के पश्चात हिन्दु जाति पर जो दिन प्रतिदिन आक्रमण हुए उनसे जाति खाई में गिर चुकी थी। जिसके बचने की आशा नहीं थी। लेकिन परमात्मा की अद्‌भुत लीला है। वह हमेशा भक्तों की परीक्षा लेते हैं जब लोग अपने धर्म को छोड़कर अधर्मी होते चले जा रहे थे हिन्दु धर्म का सहायी कोई न था। ऐसे समय परमपिता परमात्मा ने अपने नियमानुसार सपुत्र बाल ब्रह्मचारी दयानन्द को भेजा। उन्होंने हिन्दु जाति को अधर्मी होने से बचाया। भूले हुए भाईयों को वापिस लाने का रास्ता दिखाया। जिसके फलस्वरुप हिन्दु जाति कायम है और शक्तिशाली नजर आती है। इसके लिए स्वामी दयानन्द को धन्यवाद देना चाहिए जिसने हमारा मार्ग-दर्शन किया।

124. हिज हाईनैस महाराजा हीरा सिंह, नाभा

गुरुकुल कांगडी के पुस्तकालय में महर्षि दयानन्द का चित्र देखकर महाराज जी पर विशेष प्रभाव पड़ा और ठंडी आह भरी और जो शब्द कहे उनसे प्रतीत होता है कि ऋषि दयानन्द ने देश के उद्धार के लिए जो कष्ट उठाए उनको वह भलीभांति जानते थे।

(सत्य धर्म प्रचारक 15 बैशाख विक्रमी संवत 1963)

125. सर राजा नाहर सिंह जी

के.सी. आई शाहपुर (राजपूताना)

आज भारत के नेता हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा देने लगे है। लेकिन आज से 50 वर्ष पूर्व अपनी मातृभाषा गुजराती होने पर भी

अपने ग्रंथ हिंदी में लिखकर दयानन्द ने दूरदर्शिता का प्रमाण दिया। ऐसा उदाहरण भारत के सुधारकों में शायद ही मिले।

126. बाबू लक्ष्मण स्वरुप एम.ए.एम आर.ए.एम.

(प्रोफेसर ओरियन्टल कॉलिज लाहौर)

मेरे विचार में बाल विवाह, पुराणों की शिक्षा और सामाजिक कठिनाईयों का सामाधान सम्भवतः वर्तमान शिक्षा से हो जाए लेकिन स्वामी दयानन्द ने एक बड़ा जरुरी कार्य किया जो उनके बिना किसी से हो नहीं सकता था और जिसे मैं सब से बढ़िया समझता हूं और जिसका परिणाम आने वाली पीढ़ियां अनुभव करेंगी वह यह है कि स्वामी दयानन्द ने सबसे पहले हमको यह बताया कि हमारा भूतकाल बड़ा शानदार था। हमारे पूर्वज अनपढ़ गंवार नहीं थे। वह ऋषि मुनि तथा बुद्धिमान दार्शनिक थे जो सृष्टि एवं प्रकृति के नियमों को जानते थे।

127. प्रोफेसर रुचिराम साहनी

एम.ए. राजकीय कॉलिज लाहौर

जब कभी महामानव संसार में पैदा होते हैं तो वायुमंडल में हलचल मच जाती है। क्योंकि पुराने विचारों वाली सोसाईटी नए विचारों को जल्दी से सहन नहीं करती। जैसे समय गुजरता है लोग इन महानुभावों के विचारों को अपनाने लगते है तो उनको शान्ति प्राप्त होती है। यही तस्वीर स्वामी दयानन्द के आने पर सामने आई। एक लहर चल पड़ी। लोग उसके विचारों से सहमत हों या न हों परन्तु उसके एहसान कभी नहीं भुला सकते। क्योंकि उन्होंने अपने जीवन से सिद्ध कर दिया कि जिन लोगों के सम्मुख कोई आदर्श होता है वह किस प्रकार कार्य करते हैं। मुझे याद है कि जिस समय स्वामी जी दुनिया से चले गए तो कैसी हाहाकार मची। उन दिनों जावा के द्वीप में अग्नि पहाड़ (कट्टाव) फटा था जिसकी धूल सारी दुनिया में फैल गई थी। जिससे आकाश में सांयकाल को कई प्रकार का परिवर्तन होता था। कभी हरा कभी

लाल काली कोई और रंग। अर्थात सारी दुनिया में उथल-पुथल मच गई थी।

128. अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

(प्रकाश का ऋषि नं: 22/10/22)

(अध्यक्ष स्वागत समिति अमृतसर कांग्रेस 1919 जन्मदाता गुरुकुल हरिद्वार)

मैंने पंडित केशव चन्द्र सेन (शुद्धि आन्दोलन, हिन्दु सगंठन) बाबू मोहन लाल घोष, बाबू सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी, श्रीमती ऐनी बेसेन्ट एवं अन्य प्रसिद्ध उपदेशकों के भाषण उस समय सुने है जब वह ऊँची पदवी पर थे। परन्तु मैं सच्चे हृदय से कहता हूं कि जो प्रभाव बरेली में स्वामी जी के एक उपदेश का पड़ा और जो वास्तविकता मुझे उनके सरल शब्दों में प्रतीत हुई वह अब तक दिखाई नहीं पड़ी। भविष्य की ईश्वर जाने। सत्य की शक्ति पर जो महाराज ने बोलना शुरु किया तो पहले दिन वाले सभी लोग अंग्रेज स्काट पादरी के अतिरिक्त उपस्थित थे। कोई व्यक्ति हिल-डुल नहीं रहा था। इस उपदेश के कुछ शब्द मुझे मरते समय तक याद रहेंगे, ऋषि ने कहा लोग कहते हैं सत्य मत कहो। कलैक्टर नाराज होगा। आयुक्त अप्रसन्न होगा। गवर्नर दंड देगा। अरे चक्रवर्ती सम्राट क्यों न नाराज हो हम तो सत्य कहेंगे। इसके पश्चात् उपनिषद के मंत्र को पढ़ा जिस में लिखा है कि आत्मा को कोई शस्त्र काट नहीं सकता, न अग्नि जला सकती है। गर्जती हुई आवाज में बोले यह शरीर तो नाशवान है इसकी सुरक्षा में फंसकर पाप करना व्यर्थ है। इसे जिस व्यक्ति का जी चाहे नष्ट कर दे। फिर चारों और अपनी तीव्र दृष्टि से शेर की भांति गर्ज कर कहा मुझे वह शूरवीर दिखलाओ जो यह कहे कि मेरी आत्मा का हनन कर सकता है। जब तक ऐसा वीर दुनिया में दिखाई नहीं देता मैं यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं हूँ कि क्या मैं सत्य को दबा दूं या नहीं। मुझे अपने नास्तिकपन पर बड़ा अभिमान था। यद्यपि मुझे स्वामी जी का उपदेश अच्छा लगता था फिर भी मैं यह सोचता था कि यदि एक ईश्वर और वेद को स्वामी जी मानना छोड़ देवें तो फिर

दुनिया में कोई विद्वान इनका सामना करने वाला दिखायी नहीं देता। मैंने

अहंकार के वश में पहली बार वाद-विवाद के कारण ईश्वर के विषय में आपत्ति उठायी परन्तु पांच मिनट में मेरी वाणी बंद हो गई। अन्त में जब हर प्रकार से दलील में बंद हो गया तो कहा महाराज आपकी बुद्धि तीव्र है। आप ने मेरी वाणी बंद कर दी। लेकिन मुझे विश्वास नहीं दिलाया कि ईश्वर है। दूसरी और तीसरी बार भी पांच मिनट में मेरी वाणी बंद हो गयी। जब तीसरी बार भी विवश होकर वही उत्तर दिया तो महाराज पहले तो हंस पड़े फिर गंभीरता से कहा देखो तुमने प्रश्न किए मैंने उत्तर दिए। यह दलील की बात है। मैंने कब वचन दिया था कि मैं ईश्वर के प्रति आपको विश्वास करा दूंगा। तुम्हारा विश्वास ईश्वर पर उस समय होगा जब ईश्वर स्वयं तुम्हें अपने उपर विश्वास कराएंगे। मैं उस समय नास्तिक का नास्त्कि ही रहा और उसके पश्चात् बहुत समय तक अविश्वास की गहरी खाई में गिरा रहा। लेकिन जब मेरे संवरने का समय आया तो दलील की आवश्यकता नहीं रही। जहां बड़े-बड़े पादरियों, मौलवियों और पंडितों की दलीले असफल रही और जहां दयानन्द जैसे योगीराज की दलील ने संतुष्ट न किया तब परमात्मा ने स्वयं अपने आप पर विश्वास कराया। उस समय मुझे ऋषि का कथन याद आया। मैंने उसके बड़प्पन के सम्मुख शीश झुकाया और मेरे दिल से तुरन्त यह आवाज निकली कि-

"दयानन्द सच्चा ऋषि था"

(स्वामीदयानन्द की जीवन)
(लेखक पंडित लेखराम जी)

129. श्रीमहात्मा हंसराज जी बी.ए.

(भूतपूर्व प्रिंसीपल दयानन्द कॉलिज लाहौर आर्य समाज के नेता)

वेद, यद्यपि नाम को विद्यमान थे परंतु वेदों की शिक्षा न थी। मैक्समूलर, ग्रिफ़थ के अनुवाद थे, और अंग्रेजी पढ़े लिखे स्पष्ट कहते थे कि वह इन अनुवादों की सहायता से चार दिनों में वेदों को जान

सकते है। सायण आचार्य का वेदों पर भाष्य भी मौजूद था। परन्तु यह सारे अनुवाद वेदों के वास्तविक ज्ञान को बताने में असमर्थ थे। स्वामी दयानन्द ने वेदों के वास्तविक रूप का प्रकाश किया। अज्ञान का अंधकार था। महान आत्माऐं इस अज्ञान के अंधकार को देखकर दुखी थी। इसको दूर करने का प्रयत्न करती परन्तु असफल रहतीं। किसी ने उपनिषदों तक पकड़ ग्रहण की और निर्णय दे दिया यही वेद है। चार विद्यार्थी वेदज्ञान पढ़ने के लिए काशी भेजे गए। उन्होंने वापिस आकर निर्णय दिया कि वेदों का ज्ञान क्रियान्वित करने योग्य नहीं है। स्वामी दयानन्द का सबसे महान कार्य यह था कि उसने वेदों की आवश्यकता को स्थापित किया।

(धर्म उपदेशमाला पृष्ठ 202)

(एक अन्य अवसर पर) जब हजरत मसीह का उपदेश हुआ तो किस को विदित था कि फिलिस्तीन के रहने वाले एक फकीर के आगे बड़े-बड़े राजा अपना सिर झुकाएंगे और उसके उपदेश भिन्न देशों में फैलेंगे। इस प्रकार यह विश्वास करना कठिन है कि वैदिक धर्म योरुप या अमरीका या एशिया के दूसरे भागों में फैलेगा। परन्तु सत्य विश्वास में बड़ी शक्ति है और ऋषियों का बल भी अंगाध होता है। परमात्मा की शक्ति असीम है। हमारा यह विश्वास है कि ऋषि दयानन्द का उपदेश जो उन्होंने वेदों से लिया है और सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखा है किसी न किसी समय, दुनिया को चमत्कार दिखाएगा।

(आर्य गजट 25 फरवरी 1933)

130. सम्माननीय राजा मोतीचन्द

(सी. आई. ई. बनारस)

स्वामी दयानन्द हिन्दु जाति के सच्चे रक्षक थे। उनके पवित्र जीवन से हिन्दु जाति को बहुत लाभ पहुंचा है जिसके लिए वह उनकी कृतज्ञ रहेगी।

131. लाला गया प्रशाद सिंह साहब एम.एल.ए.

महिला शिक्षा और अछूत उद्धार की लहर में जो प्रगति हुई है उसका श्रेय केवल स्वामी दयानन्द को है। उन्होंने हरिजनों की भलाई के लिए बड़ा अद्वितीय कार्य किया है। महिलाओं को ऊँचा उठाने के लिए उन्होंने विशेष परिश्रम किया है।

132. लाला दीनानाथ

(भूतपूर्व सम्पादक हिन्दुस्तान हिमालय-लाहौर)

19वीं शताब्दी संसार के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। क्योंकि जितने महापुरुष इस शताब्दी में उत्पन्न हुए इससे पूर्व किसी शताब्दी में नहीं हुए। मेरे विचार में इस का निर्णय करने के लिए हमारे पास बहुत दृष्टान्त हैं। 19वीं सदी में वह कौन था जो भारत में सबसे बड़ा व्यक्ति हुआ तो बिना किसी रोकटोक यह स्पष्ट है कि इस ऊँची पदवी वाला महापुरुष दयानन्द सरस्वती था। वह वैज्ञानिक था वह दार्शनिक था। उत्कृष्ट उपदेशक, लेखक था। वह राष्ट्रभक्त था और उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ था।

(लेखक पृ.-14 प्रकाश दि. 30-10-32)

133. राय बहादुर डॉ. मथुरादास

(सहायक सर्जन मोगा, पंजाब)

नये युग के निर्माता वर्तमान में नवजीवन प्रदान करने वाले ऋषि दयानन्द का नाम भारत वर्ष ही नहीं अपितु सारे विश्व के इतिहास में अमर रहेगा। ऋषि के जन्म ने पुनः भारतवर्ष को सपूत पैदा करने वाली भूमि को गौरव प्रदान किया। वीरता का रुप सत्य और तपस्या है। पुरानी संस्कृति के सपूत ऋषि ने अपनी आत्मा एवं शरीर को तप में तपाया। इसके लिए मेरा शीश उस उत्तम आचरण वाले कठोर तपस्वी के चरणों में झुक जाता है। सत्य के लिए ऋषि के अंदर उत्साह था। सत्य का सच्चा पुजारी सत्य पर अटल रहा। दुनिया की इच्छाएँ ऋषि को डावाँडोल न कर सकी। ऋषि का पवित्र जीवन सत्य की मूर्त्ति है।

इस कारण मेरी ऋषि के प्रति श्रद्धांजलि है। ऋषि ने दरिद्र लोगों को अपनाया। महिलाओं को जगाया। वह सच्चा कर्म योगी था। उसकी पवित्र आत्मा सत्य का गुणगान करती हुई परमात्मा में समा गई। जिसकी ध्वनि रहती दुनिया तक सुनाई देगी।

(प्रकाश का दयानन्द अंक 30.10.1932)

134. राधा स्वामियों के गुरु आनन्द स्वरुप जी महाराज

(दयालबाग आगरा)

आर्य जाति ने समय समय पर ऐसे पथ-प्रदर्शक पैदा किए हैं जिनकी शिक्षा के कारण लाखों करोड़ों के जीवन में परिवर्तन हुआ है। यदि वर्तमान इतिहास की ओर ध्यान दिया जाए तो ऋषि दयानन्द उन पवित्र आत्माओं की सूची में दृष्टिगोचर होते हैं। उन्होंने भारतवासियों को पश्चिमी सभ्यता के जीवन से हटाकर ठीक जीवन जीने का उपदेश दिया। उनके प्रताप से हिन्दु जाति का प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को संभालने का प्रयत्न कर रहा है। वह देश धन्य है जिसमें ऐसे महापुरुष जन्म लेते हैं और धन्य है वह जाति जिसको ऐसी पवित्र आत्माओं के सम्मान एवं स्मरण करने का अवसर प्राप्त हैं।

(30 अक्तूबर, 1932, प्रकाश लाहौर)

135. श्री युत बी.दास

(सदस्य विधानसभा)

श्री स्वामी दयानन्द वर्तमान भारत के सबसे बड़े सुधारक थे। वह हिन्दु धर्म को जातिपाति की जंजीरों को तोड़कर विश्वधर्म का निर्माण करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने प्रयत्न किया।

136. प्रोफेसर रामदेव जी

बी.ए. एम.आर.ए.एस.

(भूतपूर्व गर्वनर गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)

समय आएगा जब लन्दन, बर्लिन, न्यूयार्क में दयानन्द की मूर्त्तियां स्थापित होंगी। जब रोम (इटली) में पोप के भवन पर ओम् का ध्वज लहराएगा और मक्का में हवन यज्ञ होगा। दयानन्द की शिक्षा का प्रभाव राज्य अनुभव कर रहे हैं। इसने भारत वर्ष को नवजीवन प्रदान किया है। टाईम्स का सम्पादक भी मानता है कि सिक्खों में भी धार्मिक जीवनों का बीज आर्य समाज ने बोया है। योरुप में भी दयानन्द का नाद बजना आरम्भ हो गया है। डेविस ने तो कहा था कि योगी दयानन्द के ज्ञान की भट्टी में झूठ, अज्ञानता, जलकर राख हो जाएगी। लेकिन वर्तमान योरुप के ऋषि कोंट टालस्टाय के दिल को भी दयानन्द ने जीत लिया है। दयानन्द दिग्विजय विश्व में हो रहा है। सच पूछो तो यह युग दयानन्द का युग है। बोलोः-

"जगत गुरु भगवान दयानन्द की जय"

137. स्वर्गीय ठाकुर जसराम सिंह जी

(सम्पादक समाचार पत्र राजपूत, हैरल्ड लन्डन)

स्वामी दयानन्द जीवन पर्यन्त अंग्रेजी राज्य का अत्यन्त प्रशंसक रहा क्योंकि वह जानता था और स्पष्ट तौर पर कहा करता था कि सामाजिक बुराईयों और कुरीतियों को तोड़ फेंकने के लिए परमात्मा ने सुनहरी अवसर दिया है। जो मुगल और मरहट्टा शासन में विचार में भी नहीं आ सकता था। वह इस लिये अंग्रेजी राज्य का प्रशंसक था क्योंकि इनके राज्य में लोगों को बिना भय के उन्नति करने का एक विशाल क्षेत्र मिल गया। स्वामी दयानन्द इस सहायता को भली प्रकार से जानते थे जो लोगों के मृतक शरीर में जान डालने के लिये मिलती थी और इसलिए उनका विश्वास था कि इस राज्य में आर्यावर्त्त सदियों की निद्रा को त्याग कर, जाग जाएगा और दुनिया में वह नाम पैदा करेगा जिसके लिए वह चुना जा चुका है। इसने भारतवासियों को उपदेश दिया कि अपने धर्म को उठाने के संघर्ष में हमेशा याद रखो कि अपने प्रयत्न सिद्ध करने के लिए यह अद्वितीय अवसर है। इसने अंग्रेजी शासन में

लोहे पर तब चोट लगाई जब वह गर्म था अर्थात अवसर का लाभ उठाया और सराहनीय मिशन की नींव रखी जिसका लक्ष्य पुराने धर्म को पुनः जीवित करना और सामाजिक बुराईयों को दूर करना था और अन्त में उस पर स्वस्थ्य, शक्तिशाली विचारधारा की नींव डालना था। जिससे हिन्दु जाति पुनः अपने आदर्श को ग्रहण करे और भलीभांति जान ले कि वह एक ऐसी उत्तम, शानदार संस्कृति की स्वामिनी है जिसको भूतकाल में दुनिया मानती थी। स्वामी दयानन्द सामाजिक बुराईयों, छलकपट, अज्ञानता सत्यधर्म में मतभेद, झूठ व्यक्तिगत लाभ (स्वार्थ) के बड़े वैरी थे। इन भयानक बुराईयों के कट्टर विरोध के फलस्वरुप उसकी आत्मा में सत्यनिष्ठा, पवित्र भक्ति और बढ़िया उत्साह उत्पन्न हुआ। जिससे वह भविष्य वक्ताओं का कुंवर (प्रिन्स) एवं आध्यात्मिक समस्याओं के समाधान का पथ प्रदर्शक माना गया। परमात्मा ने उसे एक विशाल हृदय दिया था। इसकी निस्वार्थ, छलकपट से रहित, भयभीत करने वाली शक्ति के कारण उसके हाथों में तर्क और विद्वता की एक तेज धारवाली तलवार थी जिससे गले सड़े, व्यर्थ विचार, वहम, भ्रम टुकड़े-टुकड़े हो गए। वह धर्म एवं विज्ञान वाला व्यक्ति था जिसने इन दोनों को मिलाकर अद्वितीय बुद्धि से ऐसे नियम प्रस्तुत किए जो दूसरे धर्मों से अधिक लाभदायक, स्वस्थ, गंभीर और उचित थे। उन पर धर्म की आधारशिला रखी। यह उसकी शिक्षा की चाबी है। उनके मिशन की यह तीव्र इच्छा थी कि जहां तक आपसी संगठन का प्रश्न है वह भारतवासियों के साथ मिलाकर अन्त में सारे विश्व को प्रेम के एक सूत्र में बांधना चाहते थे।

138. स्वर्गीय चौधरी राम भजदत जीबीए एलएलबी

(भूतपूर्व प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा, पंजाब)

अपने विचारों को प्रकट करने के लिए योगी महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश लिखा है। उसके आरंभ में पहला नियम लिख दिया है

मैं कोई नया सम्प्रदाय चलाने नहीं आया बल्कि मेरा धर्म वही है जो ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि तक सभी ऋषि मानते आए हैं। आज भी संसार भर में जो नेक लोग है वह इस मत से सहमत हैं और रहेंगे भी। यह इस ऋषि की शिक्षा का निचोड़ है जिसमें उन्होंने यह माना है कि सारी दुनिया के ईसाई, मुसलमान यहूदी, बुद्ध और दूसरे भांति-भांति के विचार रखने वाले धार्मिक लोगों का असूल एक है। इनकी विचारधारा और कर्म एक है। निसन्देह स्वामी जी ने सभी सम्प्रदायों के नियमों की समीक्षा की है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि बाईबल कुरान आदि में जो सत्य बातें हैं उनका सम्मान नहीं किया। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि संसार के सभी नेक व्यक्ति जो आचरण कर रहे है वह आचार, व्यवहार मानने योग्य है। (आर्य गजट)

139. श्री सतीश चन्द्र राय बैनर्जी

(प्रिंसीपल दयालसिंह कॉलिज, लाहौर)

आर्य समाज का संस्थापक आदरणीय महर्षि दयानन्द ऐसे ऋषियों में से था जिसने बौद्धिक ज्ञान की उत्कृष्टता को जानकर उसे धारण कर देश को वेदों पर चलाने और आर्य संस्कृति को पुनः स्थापित करना चाहा। संस्कृत का विद्वान, सत्य का पुजारी, योग में दक्ष और तपस्वी स्वामी दयानन्द हमारे समक्ष आदर्श का चरित्र है। डॉक्टरों का मत भिन्न होता है। परन्तु ऋषियों का मत एक होता है। मैं ऋषि दयानन्द की विद्व ता को भली-भांति समझ सकता हूँ। जिस समय मैं महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षा को सामने रखता हूँ तो मुझे पृथ्वी आकाश का अन्तर दिखाई देता है। एक गृहस्थी जिसका पालन पोषण बढ़िया ढंग से हुआ और उच्च कोटि का त्यागी ऋषि इनमें चाहे कितने मतभेद हो लेकिन विचारों की एकता स्पष्ट दिखाई देती है। दोनों ही परमात्मा एवं उसकी प्रजा की सेवा में मग्न थे। दोनों सत्य धार्मिक पुरुष थे और अपना सर्वस्व लोगों को धर्म मार्ग पर चलाने के लिए लगा रहे थे।

(आर्य गजट-12-2-1920)

140. स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

(उपदेशक आर्यसमाज)

स्वामी दयानन्द जी में कोई ऐसी दिव्य शक्ति थी कि अपने समय के सभी विद्वानों में प्रिय थे। मुसलमानों के प्रसिद्ध नेता सर सैयद अहमदखां स्वामी जी के प्रशंसकों में से थे। पादरी स्काट जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति भी उनका सम्मान करते थे। कई बार उनको गिरजा में उपदेश के लिए आमंत्रित किया। लाहौर में मुसलमानों ने अपना मकान स्वामी जी के ठहरने को दिया। ब्रह्मसमाज के श्री केशव चन्द्र सैन आप की प्रशंसा करते थे। महर्षि देवेन्द्र नाथ टैगोर उनका गुणगान करते थे। न्यायमूर्ति गोविन्द राणाडे स्वामी जी की भक्तमाला के विशेष मोती थे। स्वामी जी के जीवन पर दृष्टिपात किया जाए तो ऐसा प्रतीत होगा कि आज तक जितने महापुरुष हुए हैं उनकी सबकी खूबियां इनमें विद्यमान थी।

इनका हिमालय की चोटियों पर घूमना, विन्धयाचल की यात्रा करना, नर्मदा के तट पर चक्कर लगाना, सन्तों के दर्शन करना श्रीराम चन्द्र महाराज की याद दिलाता है। कर्णावास में कर्ण सिंह की विद्युत की भांति चमकती तलवार से नहीं घबराए और उसे कहा आत्मा अमर है, अजर है। इसे कोई नष्ट नहीं कर सकता। यह दृष्टान्त व अन्य बातें श्री कृष्ण महाराज का चित्र सामने रख देती हैं और प्रतीत होता है कि वह सम्मुख खड़े बोल रहे हैं।

अपनी प्यारी बहिन और चाचा की मृत्यु पर वैरागी बनकर वनों में घूमना और कठोर परिश्रम करना और अन्त में मृत्यु पर विजय प्राप्त करके परमपिता परमात्मा में लीन हो जाना महात्मा बुद्ध की भांति है। दीन दुखिया, ल़ंगड़े, अनाथों को देखकर उन के मन में ऐसे विचार पैदा होते थे जो इज़रत मसीह के दिल में थे। वह पंडितों के सामने शंकराचार्य जैसे लगते थे। एक ईश्वर का प्रचार कर और आपसी प्यार के विचार फैला कर हजरत मोहम्मद प्रतीत होते थे। जब ईश्वर के भजन गाते तब स्वामी जी अपने आप को भूल जाते। उनकी आंखों में प्रेम के अश्रु आ जाते। और उनके गाल इस प्रेम के पानी से धुल जाते।

इस समय वह सन्तरामदास, कबीर, नानक, दादू, चैतन्य और टीकाराम का वातावरण बन जाते थे और स्वामी जी इन सब में अग्रणी नजर आते। आर्य संस्कृति की सुरक्षा के समय वह बहादुर, प्रताप, शिवाजी और गुरुगोविंद सिंह जी की भांति दिखाई देते।

(दयानन्द प्रकाश)

141. पंडित मूलशंकर दयाराम

(दीवान घरवल रियासत)

स्वामी दयानन्द एक महापुरुष थे। स्वामी जी ने हिन्दु जाति पर बड़े अहसान किए। एक हिन्दु जाति ही नहीं भारत वर्ष के अन्य धर्मों को भी उनका कृतज्ञ होना चाहिए। स्वामी जी का मिशन महान था। उनका प्रेम किसी एक देश या जाति तक सीमित न था। वह समस्त प्राणीमात्र के सच्चे हितैषी थे। वेदों के पूर्ण विद्वान और वेदों को सारी दुनिया के लिए उपयोगी और अनिवार्य समझते थे। स्वामी जी ने वेदों का भाष्य अनुवाद किया। यदि हिन्दु जाति उनके अहसान भुला भी दे तो भी दयानन्द अकेला हिन्दु जाति में सम्मान से देखा जाएगा। लोगों के दिलों को अपनी ओर खींचने की स्वामी जी में अद्भुत शक्ति थी। दया, भलाई, और राष्ट्र भक्ति उनके अंग-अंग में भरी हुई थी। वह ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय और योगी थे। वह निडर और स्वतन्त्र विचारधारा वाले थे।

(प्रकाश 1922)

142. डॉ. धर्मबीर जी एफ.आर.सी.एस.

(डीपीएच लाहौर)

मेरी चिकित्सा विज्ञान में रुचि है। मुझे स्वामी जी के उत्तम ज्ञान एवं विद्या को परखने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। इस लिए मेरे मन में बाल ब्रह्मचारी योगी के पवित्र जीवन के लिए सम्मान और प्रेम प्रतिदिन बढ़ता रहता है और मैं परमात्मा का धन्यवाद करता हूँ कि मेरे जीवन से पहले भाग में मेरा आर्य समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। ब्रह्मचर्य,

सोलह संस्कार, सन्तान उत्पत्ति, सब्जियों का खाना, प्राणायाम आदि मेरे जीवन के विषय हैं। जिनमें मैं आन्दोलन करूँ Eugenies के प्रोफेसर के पास नियोग था गर्भाधान संस्कार का उल्लेख करो वह इनके बढ़िया नियमों को जानेगा और प्रशंसा करेगा। सन्तान उत्पत्ति के नियमों के बारे शारीरिक ज्ञान के प्रोफेसर से बात करो जिसने भोजन विषय में विशेष ज्ञान प्राप्त किया है तो पता चलेगा कि भोजन ही शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उत्तम कार्य करता है। अन्त्येष्टि संस्कार का ज्ञान, वैद्य एवं स्वास्थ्य के योग्य व्यक्ति को बताओ तो इनको आर्यावर्त्त की उत्तम संस्कृति का पता चले। Ethnologist की बुद्धि को चक्कर में डाल देवे। यह विषय आर्यसमाज के हैं। इनकी नींव विद्या पर है और इनके जीवित रखने के लिए विद्या और ज्ञान की आवश्यकता है। सत्य ज्ञान और सत्य विद्या मनुष्य जाति को प्रतिदिन मिलते रहते है। दुनिया की प्रयोगशाला में विद्वान लोग अनुभव प्राप्त कर रहे हैं और वैदिक धर्म को फैलाने का बढ़िया कार्य कर रहे है। इसलिए मेरे विचार में आर्य समाज का सबसे बड़ा मिशन यह है कि अपनी शक्ति विद्या के भंडारों को बनाने में लगाए। जब तक विद्या का पढ़ना जारी रहेगा स्वामी जी की आत्मा हम से निराश नहीं हो सकती।

(प्रकाश 22.10.1922)

143. श्री लाला वजीर चन्द वकील रावल पिंडी

पटियाला के केस में जो दो आर्य वीरों के विरुद्ध था आपने आर्य समाज की अमूल्य सहायता की। आप स्वर्गीय लाला रलाराम जी गवर्नर गुरुकुल गुजंरावाला के सपुत्र हैं।

"(स्वामी दयानन्द वाम मार्गियों के सदस्य थे वहां से नियोग लिया है।)"

लाला वजीर चन्द जिनको मृत्यु की धमकी भी नहीं हिला सकी अपने आचार्य की शान में उपर्युक्त शब्द सहन न कर सके। उनको जोश आ गया और पटियाला रियासत के बरनालाा के शासक के मुंह

पर यह कहा कि वह आत्मदर्शी ऋषि जिसने आयु पर्यन्त ब्रह्मचर्य का कठिन व्रत धारण किया, वह लंगोटबंद तपस्वी जिसने अपना रक्त देकर प्राणीमात्र की भलाई के लिए भक्ति का रास्ता प्रशस्त किया। वह प्रेम और पवित्रता का प्रकाश स्तम्भ जिसकी अद्वितीय शिक्षा यह थी कि अपनी पत्नी से भी तुम्हारी काम वासना नहीं होनी चाहिए। आज उसको वाममार्गी बताया जाता है। मनुष्य की सहनशक्ति की सीमा होती है। हम समझते थे कि हम गैर रियासत के अतिथि हैं। मधुर वचन बोलने पर कुछ व्यय नहीं होता परन्तु हम पर गालियों की वर्षा होती है। और नहीं तो हमारे आचार्य ऋषि दयानन्द का तो अपमान न किया होता। हम शिकायत किस से करें। हम दुखियों की फरियाद केवल परमात्मा से है जो बेसहारों का सहारा है।

पंडित नारायण प्रसाद जी की कविता से कुछ पंक्तियां इस प्रकार है:-

कवंल दिल के खिले है या सफ़ै है दिल के दागों की
इसी दीपक से नौबत आयी है घर-घर चिरागों की
इसी माली ने की है तरवृता बन्दी मजहब के बागों की
इसी बुलबुल के नगमों से दबी आवाज ज़ागों की
दवा-ए दर्दे दिल और ज़ख़्म का मरहम इसे कहिए
अगर मुंसफ है दिल तो महसने-ए-आलम इसे कहिए।

144. स्व. माननीय बाबू आनन्द स्वरुप जी वकील कानपुर

(भूतपूर्व उपप्रधान कौंसिल यू.पी.)

स्वामी दयानन्द राजनीति को जानते थे। होम रुल और स्वराज्य के शब्द उनके लिए नये न थे। जब लार्ड मारले भारत के मंत्री ने यह शब्द कहे थे कि एक अच्छा राज्य अपने राज्य का बदल नहीं हो सकता तो इससे बहुत पहले स्वामी दयानन्द अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के छटे

भाग में यह तथ्य स्पष्ट कर चुके थे। स्वामी दयानन्द में देशभक्ति और भारत माता के प्रेम की कमी नहीं थी। लोग इनके जातिवाद की शपथ लेकर इस का समर्थन करते थे। कई जातिवादी लोग स्वामी दयानन्द को एक बढ़िया राष्ट्रवादी से उपर पदवी नहीं देते। परन्तु स्वामी दयानन्द वास्तव में दूरदर्शी ऋषि थे। उनकी दृष्टि हम संसारियों की भांति सीमित नहीं थी। वैदिक धर्म का राज्य उसका आदर्श था। दुनिया का भविष्य उसके सामने था। उसकी देश और जाति भक्ति विश्व वैदिक धर्म के अधीन थी। सब परमात्मा के अमृत पुत्र हैं। सबकी उन्नति में संसार की उन्नति है। आत्मिक उन्नति से हर प्रकार की उन्नति हो सकती है। यही कारण था कि स्वामी दयानन्द ने देश जाति एवं विश्व के सम्मुख वास्तविकता का रहस्य उजागर किया।

(आर्य गजट 1920)

145. सदाए मुरली

(प्रसिद्ध कांग्रेसी मुरलीधर जी) (वकील अम्बाला)

ज़बां पे मुरली के जिस ऋषि की धर्म के जीवन की है कहानी

हुए थे वह ब्रह्म कुल में पैदा पिता थे उनके त्रिवेद धारी

रखा पिता ने था मूलशंकर दया के सागर का नाम नामी।

हुआ था दर्शन से जिस के माता के धन से दरयाए शीरजारी

किनारे मादरे ऐनजर में इसके था अहदे तिफ़ली

(बालपन) में तख़्त शाही

पिदर का साया था सर पर मानिन्द साया-ए-चित्रे बादशाही

गए लड़कपन में शिव की पूजा को मूलशंकर नये पुजारी

त्रिशूलधारी की आमद आमद की थी पुजारी को इन्तज़ारी

हुए दयालु न मूल शंकर पे जब मुरारी त्रिशुलधारी

निराश होकर हुए फरारी वहां से फौरन नये पुजारी
जब आऐ मथुरा पुरी में
घर से फरार होकर वह ब्रह्मचारी
निवास करते थे तट पे जमुना के विरजानन्द ब्रह्मज्ञानी
तड़प रहा था जो नर बर लब आब
ब्रह्मचारी मिसाल माही। (मछली)
पिलाया उसको गुरू ने दरिया दिली को विद्या नदी का पानी
न करने पाए थे काम पूरा दयानन्द सत्यवादी
अजल ने आकर कहा ऋषि से
पिता ने भेजी है प्रेम बाणी
खड़े है यमराज दर के उपर
तुम्हारी करते हैं इंतजारी
करो शताबी करो न देरी शब-ए दिवाली है रात काली
हुआ है गुलशन गुलों से ख़ाली रही न फसले बहार बाकी।
हुई है गुलशन की पायमाली रहा है पहलु में ख़ार बाकी। (कांटा)
रहे न शबनम के मोतियों के गुलों के गर्दन में हार बाकी।
रहे न जब गुलज़ार बाकी, रहा न इनका सिंगार बाकी।
रहे न जगने को हंसराजों के गोहर ए शाहवार बाकी।
रही न सहन-ए-चमन में हसों की खूबसूरत कतार बाकी।
ऋषि दयानन्द स्वर्गवासी के बाद
हम बर किनारे रावी
रहे हैं दरिया में गर्क होने को
शर्म से नाबकार बाकी।

146. पंडित श्री पाद दामोदर सातवल्कर

(संपादक अखबार ऊँद (सितारा)

पांच हजार वर्ष में अपने वैदिक धर्म पर जैन, बुद्ध, शैव, वैष्णव, वेदान्ति, पौराणिक, किरानी, कुरानी आदि धर्मों के आक्रमण हुए। इतने आक्रमण होने पर भी किसी विद्वान के दिल में यह विचार न आया कि अपना वैदिक धर्म जो मूल संहिताओं में है सब सम्प्रदायों का मुकाबिला कर सकता है। हजारों वर्ष के पश्चात् स्वामी दयानन्द जी के मन में ही इस दूरदर्शिता का सूर्य उदय हुआ। इस दूरदर्शिता में ही उनका ऋषिपन है।

147. मुन्शी सूरज नारायण मेहर

(भूतपूर्व इंसपैक्टर ऑफ स्कूलज)

अहले हिन्द ऐसे थे लेकिन ख्वाबे गफ़लत में खमोश
जैसे हो सरबस्त रिन्दा[1] सेबूकश बादानोश
बेजगए उनको यह मुमकिन नहीं था आए होश
जोशे कौमी कुछ न था बाकी न कुछ कौमी खरोश
थी जरुरत इन दिनों ऐसे महर्षि की यहां
जिसके उपदेशों से हो बेदार[2] सब पीरों[3] जवां4
अज़सरे नव[5] देव वाणी का करे प्रचार फिर
अजसरे नव देश भाषा का करे तीमार फिर अजसरे नव सोने वालों को करे वेदार फिर।। अजसरे नव अहले गफ़लत को करे होशियार फिर

वह महर्षि ए मेरे स्वामी दयानन्द आप थे
आर्य भूमि है माता इसके फरजन्द[6] आप थे
देश भाषा का हमें मंत्र सिखाया आपने
सरे मुखफी[7] देववाणी का बताया आपने

वेद की तालीम का रास्ता बताया आपने

जो कराया चाहते थे कर दिखाया आपने

शास्त्र का आन कर प्रचार घर घर कर दिया।

नूरे[8] मेहर इल्म से आलम मन्नवर[9] कर दिया।

(1) शराब पिए हुये (2) जागना (3) बड़े (4) छोटे (5) नये सिरे से (6) सपूत (7) छिपा भेद (8) सूर्य के प्रकाश (9) रोशन

148. श्री नारायण स्वामी जी

भारत के पतन के कारणों में से एक कारण स्वामी शंकराचार्य का सन्यास आश्रम भी है जिस संसार में पल कर मनुष्य चक्रवर्ती राज्य तक प्राप्त कर सकता है जिस संसार में आकर मनुष्य गिरे हुए को उठा सकता है। अभागे, निर्धन, बेसहारा, विधवाओं की सहायता कर सकता है उस संसार को असत्य कहना या संसार एक स्वप्न की भांति समझना वास्तविकता से दूर है, व्यर्थ है, निराधार है।

शंकर की इस अंधी सोच से प्रभावित होकर गीता के कर्मयोग से इंकार किया गया। स्वामी शंकराचार्य के पश्चात स्वामी दयानन्द पहले सन्यासी थे जिसने इस बनावटी और वेदों के विरुद्ध बात पर आवाज उठाई और भारतवासियों को बता दिया कि कर्म न करने का फल तुम को मिल रहा है। तुम दुनिया के पावों से कुचले जा रहे हो। इस अपमान से बचने का समाधान यह है कि ऐसे सन्यास आश्रम को तिलाजंलि दे दो। दयानन्द की यह आवाज भारतवासियों के दिल में बिजली की भांति गूंज उठी और उनको इस की महानता का पता चल गया।

दक्षिण में बाल गंगाधर तिलक उठे और गीता का भाष्य करके शंकर के अनुयायी होते हुए भी शंकर की इस अंधकार में डालने वाली बात को काट कर दयानन्द के साथ सहमत होकर गीता के कर्मयोग की पुस्तक बताकर कर्म करने का उपदेश देते रहे।

149. श्री स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती

शारीरिक बल होते हुए भी गाली का उत्तर गाली से, ईंट-पत्थर का उतर ईंट पत्थर से न देकर, लोगों के हित की इच्छा करना, क्रोध न करना, लाखों की आमदनी को ठुकरा कर सत्य का पालन करना, लोभ से दूर रहने का प्रमाण है। परमेश्वर की याद और उसकी प्राप्ति के लिए घर की सुख-सुविधा का त्याग कर देना मोह का त्याग है। अनाथों, गरीबों की उन्नति निराभिमान पुरुष के सिवाय कौन कर सकता है?

ब्रह्म कुल में पैदा होकर भी अभिमान में फंसी ब्राह्मण जाति का पक्षधर न होना शुभ कर्मों की प्रधानता को उंची पदवी देना निराभिमानता का प्रमाण है। ऐसे महात्मा दुनिया का सुधार कर सकते है। तपस्वी वह है जो पहले श्रेष्ठ गुण धारण करे फिर जीवन के दूसरे भाग में दुनिया को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करे। इस प्रकार ऋषि दयानन्द जी महाराज एक तपस्वी थे जिन्होंने काम, क्रोध, मोह लोभ अहंकार जैसे अदृश्य दुश्मनों को जीत लिया।

150. लाला साईंदास जी एम.ए.

(भूतपूर्व प्रिंसीपल दयानन्द कॉलिज लाहौर)

स्वामी दयानन्द ने अपनी आयु के उत्तम भाग को वैदिक साहित्य को पढ़ने में व्यय कर यह परिणाम निकाला कि वैदिक धर्म पर सैंकड़ों वर्षों के पतन के कारण अज्ञान अविद्या की मैल जमी हुई है जो इसके वास्तविक रुप को स्पष्ट नहीं होने देती। वह जानते थे कि इस मैल के नीचे शुद्ध सोना है। इस लिये उनका पहला कार्य यह था कि बाहर की मैल को दूर करके वैदिक धर्म का वास्तविक रुप लोगों को प्रस्तुत किया जाए। इसको अन्य सम्प्रदायों की चोट से बचाना तब तक कठिन है जब तक कि अपने धर्म की त्रुटियों को दूर करके अन्य सम्प्रदायों की त्रुटियों को उजागर न किया जाए। ऋषि की लिखी हुई "सत्यार्थ प्रकाश" इस तथ्य का प्रमाण है। इस अद्भुत पुस्तक के पढ़ने से विदित होता है कि किस प्रकार इस महापुरुष ने आंतरिक और बाहरी विरोध

का सामना करके उस नाजुक समय जाति के अस्तित्व को कायम रखने का प्रयत्न किया। वह अपने समकालीन बाबू केशव चन्द्र की भांति ईसाई धर्म और पश्चिमी संस्कृति के पक्षधर न थे और न ही राम कृष्ण परमहंस आदि की भांति दूसरे सम्प्रदायों की अपेक्षा नेक नीति से कार्य करना चाहते थे। वह सच्चे आर्य वीर थे। वह जानते थे कि वह सत्य के पथ पर हैं। उन्हें अपने धर्म और उसकी श्रेष्ठता पर गौरव था और वह जानते थे कि दूसरे सम्प्रदाय वेद ज्ञान का सामना नहीं कर सकते। अपनी सुरक्षा के लिए चोट के बदले चोट लगाना वह धर्म समझते थे। इस वीरता की नीति के फलस्वरुप उन्होंने अपनी सारी जाति को मृत्यु के मुंह से बचा लिया।

151. स्व. राय बहादुर ठाकरदत्त धवन

जिलाधीश पंजाब

(जो सीमावर्ती हिन्दुओं का कट्टर रक्षक था)

स्वामी दयानन्द जी पहलवानों की भांति थे। उन्होंने अपनी इन्द्रियों को वश में कर रखा था। ज्ञान और बुद्धि आदि अद्वितीय थी। सबसे बढ़कर यह है कि वह सत्यवादी थे। वह सच्चे ऋषि थे। इस सत्य के बल पर वह इतने महान कार्य कर गए कि लोग आश्चर्य चकित रह जाते कि वर्तमान काल में उन्होंने कैसा परिवर्तन किया। उनकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश अनमोल रत्न है। वह कार्यकुशल थे। उनकी वाणी में दिल हिला देने वाला आकर्षण था।

152. जी.ए. चान्दा वर्कर

बी.ए.-एम-आर, ए, एस हैदराबाद (दकन)

स्वामी दयानन्द की किसी अंग्रेज़ से दुश्मनी नहीं थी। वह किसी ईसाई का अपमान नहीं करते थे। किसी मुसलमान के विरुद्ध अपशब्द का प्रयोग नहीं करते थे। सबके लिए भ्रातृ भाव सम प्यार करते थे। यदि वह कठोर होते तो किसी व्यक्ति के प्रति नहीं बल्कि झूठ, फरेब,

अज्ञानता, छल, कपट के विरुद्ध। ऐसा करने में वह हिन्दु मुसलमान, ईसाई के भेदभाव नहीं करते थे। यही कारण है कि उन्होंने पुराणों की तीव्र आलोचना की। महापुरुष सन्धि नहीं करते। वह आडम्बरों, रीति रिवाजों को पसन्द नहीं करते थे। इस प्रकार स्वामी दयानन्द का बर्ताव वैसा ही था जैसा अन्य सुधारकों का। स्वामी दयानन्द जाति को बनाने वाला, बुद्धिमान तर्क और यथार्थ का अवतार, छल-कपट का विरोधी, निडर, देशभक्त दार्शनिक और तीव्र बुद्धि वाला पंडित था और यह संभव नहीं कि ऐसा महापुरुष सिवाए राष्ट्र-भक्ति के अन्य कोई कार्य करे।

153. श्री पंडित घासी राम जी एम.ए. मेरठ

(भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा यू.पी.)

आर्य समाज के इतिहास में शिवरात्रि सदैव सम्मान योग्य रहेगी और प्रतिवर्ष सत्य की झलक दिखाती रहेगी। यह प्रभु की देन थी कि जिसने अन्धेरी रात में सत्य का प्रकाश उदय किया। जिसके प्रकाश से हमारा विश्वास है सारा विश्व प्रकाशित होगा और जो लोगों के दिलों से झूठ की कालिमा को धो देगा। ऐसा समय आएगा, अवश्य आएगा। कब आएगा यह नहीं बता सकते। इसको लाना उन पर निर्भर करता है। जिन्होंने ऋषि की शिक्षा का अपने अंदर समावेश किया और जिनके हृदय प्रकाशित हुए है।

154. कर्नल हिज हाईनैस महाराजा शरशाहु

(छत्रपति महाराज कोल्हापुर)

देश और लोगों के सुधार के लिए स्वामी दयानन्द ने अपना सर्वस्व वार दिया। शिक्षित लोग भलीभंति जानते है कि वैदिक धर्म के जिन विचारों और नियमों का स्वामी जी ने प्रचार किया उन्हीं के द्वारा जाति की और हर मनुष्य की शारीरिक, बौद्धिक, तथा सामाजिक उन्नति हो सकती है। किसी अन्य साधन से नहीं। मैं स्वामी दयानन्द का इसलिए

धन्यवादी हूँ कि उन्होंने वेदों को वास्तविक रूप में हमारे सामने रखा और वह सारे रहस्य बता दिए जिनके द्वारा प्राणी मात्र ही नहीं अपितु पशु जाति की भी उन्नति हो। जहाँ धर्म है वहां जय है। मनुष्य समुदाय का कर्तव्य है कि वह वैदिक धर्म पर चल कर स्वामी दयानन्द का धन्यवाद करे।

155. महाराजा सर प्रताप सिंह जी

(एजेन्ट जोधपुर)

जब स्वामी जी का मैंने पहली बार दर्शन किया तो मुझ पर उनकी आकृति का अद्भुत प्रभाव पड़ा। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे सम्मुख शेर खड़ा है। उनकी आवाज शेर की गर्ज से कम न थी। यह सब उनके ब्रह्मचर्य के कारण था। सब से बड़ी शिक्षा जो मैंने उनसे ग्रहण की वह यह थी कि गृहस्थ आश्रम में ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करना चाहिए। मेरी लंबी आयु का यह रहस्य है। दूसरी बात जो मैंने स्वामी जी से सीखी वह थी सरलता और देश प्रेम। जोधपुर का कपड़ा जो तिकड़ी कहलाता है मैं अभी तक प्रयोग करता हूँ। मारवाड़ और राजपूतों की सेवा अब तक कर रहा हूँ। स्वामी जी का मुझ पर बड़ा अहसान है। इनके सत्य उपदेश से ही मैं बना हूं। नहीं तो मेरा भी वही हाल होता जो आज कल के अधिकतर धनवानों का होता है।

कुछ इस्लामी नेताओं के विचार

156. मननीय सर सैयद अहमद खाँ

(संस्थापक एंग्लो ओरियन्टल मुहम्मडन कालिज अलीगढ़)

अति दुख की बात है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी जो संस्कृत के बड़े विद्वान और वेदों के ज्ञानी थे का 30 अक्टूबर 1883 सांयकाल 6 बजे अजमेर में देहांत हो गया। ज्ञान के अतिरिक्त वह अत्यन्त नेक और ऋषि थे। वह ज्योति स्वरुप निराकार प्रभु के सिवाए दूसरे की पूजा

उचित नहीं मानते थे। हमारा और दिवंगत आत्मा का बड़ा परिचय था। हम हमेशा उनका सम्मान करते थे क्योंकि वह ऐसे विद्वान और बढ़िया व्यक्ति थे कि हर सम्प्रदाय वाले को उनका आदर करना उचित है।

157. मौलाना अब्दलबारी साहिब

(फिरंगी महल लखनऊ)

(आप स्वर्गीय मौलाना मुहमद अली के गुरू थे)

स्वामी दयानन्द ने जो मार्ग अपनाया था वह उस समय उनको उचित लगा था। सर सैयद अहमद, मिर्जा साहिब, राजाराम मोहन राय और स्वामी दयानन्द ने जो जाति की उन्नति के लिए कार्य किया वह उसको ठीक मानते थे। स्वामी जी ने हिन्दू धर्म को भलीभांति हमारे सामने रखा ताकि हम उस पर बुद्धि पूर्वक विचार कर सकें। उदाहरण के तौर पर स्वामी जी एक ईश्वर को मानने वाले थे और इस तथ्य को हिन्दू धर्म से उद्धृत किया जो हमारे लिए नया था। एक ईश्वर के विषय में हमारा और आर्य समाज का एक मत है।

158. दिवंगत मसीह उल्मुल्लक हकीम अजमल खां साहिब

(भूतपूर्व प्रधान इंडियन नैशनल कांग्रेस)

स्वामी दयानन्द भारत के महापुरुष थे। उन्होंने धर्म का सच्चा स्वरूप देश के सम्मुख रखा। वह हिन्दु धर्म के संस्थापक थे। बहुत समय व्यतीत हो जाने के पश्चात् हर धर्म में ऐसी बातें प्रवेश कर जाती हैं जो उसके वास्तविक रुप को दूषित कर देती है। इसलिए जरुरत होती है कि धर्म के अनुयाईयों में ऐसा व्यक्ति जन्म ले जो सत्य को असत्य से अलग करके दुनिया के सम्मुख प्रस्तुत करे। ऐसे व्यक्ति को परमात्मा ऐसी बुद्धि प्रदान करता है जो इस कार्य को करने की योग्यता रखता हो। भारत में वह व्यक्ति जिस पर परमात्मा ने बड़ी सेवा का दायित्व डाला था और जिसे उसने अत्यन्त धैर्य और शक्ति से अपने जीवन में पूर्ण किया वह स्वामी दयानन्द था।

(आर्य गज़ट 23.2.1922)

159. मौलाना फजल अल हसन

(हसरत बी.ए. मुहानी)

मैं अपने इस विचार पर अब तक लगातार कायम हूँ कि भारत के लोगों के पुराने विचारों और सामाजिक कमजोरियों को दूर करने का कठिन कार्य आर्य समाज से अच्छा और किसी शक्ति द्वारा नहीं किया जा सकता क्योंकि आर्य समाज में प्रवेश करके हिन्दु अपने धर्म को छोड़े बिना बुराईयों से छूट सकता है। यदि आर्य समाज के अनुयाई इस्लाम और अल्लाह के बारे ठीक विचार अपना लेंवे तो फिर मुसलमानों को, मेरे विचार में, आर्यों से दूर रहने का कोई कारण नहीं रहे। क्योंकि विचार करो तो लोगों की मूर्त्ति पूजा और अन्य प्रकार के अज्ञान से छुटकारा दिलाने का आर्य समाज का काम इस्लामी मिशन से बहुत कुछ मिलता जुलता है। साथ ही मुसलमानों को दयानन्द के बारे उदारता से काम लेकर इन्हें एक शक्तिशाली जाति मानने में इंकार नहीं करना चाहिए। स्वामी दयानन्द का लक्ष्य यह था कि आर्य समाज उन्नति करके एक विश्व धर्म हो जाए। हम उन के उत्कृष्ट उत्साह का सम्मान करते है।

160. बेगम साहिबा मौलाना हसरत

मेरे दिल में स्वामी दयानन्द के प्रति बड़ा सम्मान है। उनके बड़प्पन का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि जो लोग उन के अनुयायी हैं वह देश के सभी लाभदायक कार्यों में बाकी देश वासियों की अपेक्षा अधिक भाग लेते हैं। शिक्षा, राजनीति और सामाजिक कार्यों में कोई ऐसा कार्य नहीं जिसमें आर्य समाज बड़ी संख्या में शामिल न हो।

161. मौलवी मुहम्मद मुराद अली साहिब

(सम्पादक राज पताना गजट अजमेर)

स्वामी जी की स्मृति न केवल आर्यावर्त्त के लोगों में ही रहेगी बल्कि अंग्रेजों यहूदियों, मुसलमानों आदि में भी लोग प्रलय तक उन्हें याद करेंगे और उनकी पुस्तकों में उनका उल्लेख होगा।

162. जनाब हाजी मौलवी महबूब आलम साहिब (दिवंगत)

(सम्पादक पत्र "पैसा" लाहौर)

यद्यपि स्वामी दयानन्द जी से पूर्व महात्मा राजा राम मोहन राय, परमहंस, राम कृष्ण, आदि हिन्दु नेताओं ने एक ईश्वर के बारे भारत वासियों का समय-समय पर ध्यान दिलाया है लेकिन स्वामी दयानन्द जी ने जिस तरीके से वेदों पर आधारित भक्ति सिखलाई है इसके लिए हर एक भक्ति करने वाला विशेष कर मुसलमान जिसमें एक खुदा की भक्ति करनी ही वाजिब है स्वामी जी का धन्यवाद करने में पीछे नहीं रह सकता। मतभेद को छोड़कर स्वामी जी एक सम्मानित नेता थे और उन्होंने एक महान शानदार कार्य अपने पीछे छोड़ा है।

163. मिर्जा यकूब बेग साहिब

(भूतपूर्व प्रोफेसर मैडिकल कॉलिज लाहौर)

(सचिव अहम दिया अंजमन)

आपसी मतभेद को ध्यान में न रखकर मैं यह कह सकता हूँ कि हिन्दु जाति के लिए इस अज्ञानता के काल में स्वामी दयानन्द ने एक महान सुधारक का कार्य किया है क्योंकि हिन्दु जाति मूर्त्तिपूजा, जड़ पूजा, पत्थर पूजा, और अन्धकार में डूबी थी और बहुत से रीतिरिवाजों को बंद करा दिया। जहां तक हमें ज्ञात है स्वामी जी के जीवन काल में मुसलमानों के साथ सम्बन्ध अच्छे थे और मुसलमानों ने भी उनके साथ अच्छा व्यवहार किया।

164. आगा मुहम्मद सफदर साहिब पंजाब

स्वामी जी ने हिंदु जाति से मूर्त्ति पूजा दूर करने का भरसक प्रयत्न किया और धर्म का वास्तविक स्वरुप जाति के सामने रखा। यह रहस्य कि आचरण इतना बढ़िया हो कि मनुष्य का मनुष्य दास न बने। दुनिया

में गुलामी केवल प्रभु की है, मनुष्य की नहीं। इस कारण स्वामी जी की शिक्षा को राजनीतिक कहा गया और वह एवं इनके सहयोगी उस समय के शासन की नजरों में खटकते रहे। वास्तविकता यह है कि किसी सुधारक की दृष्टि में धर्म और राजनीति भिन्न नहीं होती।

(प्रकाश 1920)

165. अली जनाब मिर्जा सुल्तान अहम साहिब

(भूतपूर्व उपायुक्त पंजाब)

स्वामी दयानन्द जी के दिल में जाति के लिए ही नहीं अपितु देश के लिए भी प्यार और लगन थी। वर्तमान स्थिति को देखकर उनके दिल तथा बुद्धि में यह बात समा गई थी कि जाति की नैया भंवर में है और किश्ती तट से दूर भयानक मंझधार में पहुंच चुकी है। वह उस मंझधार में बलपूर्वक कूद पडे जहाँ से उस किश्ती को निकालने वाला अन्य कोई नहीं था। इनके हृदय में महात्मा होने के कारण जाति के लिए प्रेम और जाति का दर्द था। इसलिए भय के वशीभूत नहीं हुए। बराबर आहवान करते, सोतों को जगाते चले गए। अन्त तक उनका बल कायम रहा। उनकी सारी आयु इस बात का प्रमाण है कि उनको जाति की भलाई, उन्नति एवं पुष्टि का जनून था। वह दूरदर्शी थे। उनका अस्तित्व बढ़िया था। उन्होंने बुद्धि और विचारों पर नियंत्रण रखा। वह प्रसिद्ध और कीर्तिमान थे। हम सब का कार्य यह है कि बिना मतभेद के इस महापुरुष का सम्मान करे और इस्लामी दृष्टिकोण से दूसरे धर्म के प्रसिद्ध नेताओं को हाथ से न जाने देवें।

166. श्रीमती खलीजा बेगम एम.ए. (बन्नू)

महर्षि स्वामी दयानन्द महाराज भारत माता के उन प्रसिद्ध नेताओं में से है जिनका नाम भारत के इतिहास में एक सितारे की भांति चमकता रहेगा। मैं यह कहे बिना नहीं रह सकती कि वह भारत के सच्चे सपूत थे और सारी आयु भारत माता की सेवा में गुजार दी। मैं बिना संकोच

कह सकती हूं कि भारत की स्थिति आज ऐसी न होती यदि महर्षि दयानन्द का जन्म न हुआ होता। वह स्वदेशी और स्वराज्य के कट्टर पक्षधर थे। उनको वर्तमान लहर का जन्म दाता कहा जाए तो उचित होगा वह निडर और सत्यवक्ता थे। सोते, जागते, चलते फिरते हर क्षण वह भारत माता की सेवा में लगे रहते थे। अंत में उन्होंने अपना जीवन देश के प्रति न्यौछावर कर दिया। यदि स्वामी दयानन्द जी का आगमन भारत में न होता तो हम महात्मा गांधी, महात्मा तिलक और लाजपत राय जैसे कार्यकर्ताओं और देशभक्तों के दर्शन न कर पाते। नेपोलियन और सिकन्दर जैसे राजा संसार में से बहुत गुजरे हैं परंतु स्वामी दयानन्द इन सबसे अधिक शक्तिशाली थे। उन्होंने अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण के फलस्वरुप ब्रह्मचर्य का अद्वितीय पालन किया। वह केवल धर्म की स्थापना करने वाले ही नहीं थे अपितु एक शक्तिशाली राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। उन्हेंाने अपने प्यारे देश के राजनीतिक जीवन में जान डाली।

(प्रकाश लाहौर 22-10-22)

167. मौलवी अबु रहमत हसन अलकादरी मेरठ

आप महात्माओं में अग्रणी थे, आप योगी थे। आप महात्मा बुद्ध की भांति अपना प्रमाण आप थे। भारत वर्ष में आपका होना अति उत्तम सिद्ध हुआ और हर सम्प्रदाय के इतिहास में सदा कायम रहेगा। आप के जगाने से सब सोए हुए जाग उठे और हिलने जुलने लगे। विरोधी और सहयोगी कार्यरत हो गए। आप पुरातन ऋषियों मुनियों का उत्तम उदाहरण थे। आप को ईश्वर प्राप्ति के सिवाय अन्य कार्य पसंद न था। और इसी में परमधाम को चले गए। मैंने पहली बार आप को गुजरांवाला में उस समय देखा था जब मैं मिशन स्कूल में पढ़ता था। वहां पादरी मैकी साहिब और पादरी अस्टमन से आपका आत्मा एवं प्रकृति पर शास्त्रार्थ हुआ था। दोनों ओर से जो प्रश्न उत्तर हुए वह मेरे दिल में अब तक अंकित है।

168. हकीम अहमद शुजा साहिब बी.ए.

मूर्त्ति पूजा के जो चिन्ह आज हिन्दू धर्म के कई सम्प्रदायों में पाए जाते हैं यह उन मूर्त्तियों की याद हैं जो पुरातन काल के लोगों ने परमेश्वर के गुणों के अनुसार बनायी थी। इनकी आयु एक या दो वर्ष की नहीं सदियों की है। धार्मिक निष्ठा के कारण लोगों का इन से लगाव पैदा हो गया और वह धीरे-धीरे एक स्थायी रुप धारण कर गया। इस प्रकार भारत में मूर्त्ति पूजा आरंभ हुई। समय अनुसार यह जड़ पूजा लोगों के मन और बुद्धि में घर कर गई और इनकी सहायता के बिना भक्ति असंभव प्रतीत होने लगी। रिवाज और रुचि से विवश होकर मंदिरों में मूर्त्तियां नज़र आने लगी। यह रिवाज पुराने होकर दृढ़ हो गए और एक पीढ़ी के पश्चात् दूसरी पीढ़ी की हिन्दू जाति ने इनकी रक्षा की। परन्तु ऋषि दयानन्द ने विचार किया कि अब समय आ गया है जब जाति को इस बनावटी पूजा से हटा कर वास्तविक पूजा की ओर लाया जाए। उन्होंने वेद शास्त्रों के अनुसार भक्ति का स्वरुप लोगों को प्रस्तुत किया। इसके लिए उनको शंकराचार्य एवं भीष्म पितामह की भांति कुर्बानी करनी पड़ी जो मानव जीवन की इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए एक असम्भव कार्य था। उन्होंने ब्रह्मचर्य को धारण किया। सुख-सुविधा वाले घर का त्याग किया ताकि वह दुनियादारी के कार्यों से आजाद होकर शुद्ध आचरण से धार्मिक दायित्व को निभा सकें। विवाह इसलिए नहीं किया कि वह शरीर से कमजोर थे या ऋषियों तपस्वियों की भांति उनको महिलाओं से घृणा थी। मैंने सुना है कि वह जब किसी महिला को देखते तो सम्मान से अपना शीश झुका देते। यह मातृशक्ति के सम्मान का प्रमाण है जिसको उनके विरोधी भी मानते थे। इस मनुष्य की हृदय की पवित्रता, विचारों की शुद्धता और आंखो में सम्मान की ओर ध्यान देवें। इनका शीश सिवाए परमात्मा के कहीं नहीं झुका परन्तु एक बार चार वर्ष की लड़की को देख कर सिर झुक गया। कारण पूछने पर पुकार उठे, देखते नहीं हो, मातृ शक्ति है (प्रकाश 7.11.1920) जिस ने तुम को जन्म दिया है।

169. पादरी अहमद मसीह देहली

जिस समय ऋषि दयानन्द ने कार्य आरम्भ किया था तो हिन्दुओं के अतिरिक्त ईसाईयों और मुसलमानों ने भी कड़ा विरोध किया था। इनके साथ स्वामी जी के कई शास्त्रार्थ हुए। लेकिन वह लोग स्वामी जी के कार्य को हानि नहीं पहुंचा सके। जो कार्य करोड़ों रुपये व्यय करने पर भी न हो सका वह स्वामी दयानन्द ने कुछ वर्षों में कर दिखाया। हिन्दु जाति स्वामी जी की ऋणी है। ऋषि ने केवल हिन्दु जाति को ही नहीं जगाया बल्कि दुनिया भर के धर्मों को होशियार कर दिया। यदि कोई व्यक्ति देश एवं जाति के लिए कुछ कर सकता है तो वह यह है कि वह जीवन देश जाति को अर्पण कर देवे। यही कार्य स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया।

(दीवाली के दिन देहली में स्वामी जी की पुण्यतिथि के अवसर पर)

170. मौलाना महफूज उल्हक साहिब देहली

(बहाई सम्प्रदाय के अनुयायी)

ऋषि दयानन्द स्नेह की मूर्त्ति थे। जिन लोगों ने उन पर पत्थर फेंके, गालियां दी उनको भी स्वामी जी ने गले लगाया। ऋषि दयानन्द ने यह पाठ पढ़ाया कि जो धर्म सत्य पर आधारित है। वह विश्व धर्म है। आपने बताया सत्य अनादि है और सदैव रहेगा। ऋषि ने कहा धर्म के विषय में बुद्धि से काम लो। उनका लक्ष्य यह था कि सारी दुनिया वेद के ज्ञान से प्रकाशित हो।

समाचार पत्र क्या कहते हैं

171. स्वराज्य मद्रास

यदि स्वामी दयानन्द एक सुधारक ही होता तो उसकी पदवी हिंदु महात्माओं में अद्वितीय न होती। लेकिन वह केवल एक सुधारक ही न

था परन्तु धर्म के संस्थापक के रूप में उसकी पदवी बुद्ध, महावीर और शंकराचार्य जैसी थी। उसने न केवल धार्मिक विचारों को नया जन्म दिया बल्कि अपने अनुयायियों की विचारधारा को इस प्रकार बदल दिया कि एक नई जागृति पैदा हो गई। मेरी दृष्टि में दयानन्द एक अवतार ही न था अपितु संसार के बढ़िया अवतारों में से एक था। इसने एक चेतना पैदा की जिससे हिन्दु जाति में अमूल परिवर्तन हुआ। यह एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य है जिसके सम्बन्ध में शंकराचार्य के सिवाए कोई अन्य दावा नहीं कर सकता।

172. तपाका बंगला कलकता

स्वामी दयानन्द जब धर्म प्रचार के लिए कलकत्ता आए थे तब चारों ओर इनकी ख्याति होने लगी। क्या बच्चा, क्या बूढ़ा क्या महिलाएं इनके दर्शन करने और इनके विचार सुनने को बहुत उत्सुक थे। इनके उपदेश करने की शक्ति एवम् तर्क शास्त्रों के ज्ञान के अनुसार दलील देने पर लोग आश्चर्यचकित होने लगे। भारी संख्या में लोग इनके पास आकर धर्म सम्बन्धी अपने संशय मिटाकर संतुष्ट हो कर वापिस जाते। स्वर्गीय श्री बाबु केशव चन्द्रसेन ने ऋषि दयानन्द का बड़ा सम्मान किया। केशव जी के मकान पर हमने जब स्वामी जी का पहली बार उपदेश सुना उस दिन हम ने एक नई बात देखी। संस्कृत भाषा में उपदेश देने लगे। संस्कृत भाषा में ऐसा सरल और मधुर उपदेश दिया जो हमने पहले कहीं नहीं सुना था। संस्कृत से जो अनभिज्ञ मूर्ख है वह भी उपदेशों को समझने लगे। एक अन्य बात से भी हम बहुत हैरान हुए। अंग्रेजी भाषा न जानने वाले एक हिन्दु सन्यासी के मुंह से धर्म और समाज के बारे में न्याय संगत उपदेश कभी नहीं सुना था।

173. हिन्दु पैट्रीआट

(17 जनवरी 1870) कहानियों के अनुसार हिन्दुओं की मूर्त्ति पूजा एवं कट्टरता का शक्तिशाली दुर्ग शिव के त्रिशूल पर खड़ा है और इस

कारण उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अब गुजरात के एक ऋषि के सामने आने पर वह दुर्ग नींव से हिल गया है। इस सम्मानित व्यक्ति का नाम दयानन्द सरस्वती है। ब्राह्मणों के वर्तमान भक्ति के तरीके को देखने आया है। दयानन्द और पंडितों के मध्य दीर्घ समय तक शास्त्रार्थ होते रहे। लेकिन अपने सब शास्त्र ज्ञान के बावजूद वह हार गए। पंडितों को जब यह ज्ञात हुआ कि शास्त्रार्थ में वह इनका मुकाबला नहीं कर सकते तो अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए पापाचार पर उतर आए। उन्होंने ऋषि को पुराणों का एक पन्ना दिया। जिस में मूर्त्ति पूजा के बारे में लिखा था। सरस्वती जी को वह कागज देकर कहा यह वेदों के मन्त्र हैं। जब वह उसको पढ़ रहे थे तो पंडितों की मंडली ने तालियां बजाई यह बताने के लिए कि धार्मिक शास्त्रार्थ में पंडित हार गया है। इस सम्मानित पंडित की ऋषियों जैसी आकृति एवं बच्चों जैसी सरलता एवं प्रसन्नता ने हमारे अंदर ऐसा प्रभाव डाला जो कभी दूर नहीं हो सकता। जब वह उपदेश करने लगे तो उनके मुख से मोती गिरने लगे। उसने जो परामर्श दिए उससे हमें विश्वास हुआ कि भारत का सतयुग दूर नहीं। वह हिन्दुओं का सदैव धन्यवाद प्राप्त करेंगे यदि वह हिन्दु धर्म में जो त्रुटियां आ गई हैं उनको दूर करें और वैदिक धर्म को शिक्षित लोगों का धर्म बनाये।

174. ठाकर मन्जीत सिंह राठौर

(वकील एम.एल. सी. देहरादून)

स्वामी दयानन्द उत्कृष्ट विद्वान थे। उनकी विद्वता की सराहना पश्चिम के बुद्धिजीवी वर्ग ने की है। स्वामी दयानन्द एक स्वतन्त्र विचार धारा वाले, दृढ़ संकल्प वाले, देशभक्त एवं समाज सुधारक थे। 19वीं सदी में उन्होंने हिन्दु जाति के लिए जो कार्य किया वह 17वीं शताब्दी में भारत में गुरु गोबिन्द सिंह ने किया था। दक्षिण में महाराष्ट्र केसरी श्री शिवाजी ने किया था। आप पराधीनता के कट्टर विरोधी थे चाहे वह धार्मिक हो या सामाजिक।

इस को वह सहन नहीं कर सकते थे कि लोग अन्धविश्वास में ग्रस्त रहें या लकीर के फकीर बने रहें निसन्देह वह कर्मवीर थे और उन्होंने ऐसा वायुमंडल पैदा किया जिससे स्वराज्य के पौधे की जड़ जम गई।

175. बरादरे हिन्द 17 जुलाई 1877

ब्रह्मसमाज के धार्मिक सुधार के पक्ष में जिसका लक्ष्य मूर्ति पूजा को समाप्त करना है और संसार में परमात्मा की भक्ति को फैलाना है वह व्यक्ति एक देवता है जिसकी प्रशंसा जितनी की जाए कम है। केवल धार्मिक सुधार ही नहीं बल्कि समाज में बाल–विवाह जैसी फैल रही बुराईयों को दूर करने में संलग्न हैं। महिलाओं की शिक्षा एवं उनकी स्वतन्त्रता को चाहता है। इनका मत है कि जब तक शिक्षा नहीं फैलेगी इनको कैद से छुटकारा नहीं मिलेगा और तब तक देश में उन्नति असंभव है। इनका ध्येय अज्ञान अंधकार को दूर करना, शिक्षा प्रणाली चलाना, राष्ट्रीय एकता एवं शिष्टाचार को बढ़ाकर एक नमूना पेश करना है जिससे जन साधारण की भलाई हो।

176. महाशय खुशालचन्द जी खुरसन्द

(भूतपूर्व सम्पादक आर्य गजट लाहौर)

प्रभु के राज्य को संसार में फैलाने के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी और इसका नियन्त्रण आर्य समाज के हाथ दिया। स्वामी दयान्द की छाप मुझे सब के दिल में दिखाई देती है। इस वर्ष जब हम किसी नेता या विद्वान के पास गए तो उसको स्वामी दयानन्द का प्रशंसक पाया। लोकमान्य तिलक से बात हुई तो वह कहने लगे कि स्वामी जी के दिल में देश और धर्म की ज्वाला प्रज्जवलित थी। महात्मा गांधी से बात हुई तो वह कहने लगे कि यदि ऋषि दयानन्द का कोई अपमान करेगा तो मैं सत्याग्रह करुंगा। सर एडबर्ड मैकिंगन जो वर्तमान में पंजाब के शासक हैं का भी यही विचार है उनका कहना

है कि भारतवर्ष को पुनर्जीवित करने वाला आर्य समाज है। इंगलैंड की संसद में सदस्य रामसे मैक्डान्लड ने एक वक्तव्य में 1915 में कहा था कि मैं आर्यसमाज को भारत में राष्ट्र एवं आत्मिक जीवन प्रदान करने वाला श्रेष्ठ साधन मानता हूँ।

(आर्य गजट 12.2.1920)

177. श्री महाशय कृष्ण जी,

(भूतपूर्व सम्पादक समाचार पत्र प्रकाशक लाहौर)

आर्य समाज क्या है? दयानन्द का मिशन है। दयानन्द का मिशन क्या था? सकल विश्व में सत्य का प्रचार करना। क्या संसार में ऐसा विधान है, सेना का या कोई और जो सत्य के प्रचार को रोक सकता हैं क्या कोई इस सत्य को झुटला सकता है कि परमात्मा एक है और जब से वह है तब से उसका ज्ञान है उसका ज्ञान ही है जो लोगों का मार्ग-दर्शन करता है। इसलिए इस ज्ञान का सृष्टि के आरम्भ से होना अनिवार्य है। जो ज्ञान परमात्मा की ओर से मनुष्य जाति को दिया गया है आर्य समाज उस को वेद कहता है। किस विधान में यह शक्ति है कि वह इस सत्य को नकार सके? मनुष्य अपने ही कर्मों से उन्नति करता है और अपने कर्मों से गिरता है। दुनिया भर का अनुभव इसको मानता है। वह दिन गए जब कोई बुद्धिमान यह कह सकता था कि परमात्मा के राज्य में सिफारिश का स्थान है। आज तो कर्म का राज्य है। दयानन्द का मिशन रुक नहीं सकता। दयानन्द का मिशन तब रुकेगा जब सत्य अपना प्रभाव छोड़ देगा और सृष्टि के नियम अपना कार्य करना छोड़ देंगे। दयानन्द के मिशन का सत्य वायुमंडल में, पानी की लहरों में, बिजली में विद्यमान है। हां कोई कायर आर्य समाजी कष्ट से घबराकर यह समझ लेंवे कि आर्य समाज का कार्य रुक गया तो दूसरी बात है। आर्य भाईयों एक मिनट के लिए भी निराशा को पास न आने दो। कोई दुनिया की शक्ति इस बाल ब्रह्मचारी के लगाए पौधे को उखाड़ नहीं सकती।

178. महाशय देश बन्धु

(सम्पादक तेज देहली)

आप प्रसिद्ध आर्य स्तम्भ महाशय शादी राम जी पानीपत के सुपुत्र है जिनके लेख आर्य मुसाफिर जालंधर में प्रकाशित होते है। 22.2.1933 जिन लोगों ने ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कार्य का पक्षपात रहित अवलोकन किया है वह इस तथ्य की पुष्टि किए बिना नहीं रह सकते कि वह एक महान, असाधारण व्यक्त्ति थे जिनके कार्य का प्रभाव केवल हिन्दु समाज या धार्मिक दुनिया तक ही सीमित नहीं था। बल्कि उन्होंने गत पचास वर्ष में जीवन के हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है चाहे वह सामाजिक हो अथवा धार्मिक या राजनीतिक। जो कार्य आरम्भ हुए वह ऋषि दयानन्द की शिक्षा के अनुकूल थे। धार्मिक जीवन में महान क्रान्ति आई। समाज सुधार को ठीक दिशा दी। राजनीति का कार्य आरम्भ किया। ऋषि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म में बुद्धि का प्रयोग सिखाया। अन्धविश्वास को समाप्त किया। धार्मिक रीति-रिवाज में मार्गदर्शन किया और कहा कि समयानुसार परिस्थितियों में परिवर्तन होना चाहिए। उन्होंने सब से पूर्व स्पष्ट घोषणा की कि विदेशी राज्य चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो वह अपने देश में अपने राज्य से बेहतर नहीं हो सकता। विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिए स्वदेशी के शस्त्र का प्रयोग सिखाया। अपने देश में अपनी भाषा की महानता को जताया। अछूत उद्धार के लिए प्रेरित किया और वर्णों का विभाजन गुण कर्म स्वभाव के आधार पर करने का संदेश दिया। इनके जीवन पर जितना आप दृष्टिपात करें आप को सत्य दिखाई देगा। ऋषि दयानन्द एक सफल पथ-प्रदर्शक था।

179. गुजरात मित्र सूरत

स्वामी दयानन्द वेद विद्या का यथार्थ संदेशवाहक था। हर एक व्यक्ति यह अनुभव करेगा कि भारत उसके उत्साही उपदेश, सत्य भाषण, दृढ संकल्प, सरलता, देश प्रेम के उन विचारों से वंचित हो गया है जिनके द्वारा वह देश को अज्ञानता, झूठ ब्रह्म पूजा और मूर्ति पूजा की खाई से बाहर निकालना चाहते थे।

180. इंडियन स्पैक्टेटर 18.11.1883

सहजानन्द या नारायण स्वामी के पश्चात् गुजरात ने स्वामी दयानन्द जैसा सुधारक पैदा नहीं किया। विद्या, अनुकूल विचारधारा और लोकप्रियता में स्वामी दयानन्द सहजानन्द से अधिक आगे था। उसके समकालीन जो उसको शंकराचार्य के साथ का मानते हैं वह ठीक है। प्रभु की प्रदान की हुई शक्ति एवं विश्वास के कारण उसने हमें इतना लाभ पहुंचाया कि भविष्य में आने वाली हमारी पीढ़ियां उसकी कृतज्ञ रहेंगी।

181. इंडियन एम्पायर 4.11.1883

स्वामी दयानन्द के देशवासी उसकी महानता, शास्त्रार्थ की शक्ति तथा अटल कार्य कुशलता को याद रखेंगे।

182. इंडियन मैसन्जर 11.11.1883

आज तक कोई ऐसा व्यक्ति उत्पन्न नहीं हुआ जो स्वामी दयानन्द से अधिक मूर्त्ति एवं ब्राह्मण पूजा से घृणा रखता हो और जिसने पूरी शक्ति से इनका विरोध किया हो। परमेश्वर के इस सत्यवादी भक्त ने अंतिम प्रार्थना में अपने उत्कृष्ट मिशन को "प्रभु की इच्छा" पर छोड़ दिया। काश हमारे सारे कार्यों में यह भावना समा जाए।

183. देश हितैषी अजमेर

स्वामी जी के देहान्त पर इतनी तारें और पत्र प्राप्त हुए कि यदि उनको समाचार पत्र में छापा जाए तो इस कार्य के लिए एक वर्ष का समय चाहिए।

184. इंडियन मिरर कलकता

9 मार्च 1873 को पंडित दयानन्द सरस्वती जी ने बरहान गौड़ के नाईट स्कूल में वेदों पर उपदेश दिया। वहां बड़े प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। वहां उन्होंने तीन घंटे से अधिक समय सरल स्पष्ट संस्कृत में

व्याख्यान दिया जिसमें परमेश्वर के बारे, जाति पाति से हानि और बाल विवाह की बुराईयों को स्पष्ट किया। इनके उपदेश से ज्ञात होता है कि वह विद्वान ही नहीं अपितु अत्यन्त विचारवान व्यक्ति हैं। इनका तर्क बड़ा सराहनीय है। आपके उपदेश में शक्ति एवं निडरता दिखाई देती है। हमें विश्वास है कि कलकत्ता के बुद्धिजीवी लोग इनके भविष्य में होने वाले उपदेशों को सुनने जाया करेंगे।

185. समाचार पत्र कोहेनूर (16 जून 1877)

स्वामी जी के प्रयत्न का परिणाम इन के अनुयायियों के अतिरिक्त विरोधियों पर बहुत पड़ा है। जहां पढ़े लिखे लोग इनके वशीभूत हो गए है वहां एक उल्लेखनीय प्रभाव यह पड़ा है कि उस सप्ताह एक व्यक्ति ने अपनी ठाकरों की चौकी भरे बाजार में पटक दी।

186. क्रिश्चियन इन्टैलीजेन्सीज (मार्च 1870)

इस सुधारक की ख्याति, जिसने कल बनारस के सारे नगर को हिला दिया है दूर-दूर तक फैली हुई है। इस सुधारक का नाम दयानन्द सरस्वती स्वामी है। यह गुजरात काठियावाड़ के एक ग्राम का नागरिक है। यह बड़े कद वाला, सुड़ौल और सुन्दर पुरुष है। उनके मुख पर विद्वता का चिह्न है। संस्कृत बड़ी स्पष्ट बोलते है शास्त्रार्थ में न्याय और दलील को हाथ से नहीं जाने देते। इनका सारा कार्य तर्कपूर्ण होता है। वह अपने विरोधियों को बिना रोक-टोक बोलने की अनुमति देते है। इनका मन, बुद्धि बलशाली हैं।

187. बन्दे मातरम लाहौर

स्वामी दयानन्द स्पष्ट रुप में स्वतन्त्रता के भविष्य वक्ता थं। वह दासता की जंजीरों को तोड़ने आए थे। वह स्वयं स्वतन्त्र था इस कारण वह दूसरों को स्वतन्त्रता दे सकता था। जो स्वतन्त्रता आज भारत को स्वामी दयानन्द के प्रताप से प्राप्त हुई है इस का वर्तमान समय साक्षी है। जिस समय भारत की स्वतन्त्रता का इतिहास लिखा जाएगा उस समय स्वामी दयानन्द का नाम सब से पूर्व स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।

188. प्रोफेसर इन्द्र एडीटर

(समाचार पत्र अर्जुन दिल्ली)

ऋषि दयानन्द ने अपनी पुस्तक लिखते समय सरल साधारण भाषा का क्यों प्रयोग किया? कारण स्पष्ट है क्योंकि वह अपने विचार सामान्य जनता तक पहुंचाना चाहते थे। पंडित लोगों तक नहीं। ऋषि का विचार था कि ज्ञान का कोष पंडित लोगों ने अपने पास छिपाकर रखा हुआ है और इस कोष का मुंह सब लोगों पर खोल दिया जाए। यह एक बड़ा लक्ष्य था जिस की पूर्ति के लिए उन्होंने सरल भाषा का प्रयोग किया। दूसरा प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" के लेखक का ज्ञान इतना विशाल था कि इस के ग्रंथ को अपने समय का उत्कृष्ट और बढ़िया ग्रन्थ माना जाए। आप इस ग्रन्थ को पढ़ें और विचार करें कि लेखक के पास पुराने धर्म साहित्य का कितना खजाना था। वेद, ब्राह्मण, सूत्र, व्याकरण साहित्य का कोई विषय नहीं जिसका उल्लेख ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में न हो। यह कहना सत्य होगा कि सायनाचार्य की मण्डली को छोड़कर यदि कोई ऐसा व्यक्ति हुआ है जिसने वेद मंत्रों, श्लोकों, सूत्रों की दिव्य रचना की हो तो वह ऋषि दयानन्द था। वेदों, उपनिषदों, तथा व्याकरण आदि पर ऋषि दयानन्द की पकड़ बढ़िया थी। इनके ग्रंथों में विचार अति उत्तम थे। इसीलिए प्रोफेसर मैक्समूलर ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को 19वीं शताब्दी की सबसे बढ़िया एवं उत्तम पुस्तक कहना जरुरी समझा।

(प्रकाश लाहौर 1920 ऋषि अंक)

189. श्री कालिनाथ राय

(सम्पादक समचार पत्र ट्रिब्यून लाहौर)

उत्तरी भारत में आर्य समाज ने सब से पहले आत्मनिर्भरता की घोषणा की। आर्य समाज के प्रतिष्ठित सम्मानीय संस्थापक का सिंह नाद था कि वेदों की शरण लो। सुधार पवित्रता और शक्ति को एक स्थान पर इकट्ठा करने का साधन बना। इस आवाज ने जो एक जादूगर के छड़ी

से निकली हो हिन्दू जाति को बचा लिया। यह आवाज जहाँ हिन्दुओं को उचित लगती थी वहां वह पंजाब प्रान्त और देश के दूसरे लोगों पर भी वैसा प्रभाव डालती थी। सम्भव है इस अपील को बहुत से भारतीयों और सरकारी अधिकारियों ने ठीक न समझा हो। एक ने विचार किया कि यह मुसलमानों और ईसाईयो के विरुद्ध है तो दूसरे ने यह बात खुलकर न कही कि वह अंग्रेजों और विदेशी सरकार के विरुद्ध था। सत्य तो यह है कि इन दोनों में से कोई भी ठीक न था। सबसे पहले तो वह वेदों का दृढ़ विश्वासी था। वह राष्ट्रीय सहयोग, राष्ट्रीय सम्मान और आत्म-विश्वास का मानने वाला था। आज तक आर्य समाज जिस की नींव स्वामी जी ने रखी और उसके समस्त अंग उपरोक्त लक्ष्य की पूर्ति के लिए सराहनीय कार्य कर रहे है। इसलिए मैं आर्य समाज के अमर संस्थापक जो उत्तम राजनीतिक नेताओं में से एक थे का दिल से आभार प्रकट करता हूँ।

कुछ प्रसिद्ध कवियों के विचार

190. श्री लाला लाल चन्द फलक लाहौर

मरहबा स्वामी दयानन्द हिन्द के रुहे[1] खां
नाजशे[2] कौमोवतन फरव़रे[3] जमन
फखरे[4] जमा
छा रही थी हिन्द पर जिस वक्त गफलत[5] की घटा
अबरे जुल्मत[6] की नहूसत[7] और जहालत की घटा
छुप रही थी जिस घड़ी
इल्मों हुनर की रोशनी
जहल[8] के हाथों थी
मुश्किल कौम के सर पर बनी
था हजूमे यास[9] भारत के दिले ग़म नाक पर

सर नगूं था आर्यन नेशन का झंडा

खाक पर

हो रही थी धर्म से बेमुख ऋषि सन्तान जब
बन रहे थे नौ जवां नाने वतन कृस्तान[10] जब
गुलशने भारत में थी फसले खिजां छाई हुई
रो रही थी बाल विधवायें बहुत जारो कतार
दिल हिलाती थी अनाथों बेनवाओं की पुकार
बेखबर थे अहले किश्ती
सो रहा था नाखुदा[11]
ताक में थी मौजे दरिया और तूफां बपा
इस तबाही से बचाना जो हुआ भददे नज़र
ईश्वर ने रहम फरमाया हमारे हाल पर
धर्म की रक्षा की खातिर कौम के ए जान निसार
हो गई दुनिया में तेरी ज़ात अकसद[12] आशकार[13]।
ले गया तू धर्म की बहती हुई किश्ती को पार
मरहबा तुझ को तेरी हिम्मत को फख़्रे रोज गार
हो चुका था वकफ पामाली जो भारत का चमन
सींच कर फिर कर दिया तूने इसे रशके अदन
कालबे भारत में आया बन के ताज़ा जान तू
कर गया कायम मुकदस वेद की फिर शान तू
छेड कर यां दास्ताने शौकते अहदे कुहन[14]
बांध दी तूने हवाए अज़मते[15] अहदे कुहन
फैज से तेरे है घर-घर में हवन अब हो रहा
गूंजती है साहिले गंगा पे वेदों की सदा
किस कदर थी तेरी हिम्मत किस कदर रोबो जलाल

इस का वर्णन है कठिन इस का बयां अमरे महाल[16]

लाख टकराया करे सर अपना सैले रजगार[17]

तेरी शोहरत की चट्टान हरदम रहेगी इस्तवार

आस्माने कौम के मतला पे ता रोजे हिसाब

तेरा नाम नेक चमकेगा मिसाले आफताब[18]

तेरी अजमत[19] की कहानी होगी घर-घर में बयां

गीत गायेंगे तेरी तकदीस[20] के पीरों[21] जवां

(1) प्राण (जान) (2) कृपा (3-4) विश्व (5) आलस्य (6) अज्ञान (7) महूंस (8) अज्ञान (9) नउमेदी (10) ईसाई (11) पतवार (12) पवित्र (13) ज़ाहिर (14) भूतकाल (15) शान (16) कठिन कार्य (17) समय की लहर (18) सूर्य (19) बड़ाई (20) पवित्रता (21) बूढ़े (22) युवक।

191. गुल अम्बालवी

आहा ये नाम प्यारा किस का जबां पे आया।

रहमो खुशी का दरिया उमड़ा जहाँ पे आया

भारत की नाव जिस दम चक्कर में आ रही थी

लाइल्मी[1] की बदलियां हर तरफ छा रही थी

इस्लाम और मिशन की चांदी बना रही थी।

पर हिन्दु इजम की वह हस्ती मिटा रही थी

भाई हमारे लाखों इस से निकल रहे थे चोटी कटा-कटा कर मजहब बदल रहे थे

हर तरफ हिन्दुओं पर जब वार हो रहे थे

और एतराज हां! बेशुमार हो रहे थे अगयार[2]

हर तरह से होशियार हो रहे थे

परदा ज़हल[3] के बायस नाचार हो रहे थे।

जब नील कंठ पंडित ईसाई हो चुके थे

दुश्मन हमारे अपने ही भाई हो चुके थे

उस वक्त एक ऐसा शेरे बबर पुकारा

सब चुप हुए मुखाफ़िल न दम किसी ने मारा

एकदम में हो गया था मैदान साफ सारा

आया मुकाबला पर जो कोई सो ही हरा

हर चार सु स्वामी की धूम पड़ गई थी।

झंडी पाखन्ड खंडन हरिद्वार गड़ गई थी

तक्कार[4] चर्च अक्सर काफूर[5] हो गए थे

और लैक्चरार मुसलिम सब दूर हो गए थे।

बादल अविद्या रुपी मस्तूर[6] हो गये थे

हिन्दू के थे जो आकल मसरुर हो गए थे

वैहसो मुबाहिसा का मैंदा उलट गया था

मैदों उल्ट गया था

काई सा फट गया था

यह कौन शेर नर था, यह कौन शेर नर था

जिसने बचाए हिन्दु कैसा रिफार्मर था

कैसा गुणी था आला कैसा वह जोरवर था

मैदान में अकेला जो कूदा बेखतर था

या नाम नामी उसका क्या महर्षि दयानन्द

दिलचस्प और प्यारा नसब[7] ज़बस[8] खुश[9] आईन्द।

(1) अज्ञानता (2) विरोधी (3) अज्ञानता (4) उपदेशकर (5) गायब (6) ओझल (7) वंश (8) हमेशा (9) प्रसन्नचित

192. पंडित नारायण प्रसाद बेताब (औरंगाबादी)

नये सर से भारत में हलचल मचा दी
अविद्या की विद्या ने हस्ती मिटा दी
जहाँ सामने आए वादी, विवादी
वहीं मूँह पर मोहरे खामोशी लगा दी
गज़ब धाक[1] बैठी सरे अन्जुमन थी
न कुछ मशरकों को मजाले सुखन थी
जो गिरते थे उनको ऋषि ने संभाला
पड़े थे जो गारों में उनको निकाला
"यथे मां वाचं" का देके हवाला
किया शूद्रों को भी अदना से आला
मुसावात का हक दिया मर्दो ज़नको
निकम्मा न समझा किसी उज़वे[2] तन को
मजाहिब हैं जितने भी हिन्दुस्तान में
पड़े बेखर थे यह खाबे[3] गिरां में
मगर था यह जादू ऋषि के बयाँ में
खड़े हो गए कान सब के जहाँ में
उड़ी भाप से जब कि हांडी की चपनी
तो हर एक को पड़ गई अपनी अपनी
न था खौफ हम को गुनाह के अमल में
समझते थे यह मैल सा है बगल में
लगा लेंगे गोता जो गंगा के जल में
तो हो जाएंगे दूर सब पाप पल में
ऋषि ने कहा वक्तोज़र[4] यूं न खोना
कि मुमकिन नहीं जीव[5] को जल से धोना

(1) पूर्व के वासी (2) अंग (3) गहरी निद्रा में (4) समय, धन (5) आत्मा

193. महाशय चिरंजी लाल जी प्रेम

(सम्पादक समाचार पत्र आर्य मुसाफिर)

किसी के गम में मर जाना
किसी का दर्द खाह होना
नहीं है काम हरइक का मुहब्बत में फिदा होना
निशाने गैर की खातिर निशाँ अपना मिटा देना
खरीदारे मर्ज हो कर मेरे गम की दुआ करना
उठा हो हर तरफ़ तूफ़ान जब बहरे[1] हवादस में
खुशी से कूद पड़ना डूबतों का ना[2] खुदा होना
नहीफो[3] ज़ार बेकस[4] बेमदद का दस्तगीर[5] होना
न हो जिस का कोई मरहम उसी का आशिना होना
मुसीबत रंजोगम, गाली गलौच और धमकियाँ सहना
मगर गुमकरदा[6] राह का हमेशा रहनुमा होना
बताओ इस से बढ़कर और क्या था देवताओं में
वहीं[7] खां नबी[8] नौ और मसजूदे[9] खुदा होना
महाराज दयानन्द देवता थे देवताओं के
इन्हीं का काम था यूं देवताओं पर फिदा होना

(1) घटनाओं का समुन्दर (2) मल्लाह (3) कमजोर (4) जिसका कोई नहीं (5) सहारा (6) भटके (7) हितैषी (8) मनुष्य (9) पुजारी (10) कुरबान

194. महाशय कांशी नाथ फिदा

ऋषि ही इन्सान बना गया है कि देशभक्ति सिखा गया है
अधर्म से दिल हटा गया है वह वेद विद्या पढ़ा गया है।
रियाजे भारत में गुल खिला था वह तोहफ़ा कुदरत से इक मिला था।

खिजां के झोंके, बुरा हो तेरा तू आके उस को सुखा गया है
ऋषि के प्रचार सात साला ने हम को कैसा दिया संभाला
तिमिर[1] के अंदर किया उजाला विचित्र दीपक जला गया है।
श्राद्ध के मानि हम थे भूले जो यज्ञ का अर्थ हम थे चूके
जो भाष्य करने के थे तरीके वह स्वामी हम को बता गया है।
ऋषि था उन्नीसवीं सदी का बजाया हर सिमत जिस ने डंका
बताओ है और कौन ऐसा जो ऐसी हलचल मचा गया है
वह जैमिनी जी पे मरने वाला कपिल का सत्कार करने वाला
वह धर्मयुद्ध में न डरने वाला फिदा करिश्मा[2] दिखा गया है।
(1) अंधेरे (2) जादू।

195. श्रीमान कंवर सुख लाल सिंह जी मुसाफिर

बागबाँ बन के दयानन्द न जो आ जाता
गुलशने हिन्द कड़ी धूप से मुरझा जाता
खाबे गफलत से आकर हम को जगाता न ऋषि
सौंप इस्लाम व ईसाइयत का हमें खा जाता
हम ही मिट जाते जमाने से मिसल[1] उनका
अपनी गफलत से हरीफों[2] का भला किया जाता
खून से इस को ऋषि ने जो न सींचा होता
धर्म का वृक्ष इसी वक्त यह कुम्हला जाता
मिसल अंधों के अंधेरे में भटकते फिरते
रास्ता हक[3] का अगर हम को न दिखला जाता
धर्म पर जान न कुर्बान जो स्वामी करता
नाम मिट अपना मिसाले नक्श[4] पा जाता
लूट ले जाते अंधेरे में खजाना दुशमन

सोतों का हाथ पकड़ कर जो न बिठला जाता

जान गर मिसले हकीकत[5] तू मुसाफिर देता

मौत में जिंदगी का तुम को मज़ा आ जाता।

(1) गायब (2) विरोधी (3) सत्य (4) पांव की चिन्ह (5) हकीकत धर्मों।

196. मुंशी बाग उल्दीन फरदोस अमृतसरी

वाह तेरे कुर्बान दयानन्द क्या कहुं तेरे वसफ़[1]

थी अजब तासीर तेरीं प्रेम की गुफ्तार में

भाग निकली सब जहालत की स्याही एक दम

बनके तू खुरशीद चमका धुंध और अंधकार[2] में

बन गई वेदों की अज़मत खुल गया पर्दा तुहीद[3]

तेरा आना ही मुबारक हो गया संसार में

जाग उठे भाग्य भारत के तेरे दम कदम से

नारा ऐ तोहीद[4] गून्जा दामने कोह[5] सार में

ज़ो न होता था किसी से कर के वह दिखला दिया

गोया वाहदत[6] का सबक हर एक को सिखला दिया ।

(1) गुण (2) अंधेरा (3-4) भक्ति (5) पर्वत (6) अध्यात्मिक।

197. महाशय राज बहादुर शरर दिल्ली

गूंज नव जीवन की नाची इनके वैदिक नाद पर

दिल न्यौछावर हो गए शुभ धर्म के प्रसाद पर

जान खोई थी ऋषि ने धर्म की मर्यादा पर

फूल श्रद्धा ने चढ़ाए आज उनकी याद पर

वेद मंत्रों का उन्होंने बोल बाला कर दिया

ओउम को भारत के हित अमृत का प्याला कर दिया
धर्म के दीपक का मन्दिर में उजाला कर दिया
दिल को मेरे ए शरर शिव का शिवाला कर दिया।

198. मुन्शी चन्द्रभान कैफी दिल्ली

हुआ घोर कलयुग में वेदों का हामी
जहां में मिली उसको शेहरत दवामी
हवैदा[1] हुई जब कि सूरत जलाली[2]
उतारी फरिश्तों ने झुककर सलामी
उसे आर्यावर्त्त की पाक भूमि
समझती थी परमात्मा का प्यामी[3]
अदब से झुकाते थे सर उसके आगे
फिरंगी व हिंदी व रोमी व शियामी
इरादे में दृढ़ता गज़ब थी
गज़ब थी ख्यालाते पुख्ता में आई न खामी
वो फौके उल[4] बशर ब्रह्मचारी रहा है
न कि बालपन से नफस की गुलामी[5]
मोहब्बत के ज़ज़बों से दिल खींचता था
जहे नेक खूई[6] जहे खुश कलामी[7]
लिया ओउम् के सब को झंडे के नीचे
मिटा दी मज़हब की बद इन्तजामी
खलायक का उद्धार करने को आया
ज़माने में रोशन है इसमें गरामी
दयानन्द स्वामी, दयानन्द स्वामी।

(1) पैदा (2) तेज़ (3) संदेश वाहक (4) श्रेष्ठ पुरूष (5) इन्द्रियों का नौकर (6) मीठा बोलना (7) नाम।

199. मास्टर रौनक राम शाद

वो आया यहां रहमते[1] किबिरया से
कि थी काबिले रहम हालत हमारी

तबाही के मुंह में चले जा रहे थे बचाया पिला कर हमें वेद अमृत
न क्यों नाम पर इसके कुर्बान हो हम न क्यों इसके ममनून एहसान हो हम
कि इस ने अता की हमें जिन्दगानी वगर ना थी मुदत से मुर्दों की सूरत
महर्षि दयानन्द जी की सना[2] में हजारों ही दफ़तर लिखे जा रहे हैं
नहीं एक मदहा ऐशाद तूं ही, जमाना ही इस का तो मदमतरा[3] है।

(1) प्रभु कृपा (2) प्रशंसा (3) गुण गाने वाला

200. बेली राम जी राम कश्मीरी

दयानन्द तू था दया का समुन्दर
दयानन्द तेरा दिल दया का था सागर
दयावान था कौन तेरे बराबर
दया तुझ में थी तू दया का था जौहर
दया का दीया था तेरा जामे हस्ती
तेरी हर अदा से दया थी बरसती
किया वेद विद्या का प्रचार तूने
किया मातृ भूमि का उद्धार तूने
किया सोने वालों को होशियार तूने
किया हिन्द वालों पे उपकार तूने
किया नये जीवन का संचार तूने।
किया आदि ग्रन्थों का सत्कार तूने
नई शाख अपनी न कोई निकाली
बिना नये मज़हब की यहनी न डाली

जो वेदों का मत था की उस की बहाली
वजूदे जहालत की, की पायमाली
अगर मीन, मेख, इसमें कोई निकाले
तो उसकी खुशी चांद पर खाक डाले
दयानन्द भारत का हितकर था जैसा
न ढूंढे से कोई भी ऐसा मिलेगा
इसे गम अगर था तो भारत का ही था
इसे अपने प्राणों से भारत था प्यारा
दयानन्द भारत के दुख से दुखी था
दयानन्द भारत के सुख से सुखी था।

201. स्व. मीर हैदर शरीफ हुसैनी

(हैदराबाद दक्कन)

ए मम्बाए जौदो[1] करम ए आलम वाला हमम्म
आली मकां साहिब हशम ए स्वामी मौजिज रकम
ए हादी बा इज्जो शान[2] शान वाला ए स्वामी वाला निशाँ
ए बाएसे आरामे जां ए दा[3] फा ए रन्जो अलम
ए वजए तू इमाने मन ए उल्फत तू जाने मन
ए पन्द तू दामाने मन इकनू[4] बे मतलब आमदम
तू है हमारा पैशवा तूं है हमारा रहनुमा
तू है हमारा नाखुदा[5] इक चाकर कमतर हैं हम
हम सब को थी ए नेक खूं तेरे सुखन की आरजू
करते हैं तेरी गुफ्तगू लहजा बलहजा दम बदम
वो ब्रह्मचारी बा सफा वो हामिए हुक्में खुदा
तुम सब को था ललकारता आ जाओ सब मिल कर बहम्म

मैदान में वो शेर नर तिन्हा खडा था बेखबर
आ जाए जो खम ठोक कर था कौन ऐसा ताजादम।
हो पीरवाने मुस्तफा नेचरी या दहरियां[6]
ईसाई या इनके सिवा बौद्ध या हिन्दू धर्म
अल मुख्तसर अहले रिया[7] इसके मुकाबिल आये क्या
माकूल सब को कर दिया हुज्जत ने इस की यक कलम
वो हामिए इलहाम था उस का यही इक काम था
मसरूफ़ सुबह शाम था इस काम में वो ज़ी हशम
वो बादशाहे कौम था वह खे़र खाये कौम था
वो अज्जोजाह कौम था कौम इस पर करती थी सितम[8]
आलम में इस की खूबिआँ है जलवागर खुर्शिद[9] सों
मारूफ़ थी उसकी की जबां मशहूर था उस का कलम
वो मउदन इल्मोहुनर अमादा हो गए वहस पर
भागे अदूए[10] बद[11] घर ठहरे न हरगिज़ एकदम
जो इज़्ज़त वेद इस ने की जो शोहरत वेद इस ने की
जो खिदमत वेद इस ने की आजज है लिखने से कलम
यह आसमान पीर अगर ले मशल शमसो[12] कमर[13]
चक्कर लगाए दर बदर गाहे अरब गाहे अज़म
आफ़ाक में कोई वशर आये नज़ीर इसका नजर
है गै़र मुमकिन सर बसर ईमान से कहते है हम
फिर इस की तोसीफो-सना क्या कर सके कोई अदा
हैदर तू कर अब यह दुआ बस शान्ति को पाएं हम

(1) दया का सागर (2) शान वाला (3) दुख दूर करने वाला (4) इस समय (5) मल्लाह (6) नास्तिक (7) धोखा देने वाले (8) अत्याचार (9) सूर्य (10) दुश्मन (11) बुरे (12) सूर्य (13) चांद।

202. श्री युत राज गोपाल आचार्य

(प्रधान कांग्रेस कमेटी)

मैं यह समझता हूं कि आर्य समाज को हिन्दू धर्म के सत्य स्वरुप का नवनिर्माण करने में बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। यह एक सफल संगठित आंदोलन है। इसका दूसरा गन्तव्य यह है कि आर्य समाज हिन्दु धर्म में पुनः मिलता जा रहा है। जिसका परिणाम यह हो सकता है कि यदि आर्य समाज अलग रुप में कायम न रहे लेकिन वह वास्तव में सारे हिन्दू धर्म का प्रचलित बुराईयों से पूर्ण रुपेण शुद्ध कर देगा।

(समाचार पत्र तेज 1933)

203. लाला त्रिलाक चंद महरुम

दयानन्द स्वामी तेरा नाम नामी कि है मुस्तहक हरमत जां विदा[1] का
हमारे लिये है वह दिल की मुस्सरत जिगर का शकीब[2] और आराम जां का
मुसस्रत शकीब और आराम तूने दिए वरना यां तेरे आने से पहले
तसल्लत[3] था बेसब्री और दर्दों ग़म का
अलम[4] फड़फड़ाता था आंखों आहों[5] फ़गाँ का
हमारे लिये वक्फ था कयरे पस्ती[6] कि सारे जहां में थे हम नंग हस्ती
कदूरत जमीं की हमारे लिया थी हमारे लिए था सितम आसमां का।
वो भारत कि था फख़रे[8] इक्ताए आलम
जमीं जिस की थी आसमाने तकद्दस[9]
हुए इस के बाशिन्दे ऋषियों से हिन्दु
लकब खुद लिया इस ने हिन्दुस्तान का
कभी जिस का हर ज़रा था मेहर आसा
मुन्नवर हुई जिस के जलवों से दुनिया
लगे कहने इस खाक को खाक तीरा[10]

असर यह हुआ बख़्त जुलमत निशा का
न गंगा की मौज में थी शान पहली
न जमना की लहरों में थी आन पहली
बज़ा था अगर हिन्द के गमजदों को
गुमां अन पै था[11] सैल[12] अशके रवां का
पड़ी कोमियत बिसतर मर्ग पर थी
कोई दम की मेहमां यह शमा सहर थी
न था चारा गर कोई सौजे जिगर का
मुआलिज[13] न था कोई जखमें निहां का
मुशयित[14] को मन्जूर था इस का जीना
किया तुझ को तैयार बहर इमदादा
बहताईद[15]-ए-यजदां शफ़ा हो गई फिर
लगाया जो तूने जराहत पे टांका
उजड़ते उजड़ते चमन जार भारत
हुआ ऐसा वोंरा हुआ ऐसा गारत
न उमीद थी आमद फ़सले गुल की
था हर बेखोबुन पर वह आलम खज़ां का
जले सूखे पौधों को तूने जिलाया
यह एजाज किस बागबां ने दिखाया
यह ना हक शनासी है अहले हक हमारी
अगर नाम दीजे तुझे बागबां[16] का
जहां साया कुफ़र में आ गया था
फकत नाम ही नाम था रोशनी का
सर आशुफता गैसुए हूर कोई
गिरफतार था कोई जुल्फ़े बुतां का

लड़ाई जहालत से थी सख़्त मुश्किल
तोअसब का कोहे गिरां था मुकाबिल
मगर आफरीन योगबल के सहारे
उठा ही लिया बोझ सारे जहां का
सदा तेरी मशरक से मगरब को पहुंची
हिमालय से निकली तो जर्मन में गूंजी
गया बलकि पाताल तक की भी तसलसल
तज़लज़ल यह था तेरे जोरे बियां का
हिरस[17] की जो अब यह निदा[18] आ रही है।
कमर एहले हिम्मत की बंधवा रही है।
ये ज़लवे जो उम्मीद दिखला रही है
असर है यह तेरी जात तलत[19] फिशां का
सदा तेरी सुन कर ये जागे है सारे
चले सूए मंजिल तेरे ही इशारे
यह सब पेशरो तेरे पैरो है स्वामी
तू सालार है हिन्द के कारवां का
दिखाई हमें दोनों आलम की राहें
कि अब जिन से उठती नहीं है निगाहें
न उम्मीद थी कुछ हमें इस जहां की
न आराम था कछ हमें इस जहाँ का
वो सब जानते है वो सब मानते है
जो शैदा तरक्की की आवाज के हैं
लबे गंग तूने जो छेड़ा था पहले
ये जां बख्श नग़में इसी साज के है।
कदम जमने पाए न बातल[20] के हरगिज़

किया जब सदाकत[21] का इजहार तूने
शबे तार कसरत अडी दम जदन में
दिखाए जो वाहदत के अनवार[22] तूने
यहां आके जुलमत ने डाला था डेरा
धटा टोप छाया हुआ था अंधेरा
जिन्हें मम्बाए नूर कहिए वो सूरज
दिखाए चमकते हुए चार तूने
हुई फिर वही रोशनी जल्वा गुसतर[23]
कभी जिस से आलम हुआ था मनूवर[24]
वो नज़रों से पिन्हा थी मर्दों के अंदर
किया उस का आखिर नमुदार तूने
रहे संगोआहन में हम जिस को जोंया[25]
वही तूने हम को दिखादी तज्जली
न मोहताजे सूरत रही चशमे बीना
सुझाया जो आकर निराकार तूने
बुतों की असीरी से यकबार छूटे
लगे थे जो हरबंद पर बंद टूटे
हुई दम बखुद मूंह से कुछ भी न फूटे
किया जब बतों को गिरफतार तूने
न अर्शे मुअल्ला पे अब जायेंगे हम
यही गीत तोहीद के गायेंगे हम
इसे दिल के मंदिर में अब पायेंगे हम
बनाया है जिस का पसरतार तूने
न तस्कीन खातिर की खातिर कभी हम
दरे मैकदा खट खटायेंगे पैहम[26]

कि सागर पिलाकर शराबे अजल के

किया पीने वालों को सरशार तूने
दरें दैर पर हल्काज़न हम न होंगे
हरम में पहुंच कर भी कभी खम न होंगे
कि दोनों घरों में हैं पत्थर ही पत्थर
हवैदा किए हैं ये इसरार तूने
नई मिल्लतों के वह झूठे फसाने
जो अफसाना ख्वाबे गफलत ये हम को
किये महब वो नक्श बातल सरासर
जलाए वो सब कोन्हा[27] तूबार[28] तूने
क्लीसाए मज़हब के राहब करोड़ों
जो कायल न थे नूरे शमा खरिद[29] के
तोहम का जाला था आंखों में जिनकी
अता की इन्हें चशमे दीदार तूने
तेरा सीना था मार्फ़त का खज़ीना
थी महफूज़ ऋषियों की मीरास[30] जिस में
खुले दिल से वो तूने दौलत लुटाई
किया जब जबां को गोहर बार तूने
न राजा से डरकर फिरा राहे हक से
न प्रजा की खातिर छिपाई हकीकत
जमाना मुखालिफ नजर आ रहा था
मगर हारी हिम्मत न ज़िनहार तूने
किए तूने तिन्हा बनारस पे धावे
हुए जमा लड़ने को पंडित हज़ारों
गए मूंह की खा कर वो मैंदा से सारे

किया तेग विरहां का मजूब वार तूने

कहीं ईंट पत्थर का तुझ पर बरसना
कहीं कहकहों से वो बदबीं का हंसना
मुसीबत अज़ीयत[31] सऊबत[32] उठा कर
किया सू बसूं वेद प्रचार तूने
भवँर में था आर्य धर्म का सफ़ीना[33]
न था जिस के बचने का कोई करीना[34]
मगर इसके खेने में खून और पसीना
किया एक और, कर दिया पार तूने
कियामत की थी कौम पर नींद तारी
वही नींद इन्जाम है जिसका खुआरी
मगर आबे रहमत के दे दे के छींटे
किया खाबे गफ़लत से बेदार तूने
तन्ज़ल[35] की मंजिल पे हम जा रहे थे
हमें नेस्ती[36] के पियाम[37] आ रहे थे।
मगर अपनी हालत से वाकिफ न थे कुछ
किया ओके फौरन खबरदार तूने
कोई दिन की मेहमाँ थी हस्ती हमारी
उजड़ने को थी आह बस्ती हमारी
इन्हें तूने ही काट कर दूर फैंका
इवज इनके वाहदत के बूटे लगाए
किया यनि सेहरा[38] को गुलजार तूने
दया की यहाँ गंगा बहा दी

तो आनन्द की एक झड़ी सी लगा दी
दिया तूने क्या क्या हमें क्या बताएँ
कि दी अपनी जाँ आखिरकार तूने
हमें ले ही डूबी थी पस्ती हमारी
किया हम को फिर जिंदा इक बार तूने
गिने जाएँ मुमकिन है सेहरा[39] के ज़रे
त्रिशाह[40] के कतरे फलक[41] के सितारे
दयानन्द स्वामी मगर तेरे अहसों
व गिनती में आएँ कभी हमसे सारे।

(1) सदैव अमर (2) धैर्य वाला (3) राज़ (4) झण्डा (5) दुःख में रोना (6) दुख (7) घृणा (8) जमाने में प्रसिद्व (9) पवित्र (10) अंधी मिट्टी (11) तुगयानी (12) बहते आंसु (13) इलाज़ करने वाला (14) परमात्मा (15) प्रभु पालनहार (16) माली (17) लालच (18) आवाज़ (19) तेज़ (20) झूठ (21) सत्य (22) दिव्य ज्योति (23) प्रकाश (24) रोश (25) तलाश करने वाला (26) लगातार (27) पुरानी (28) झूठा संदेश (29) बुद्धि (30) दौलत (31) तकलीफ़ (32) दुख (33) किश्ती, नाव, (34) तरीका (35) गिरावट (36) मिटने (37) सदंसा (38) वन, जंगल (39) मरुस्थल (40) ओस (41) आकाश (प्रकाश 1911)।

204. महर्षि स्वामी दयानन्द जी के विचार अपने बारे में

भारतवर्ष में अगर मैं महर्षि कणाद और जैमिनी आदि के युग में पैदा हुआ होता तो मेरी गिनती साधारण पंडितों में नहीं होती। पुराने आर्यावर्त्त की उन्नति और स्वर्णयुग को स्वामी जी हृदय से मानते थे और वही युग हर समय उन की दृष्टि में रहता था ।

205. परम योगी स्वामी विरजानन्द जी महाराज

(शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् दयानन्द से)

मेरे शिष्यों में केवल तुम ही हो जो वेदों के गिरे हुए ध्वज को भारत भूमि में पुनः स्थापित कर सकते हो इसलिए यदि तुम मुझे कोई भेंट चढ़ा सकते हो तो मुझे अपने जीवन की भेंट चढ़ाओ। अर्थात मेरा आदेश मानो और वैदिक धर्म के प्रकाश को उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सारे संसार में फैला दो। लोग वेदों को बिल्कुल भूल चुके हैं। मुझे तुम पर पूर्ण विश्वास है कि तुम इस कार्य को पूरी सफलता से कर सकोगे। इसलिए मैं लोंगों की भेंट नहीं ले सकता। मुझे अपनी भेंट दो। (दयानन्द ने अपनी गुरु की आज्ञा का पालन कहाँ तक किया संसार साक्षी है।)

206. सरदार जसवंत सिंह वर्मा टोहानवी

महर्षि दयानन्द सोलह कला सम्पूर्ण अवतार थे।

भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के अंदर एक या दो दो शक्तियाँ प्रधान होती है। जिनका वह अवतार कहलाता है कि जिस के अंदर बल शक्ति प्रधान होती है वह बल का अवतार है। जिस के अंदर विद्या की शक्ति प्रधान है वह विद्या का अवतार है। आदि आदि। परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती सोलह कला सम्पूर्ण और निष्कलंक अवतार थे। इनके किसी कट्टर से कट्टर विरोधी को भी इनके जीवन पर किसी प्रकार का दोष या कलंक लगाने का साहस नहीं हो सका।

1. विद्या का अवतार

ऋषि की विद्या को संसार ने माना। अपनी विद्या के बल पर हर सम्प्रदाय के विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिए कहा जो भी विद्वान नेता और बुद्धिमान पंडित, ईसाई या मौलवी या जैनी आप के पास शास्त्रार्थ के लिए आया तो आपके युक्तिपूर्ण सशक्त प्रमाण सुनकर आप से सहमत हो गया।

2. दया का अवतार

यूं तो ऋषिवर दया का पुतला था और दया की सैंकड़ों हजारों नहीं लाखों घटनायें बतायी जा सकती है। परंतु सबसे बढ़कर अपने हत्यारे पर दया करना दया का एक बढ़िया प्रमाण है। एक व्यक्ति आपको पान में विष देता है और आप का भक्त मुसलमान तहसीलदार अपराधी को पकड़कर पेश करता है। ऋषि फरमाते हैं मैं दुनिया को बंदी बनाने के लिए नहीं आया बल्कि संसार को कैद से छुड़ाने आया हूँ। विश्वास घातक जगन्नाथ जो आप का रसोईया था दूध में विष मिलाकर आपको पिला देता है और आप यात्रा के लिए सफ़र खर्च देकर उसको भेज देते हैं। ऋषि के वह शब्द जो उन्होंने अपराधी जगन्नाथ को उसके जाने के समय कहे स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। "हम सन्यासी हैं। हमारे मरने से किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती परंतु तेरे मरने से तेरा परिवार भी मर जाएगा।"

3. निडरता का अवतार

बरेली के कलैक्टर का ऋषि के पास आदेश पहुंचता है कि आप कटु उपदेश न कहे अन्यथा मुझे कार्यवाही करनी पड़ेगी। ऋषि उत्तर देते है "उनसे जाकर कह दो कि मैं कलैक्टर का नौकर नहीं हूं बल्कि उस महान शक्ति का सेवक हूं जिसके अधीन कलैक्टर जैसे न जाने कितने सेवक कार्य कर रहे हैं।" जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह के महल में प्रवेश किया। नन्हीं जान वेश्या को महाराज के पहलू में बैठा देखकर बिना डर के महाराजा ने यह शब्द कहे "अरे-सिंह होकर कुतिया से भोग करता है फिर आशा करता है कि तेरे महलों में कुंवर पैदा हो। इस कुत्तिया से तो कुत्ते पैदा होंगें।"

4. बल का अवतार

राव कर्ण सिंह बल के अभिमान में तलवार लेकर लपका और कहा, "या तो तिलक कंठी का खंडन करना छोड़ दो अन्यथा तुम हो और मेरी तलवार है।" ऋषि हाथ से उसकी कलाई को पकड़ कर दबाते हैं तलवार उस के हाथ से छीनकर दो टुकड़े कर दिए।

5. वैराग्य का अवतार

दुनिया में हम लोग दिनरात अपने बन्धुओं को मरते हुए देखते हैं। राम नाम सत्य है। शमशान भूमि तक। इस के पश्चात न राम है न नाम है न सत्य है। परन्तु ऋषि की एक बहिन और चाचा की मृत्यु ने उनके हृदय में वह वैराग्य उत्पन्न किया जिस को दुनिया जानती है।

6. त्याग का अवतार

महाराज उदयपुर अपना एक मंदिर जिस की वार्षिक आय एक लाख रुपये से अधिक थी ऋषि को इस शर्त पर भेंट करते है कि वह मूर्त्ति पूजा का खंडन करना छोड़ दें। लेकिन ज्ञानी और महाज्ञानी ऋषि उत्तर देते हैं, "किसी दुनिया के कुत्ते को ही पालो ज़र के टुकड़ों पर न बांधो हम फ़कीरों को मगर ज़ंजीर से ज़र की।"

7. ब्रह्मचर्य का अवतार

महर्षि अपने उपदेश में ब्रह्मचर्य की महिमा का वर्णन कर रहे है। सरदार विक्रम सिंह घनाढ्य ने आपत्ति उठायी और कहा "सुना है कि आप भी ब्रह्मचारी है, लेकिन जितनी आप ने प्रशंसा और बड़ाई ब्रह्मचर्य की की है इतनी आप में नज़र नहीं आती।" ऋषि सुनकर चुप रहे जब सरदार सहिब अपने दो घोड़ों की बग्घी में बैठकर जाने लगे तो ऋषि ने पीछे से बग्घी का हैंडल पकड लिया। यद्यपि घोड़ों पर हन्टर पर हन्टर पड़े बग्गी अपने स्थान से एक इंच भी न हिल सकी। पीछे मुड़कर देखा तो ऋषि बग्धी का हैंडल पकडे हुए खडे है। ऋषि फरमाते हैं "देख ले आंखों से अपनी ब्रह्मचर्य की सफात और अपने प्रश्न का उत्तर भी ले ले साक्षात अब नहीं गाड़ी जगह से हिलेगी। ज़ीनहार भी। दो क्या इसमें जोत लें घोड़े अगर तू चार भी" सरदार का सिर शर्म से ऋषि के चरणों में झुक गया।

8. तप का अवतार

हरिद्वार के कुंभ पर हिन्दु जाति की गिरावट और दुर्दशा को देखकर ऋषि की आंखों में खून के आंसू आ जाते हैं। वहीं से सब कुछ त्याग कर केवल एक कोपीन धारण कर हिमालय पर्वत पर चल देते है।

कई-कई दिन केवल बर्फ के टुकडे चबा कर घोर तपस्या की। इस तप ने आज धार्मिक दुनिया में एक महान क्रांति पैदा कर दी।

9. नम्रता का अवतार

ऋषि के एक भक्त ने कहा कि सचमुच आप ऋषि है। ऋषि कहते हैं, "जबरदस्ती है तुम्हारी और है कुछ भूल भी। ऋषि क्या ऋषियों के पांव की नहीं हूँ धूल भी। कपिल पतंजलि के होते मैं जन्म लेता अगर विद्वानों में न गिनता कोई मुझ को भूलकर।"

10. सच्चाई का अवतार

"साधारण कष्ट और ईंट पत्थर बरसा कर मुझे झुकाना चाहते हैं। लेकिन ईंट पत्थर तो क्या चीज है यदि मुझे कोई तोप के मुंह से भी बांध दे तब भी सच्चाई को नहीं छोड़ सकता।"

11. धर्म का अवतार

काशी के नामी पंडित नीलकंठ शास्त्री और पंडित रामाबाई ने दुनिया भर के पंडितों को चुनौती दे देकर ईसाई मत स्वीकार कर लिया। मगर कोई पंडित इनके संदेह दूर न कर सका। आज ऋषि का एक छोटा सा भक्त ईसाई मुसलमानों को शास्त्रार्थ के लिये ललकारता है तो किसी को सामने आने का साहस नहीं होता।

12. नेकी का अवतार

ऋषि ने आर्य समाज का यह नियम बनाया—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

13. अहिंसा का अवतार

गौकरुणानिधि पुस्तक लिखकर चेतावनी दी कि एक गाय को मारने से कितने जीवों की हानि होती है। स्थान-स्थान पर घूम-घूम कर लाखों लोगों के हस्ताक्षर करवाकर आपने प्रार्थना पत्र तैयार किया जो आयु की समाप्ति पर लटक गया।

14. शान्ति का अवतार

काशी में उपदेश देते समय किसी दुष्ट ने एक पत्थर ऋषि के सिर पर मारा जिस से रक्त बह निकला। ऋषि भक्त क्रोध में आ गए परंतु आपने उन को शांत रहने का उपदेश दिया और जख्म को अंगोछे से दबा दिया। ऋषिवर ने कहा, "यह ही सज्जन जब सीधी राह पर आ जाएंगे। आज पत्थर मारते है। फूल कल बरसायेंगे।"

15. पर उपकार का अवतार

ऋषि के उपकार इस देश पर इतने है जो उंगलियों पर गिने नहीं जा सकते। उनके शरीर का एक-एक अणु पर उपकार के लिए था। बस इतना ही पर्याप्त है गिने जाएं मुमकिन हैं सैहरा के जर्रे समुन्द्र के कतरे फलक के सितारे दयानन्द स्वामी मगर तेरे एहसां नहीं मुमकिन आंए गिनती में सारे।

16. तेज का अवतार

बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वान पंडित जिनको अपनी विद्या पर पूर्ण अभिमान था घर से भांति भांति के कठिन प्रश्न सोच कर आते थे परंतु ऋषि के तेज के सामने उनके हाथ-पांव फूल जाते थे। वाणी को ताला लग जाता था।

भजन

दयानन्द वेद का करने को जब प्रचार निकले थे।
अकेले थे न उनके साथ में दो चार निकले थे।
समय वह था कि जब अंग्रेज का ऊँचा सितारा था।
बेचारे हिन्दुओं के धर्म पर चलता दो धारा था
कहीं ईसाई बनते थे कहीं मुस्लिम का नारा था।
बचाने धर्म को वह धर्म के अवतार निकले थे

दयानन्द वेद का करने को जब प्रचार निकले थे
मचायी लूट थी अंग्रेज ने इस देश में आकर
बने मस्जिद बने गिरजे हमारे देश में आकर
ऋषि ने देखा एक महिला न वह कर पायी कफ़न पर
बिके हिन्दु के सुत ईसाई के थोड़े से धन पर
दयानन्द शुद्धि का करने को जब प्रचार निकले थे
कहीं गऊँए सिसकती थी, कहीं विधवाएं रोती थी
मुसलमां बनती तो खुंखार फिर मौला को जनती थी
पुरुष इस्लाम धारण करके काला चांद बनते थे
ज्वाला सिंह से बनकर पादरी, ईसाई करते थे
दयानन्द शुद्धि का जब करने को प्रचार निकले थे
दयानन्द ने बताया देश में स्वराज्य कैसा हो
दयानन्द ने बताया जाति का उद्धार कैसे हो।
दयानन्द ने बताया वेद का प्रचार कैसे हो
विरोधी ही मतों का आसानी से संहार कैसे हो
दयानन्द साथ लेकर तर्क की तलवार निकले थे
दयानन्द के श्रद्धानन्द शिष्य ने कुछ करके दिखलाया
हजारों भाईयों ने फिर से वैदिक धर्म अपनाया
धर्म के वीर पंडित लेखराम मस्जिद में जा पहुंचे
मुस्लमां बनने से कश्मीरियों को था बचवाया
गज़ब के शिष्य ऋषिवर के बड़े दमदार निकले थे
दयानन्द पर गिराया सर्प उसने पांव से कुचला
किया मंदिर में बंदी जब दिवारें फोड़कर निकला
पहलवानों की गर्दन दाब कूदा बीच गंगा में
सहे पत्थर नहीं घबराया वह हरदय दंगा में
कर्ण सिंह राव की वह तोड़ कर तलवार निकले थे
दयानन्द वेद का जब करने को प्रचार निकले थे।।

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाः

सब संस्कारों के आदि में निम्नलिखित मन्त्रों के पाठ और अर्थ द्वारा एक विद्वान वा बुद्धिमान् ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना और उपासना स्थिरचित होकर परमात्मा में ध्यान लगाके करें, और सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें और विचारें–

ओ३म। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव
यद् भद्रन्तन्न आ सुव।।१।।

यजु. ०३० ।३

अर्थ–हे (सवितः) सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वरर्ययुक्त (देव) शुद्धस्वरूप सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को (परा सुव) दूर कर दीजिए, (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारक गुण–कर्म–स्वभाव और पदार्थ हैं, (तत्) वह सब हमको (आ सुव) प्राप्त कीजिए।। १ ।।

तू सर्वेश सकल सुखदाता शुद्धस्वरूप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते जो तेरे ढिंग आता है।।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से हमको नाथ बचा लीजे।
मंगलमय गुण–कर्म–पदारथ प्रेम–सिन्धु हमको दीजै।।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम।। २।।

–यजुः॰ १३ ।४

अर्थ–जो (हिरण्यगर्भः) स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य–चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किए हैं, जो (भूतस्य) उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का (जातः) प्रसिद्ध (पतिः) स्वामी (एकः) एक ही चेतनस्वरूप (आसीत्) था, जो (अग्रे) सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्त्तत) वर्तमान था, (सः) वह (इमाम्) इस (पृथिवीम्) भूमि (उत्) और (द्याम्) सूर्यादि को (दाधार) धारण कर

रहा है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) शुद्ध परमात्मा के लिए (हविषा) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से (विधेम) विशेष भक्ति किया करें।।२।।

तू ही स्वयं प्रकाश, सुचेतन, सुखस्वरूप शुभ त्राता है।
सूर्य–चन्द्र लोकादिक को तू रचता और टिकाता है।।
पहिले था अब भी तू ही है घट–घट में व्यापक स्वामी।
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझको पावें हम अन्तर्यामी।।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।३।।

—यजुः॰ २४!१३

अर्थ—(यः) जो (आत्मदाः) आत्मज्ञान का दाता, (बलदाः) शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, (यस्य) जिसकी (विश्वे) सब (देवाः) विद्वान् लोग (उपासते) उपासना करते हैं और (यस्य) जिसका (प्रशिषम्) प्रत्यक्ष, सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं (यस्य) जिसका आश्रय ही मोक्षसुखदायक है, जिसका न मानना, अर्थात् भक्ति न करना ही (मृत्युः) मुत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप, (देवाय) सकल ज्ञान के देनेहारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए (हविषा) आत्मा और अन्तःकरण से (विधेम) भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा–पालन करने में तत्पर रहें।।३।।

तू ही आत्मज्ञान बलदाता, सुयश विज्ञजन गाते हैं।
तेरी चरण–शरण में आकर, भवसागर तर जाते हैं।।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे विसराने में।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तुझसे लगन लगाने में।।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव।
य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।४।।

—यजुः॰ २३।३

अर्थ–(यः) जो (प्राणतः) प्राणवाले और (निमिषतः) अप्राणिरूप (जगतः) जगत् का (महित्वा) अपने अनन्त महिमा से (एकः इत्) एक ही (राजा) विराजमान राजा (बभूवः) है, (यः) जो (अस्य) इस (द्विपदः) मनुष्यादि और (चतुष्पदः) गौ आदि प्राणियों के शरीर की (ईशे) रचना करता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकलैश्वर्य के देनेहारे परमात्मा की उपासना अर्थात् (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा–पालन में समर्पित करके (विधेम) विशेष भक्ति करें।।४।।

तूने अपनी अनुपम माया से जग–ज्योति जगाई है।
मनुज और पशुओं को रचकर निज महिमा प्रगटाई है।।
अपने हिय–सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं।
भक्ति–भाव की भेंटें लेकर तव चरणों में आते हैं।।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।५।।

–यजुः॰ ३२।६

अर्थ–(येन) जिस परमात्मा ने (उग्रा) तीक्ष्ण स्वभाववाले (द्यौः) सूर्य आदि (च) और (पृथिवी) भूमि को (दृढा) धारण, (येन) जिस जगदीश्वर ने (स्वः) सुख को (स्तभितम्) धारण और (येन) जिस ईश्वर ने (नाकः) दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, (यः) जो (अन्तरिक्षे) आकाश में (रजसः) सब लोक–लोकान्तरों को (विमानः) विशेष मानयुक्त, अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखदायक (देवाय) कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए (हविषा) सब सामर्थ्य से (विधेम) विशेष भक्ति करें।।५।।

तारे, रवि चन्द्रादिक रचकर निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख लखाया है।।
तू ही विश्व–विधाता, पोषक, तेरा ही हम ध्यान धरें।
शुद्धभाव से भगवन्! तेरे भजनामृत का पान करें।।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव:।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।६।।

—ऋ० १०।१२१।१०

अर्थ—हे (प्रजापते) सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्! (त्वत्) आपसे (अन्य:) भिन्न, दूसरा कोई (ता) उन, (एतानि) इन—(विश्वा) सब (जातानि) उत्पन्न हुए जड़—चेतनादिकों को (न) नहीं (परि बभूव) तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। (यत्कामा:) जिस—जिस पदार्थ की कामनावाले हम लोग (ते) आपका (जुहुम:) आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, (तत्) उस—उसकी कामना (न:) हमारी (अस्तु) सिद्ध होवे, जिससे (वयम्) हम लोग (रयीणाम्) धनैश्वर्यों के (पतय:) स्वामी (स्याम) होवें।।६।।

तुझसे भिन्न न कोई जग में, सबमें तू ही समाया है।
जड़—चेतन सब तेरी रचना, तुझमे आश्रय पाया है।।
हे सर्वोपरि विभो! विश्व का तूने साज सजाया है।
हेतु रहित अनुराग दीजिए यही भक्त को भाया है।।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।७।।

—यजु:० ३२।१०

अर्थ—हे मनुष्यो! (स:) वह परमात्मा (न:) अपने लोगों का (बन्धु:) भ्राता के समान सुखदायक, (जनिता) सकल जगत् का उत्पादक, (स:) सह (विधाता) सब कामों का पूर्ण करनेहारा, (विश्वा) सम्पूर्ण लोकमात्र और (धामानि) नाम, स्थान, जन्मों को (वेद) जानता है और (यत्र) जिस (तृतीये) सांसारिक सुख—दु:ख से रहित, नित्यानन्दयुक्त (धामन्) मोक्षस्वरूप धारण करनेहारे परमात्मा में (अमृतम्) मोक्ष को (आनशाना:) प्राप्त होके (देवा:) विद्वान लोग (अध्यैरयन्त) स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है, अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें।।७।।

तू गुरु है, प्रजेश भी तू है, पाप–पुण्य फल–दाता है।
तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है।।
भक्तों को इस भव–बन्धन से, तू ही मुक्त कराता है।
तू है अज, अद्वैत, महाप्रभु सर्वकाल का ज्ञाता है।।

अ॒ग्ने नय सु॒पथा रा॒येऽअस्मान् विश्वानि देव व॒युनानि वि॒द्वान्।
यु॒यो॒ध्य॒स्मज्जु॑हु॒रा॒णमेनो॒ भूयिष्ठान्ते॒ नमऽउक्तिं विधेम।।८।।

—यजुः० ४०।१६

अर्थ—हे (अग्ने) स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेहारे, (देव) सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे (विद्वान्) सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके (अस्मान्) हम लोगों को (राये) विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए (सुपथा) अच्छे, धर्मयुक्त, आप्त लोगों के मार्ग से (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुयानि) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (नय) प्राप्त कराइए और (अस्मत्) हमसे (जुहुराणम्) कुटिलतायुक्त (एनः) पापरूप कर्म को (युयोधि) दूर कीजिए। इस कारण हम लोग (ते) आपकी (भूयिष्ठाम्) बहुत प्रकार की स्तुतिरूप (नमः उक्तिम्) नम्रतापूर्वक प्रशंसा (विधेम) सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।।८।।

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभु, सबका सिरजनहार तु ही।
रसना निशि–दिन रटे तुम्हीं को, मन में बसता सदा तु ही।।
अघ–अनर्थ से हमें बचाते रहना, हरदम दयानिधान।
अपने भक्तजनों को भगवन्! दीजे यही विशद वरदान।

इतीश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाप्रकरणम्।

संगठनसूक्त

ओं संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।१।।

हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन–वृष्टि को।।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।२।।

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।३।।

हों विचार समान सबके चित्त–मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब श्रेष्ठ हों।।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरें हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख–सम्पदा।।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

ओ३म्

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोगध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

—यजुः॰ 22।।22

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र मे हों, द्विज ब्रह्मतेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी।।

होवें दुधारू गौएँ, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।।

बलवान् सभ्य योद्धा, यजमानपुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें।।

फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योगक्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।।

आर्यसमाज के नियम व उद्देश्य

१. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम्, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

३. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएँ।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।